

मंजरी

7

जागो जीवन के प्रभात

(प्रस्तुत कविता एक जागरण गीत है। इसमें अज्ञान और अन्धकार को मिटाकर कार्य करने की प्रेरणा दी गयी है।)

अब जागो जीवन के प्रभात
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ-भरे
उषा बटोरती अरुण गात।
अब जागो जीवन के प्रभात !
तम-नयनों की ताराएँ सब
मुँद रही किरण दल में हैं अब
चल रहा सुखद यह मलय-वात
अब जागो जीवन के प्रभात!
रजनी की लाज समेटो तो
कलरव से उठ कर भेंटो तो,
अरुणांचल में चल रही बात
- जयशंकर प्रसाद



जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई0 में काशी में हुआ था। जब वे छोटे थे, तभी उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। प्रसाद जी की स्कूली शिक्षा कक्षा 8 तक ही हुई थी, परन्तु घर पर रहकर इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन किया। पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही इन्होंने काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। प्रसाद जी श्रेष्ठ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार थे। उनकी कविता की प्रसिद्ध पुस्तकें हैं: 'लहर', 'झरना', 'आँसू', 'कामायनी' आदि। इनका निधन सन् 1937 ई0 में हो गया।

शब्दार्थ

प्रभात = सवेरा (चेतना और जागरण के लिए कविता में प्रयुक्त है)। वसुधा = पृथ्वी। हिमकन = बर्फ के कण, ओस। क्षोभ = दुःख। अरुण गात = लालिमायुक्त शरीर। तम-नयनों = अन्धकार रूपी नेत्रों। किरण-दल = किरणों का समूह। मलय-वात = शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा। रजनी = रात। कलरव = पक्षियों का चहचहाना (कविता में इसे जागरण के अर्थ में लिया गया है)। अरुणांचल = पूर्वदिशा। चल रही बात = चर्चा हो रही है।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. प्रस्तुत कविता में जीवन का सन्देश छिपा हुआ है, दिये गये विकल्पों में से उसे छाँटिए-

(क) सूर्योदय के लिए।

(ख) जीवन में नयी आशा का संचार करने के लिए।

(ग) मलय-वात का आनन्द लेने के लिए।

2. कवि ने प्रातः काल पृथ्वी पर फैले ओसकणों को क्या कहा है ?

3. उषा द्वारा ओस बटोरने का क्या आशय है ?

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात।

(ख) कलरव से उठकर भेंटो तो।

5. 'रजनी की लाज' को स्पष्ट करने के लिए नीचे चार अर्थ दिये गये हैं, इनमें से सही अर्थ

छाँटकर लिखिए-

(क) अन्धकार (ख) शर्म

(ग) अज्ञान (घ) आलस्य

विचार और कल्पना

1. इस कविता की एक पंक्ति है 'चल रहा सुखद यह मलयवात' नीचे दी गयी कविता में से इस भाव से मिलती-जुलती

पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए-

नभ-जल-थल में दे दे फेरी

रवि से कहती है गति मेरी,

अब मधु दिन है आने वाला

मैं मलय समीर निराला,

2. प्रातः काल पशुपालक अपने पशुओं को चारा खिलाते हैं। इसी तरह निम्नांकित के द्वारा प्रातः काल किये जाने वाले कार्यों के विषय में लिखिए-

(क) विद्यार्थी

(ख) माँ

(ग) दुकानदार

(घ) पक्षीगण

(ङ) तितली-भौरे

कुछ करने को

सुबह सूर्योदय से थोड़ा पहले अपने घर के बाहर अथवा छत पर खड़े होकर पूर्व दिशा के एक-एक दृश्य को बारीकी से देखिए और -

(क) देखे गये दृश्यों के बारे में अपनी पुस्तिका में लिखिए।

(ख) देखे गये दृश्यों का चित्र बनाइए।

भाषा की बात

कविता की निम्नांकित दो पंक्तियों को पढ़िए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात,

(ख) अरुणांचल में चल रही बात,

उपर्युक्त पंक्तियों में आये शब्द 'वात' और 'बात' का अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(ग) अरुण-अंचल के योग से 'अरुणांचल' शब्द बना है। इसी तरह नीचे लिखे गये शब्दों में 'अंचल' शब्द जोड़कर लिखिए-

हिम, उत्तर, पूर्व, सोन, कोयला, नीला।

इसे भी जानें

'जय जवान जय किसान' का नारा हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने दिया था।



राजधर्म

(महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व शाक्य गणराज्य में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। जातक कथाओं में बोधिसत्त्व के नाम से विभिन्न रूपों में उनके पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत पाठ 'राजधर्म' में ऐसी ही एक जातक कथा दी जा रही है। इस कथा में बताया गया है कि किसी राज्य का राजा जैसा आचरण करता है उसका प्रभाव उस राज्य की प्रजा के साथ सम्पूर्ण पर्यावरण पर भी पड़ता है।)

अति प्राचीन काल में वाराणसी में ब्रह्मदत्त नाम का राजा राज करता था, जो अपनी धर्मप्रियता और न्यायपरायण शासन के लिए प्रसिद्ध था। उसके शासनकाल में बोधिसत्त्व एक ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे। कुछ बड़े होने पर उन्होंने अनेक शिल्पों का ज्ञान प्राप्त किया फिर प्रव्रज्या धारण कर वे रमणीय हिमालय प्रदेश में चले गये और कन्द-मूल-फल आदि का सेवन करते हुए तपस्या में लीन रहने लगे।

ब्रह्मदत्त विवेकशील राजा था। वह सत्यासत्य, उचित-अनुचित का सदा ध्यान रखता था। वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके। प्रशंसा करने वाले तो सभी थे, दोष बताने वाला कोई नहीं मिलता था। अन्तःपुर, राजदरबार, नगर, नगर के बाहर सभी जगह लोग राजा के गुणों का बखान करते थे, पर उसके अवगुण बताने वाला कोई नहीं था।



राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके। अतः वेश बदलकर वह पूरे जनपद में घूमा, पर वहाँ भी उसे अपना गुण ही सुनने को मिला, दोष नहीं, फिर वह घूमता हुआ हिमालय प्रदेश पहुँचा। घने जंगलों और दुर्गम पर्वतों को पार करता हुआ वह सुरम्य हिमालय प्रदेश में स्थित बोधिसत्त्व के आश्रम पर जा पहुँचा। उसने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। बोधिसत्त्व ने राजा का कुशल क्षेम पूछा, फिर आश्रम में राजा एक ओर चुपचाप बैठ गया।

बोधिसत्त्व जंगल से पके गोदे लाकर खाते थे। वे गोदे शक्तिवर्धक और शक्कर के समान मीठे थे। उन्होंने राजा को सम्बोधित कर कहा, ”महापुण्य, ये गोदे खाकर पानी पीओ।“ राजा ने गोदे खाये और पानी पिया। उसे गोदे बड़े मधुर और स्वादिष्ट लगे। उसने बोधिसत्त्व से पूछा, ”भन्ते क्या बात है, ये गोदे बड़े मीठे और स्वादिष्ट हैं !“

”महापुण्य, राजा निश्चय ही धर्मानुसार और न्यायपूर्वक राज करता है, उसी से ये इतने मीठे हैं। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर तेल, मधु, शक्कर आदि तथा जंगल के फल-फूल सभी कड़वे और स्वादहीन हो जाते हैं। केवल यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है, दूषित हो जाता है। राजा के धार्मिक और न्यायप्रिय होने पर सभी वस्तुएँ मधुर और शक्तिवर्धक होती हैं और सारा राष्ट्र शक्तिशाली तथा ओजस्वी बना रहता है।“

”भन्ते, ऐसा होता होगा“, यह कह कर राजा अपना परिचय दिये बिना ही बोधिसत्त्व को प्रणाम कर अपनी राजधानी लौट आया। उसने सोचा, तपस्वी बोधिसत्त्व के कथन की परीक्षा करूँगा। अधर्म और अन्याय से राज करूँगा, देखूँगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है। राजा ने ऐसा ही किया। कुछ समय बीत जाने पर वह फिर बोधिसत्त्व के आश्रम में पहुँचा और उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गया।

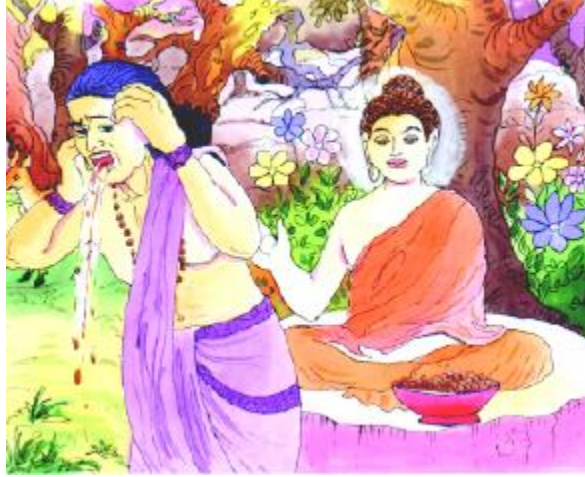
बोधिसत्त्व ने फिर पके गोदे दिये। राजा को वे गोदे बड़े कड़वे लगे। राजा ने गोदे थूक दिये और कहा, ”भन्ते ये बड़े कड़वे हैं।“

”महापुण्य, राजा अवश्य अधार्मिक और अन्यायी होगा। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर जंगल के फल-फूल तथा सभी वस्तुएँ नीरस और कड़वी हो जाती हैं, स्वादरहित हो जाती हैं, यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है।“

राजा के और जिज्ञासा करने पर बोधिसत्त्व ने कहा, ”गायों के नदी तैरते समय बैल (नेता) यदि टेढ़ा जाता है तो नेता के टेढ़े जाने के कारण सभी गायें टेढ़ी जाती हैं और मार्ग से भटक जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में भी जो श्रेष्ठ होता है, वह नेता माना जाता है। यदि वह टेढ़े मार्ग से जाता है, अधर्म करता है तो सारी प्रजा कुमार्ग पर चलती है और अधर्म करने लगती है। राजा ही नेता होता है। राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है। गायों के नदी पार करते समय यदि बैल (नेता) सीधा जाता है तो नेता के सीधा जाने के कारण सभी गायें सीधी जाती हैं और नदी पार कर जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में जो श्रेष्ठ माना जाता है, वही नेता माना जाता है। यदि वह धर्म का अनुसरण करता है, तो शेष प्रजा भी धर्म का मार्ग अपनाती है। राजा के धार्मिक होने पर सारा राष्ट्र सुख को प्राप्त करता है।“

बोधिसत्त्व से यह शिक्षा प्राप्त कर राजा ने अपना राजा होना प्रकट किया और विनयपूर्वक बोला, ”भन्ते, मैंने ही पहले गोदों को मीठा कर फिर कड़वा किया। अब फिर उन्हें मीठा करूँगा और कभी उन्हें कड़वा नहीं होने दूँगा। यही मेरा संकल्प और व्रत है।“

बोधिसत्त्व को प्रणाम कर वह राजधानी लौट आया। वह धर्म और न्यायपूर्वक राज्य करने लगा। उसका राज्य फिर धन-धान्य से भर गया।



- जातक कथा से

न्यायपरायण = न्याय में लगा हुआ। शिल्प = कला आदि कर्म। प्रव्रज्या = संन्यास।
विवेकशील = विचारवान। अन्तःपुर = रनिवास। दुर्गम = जहाँ पहुँचना कठिन हो। सुरम्य =
रमणीक। भन्ते = बौद्ध धर्म में मान्य पालि भाषा का आदर सूचक शब्द। ओज = कान्ति।
जिज्ञासा = जानने की इच्छा। अनुसरण = पीछे चलना। संकल्प = दृढ़ निश्चय।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. ब्रह्मदत्त नामक राजा क्यों प्रसिद्ध था?
2. राजा ब्रह्मदत्त वेश बदलकर क्यों घूमता था?
3. बोधिसत्त्व ने राजा को गोदों के मीठे और स्वादिष्ट होने का क्या कारण बताया?
4. राजा ने अधर्म और अन्याय से राज्य करना क्यों शुरू किया?
5. 'राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है', कथन का आशय बताइए।

विचार और कल्पना

1. बोधिसत्त्व जंगल के पके गोदे खाते थे जो शक्कर के समान मीठे थे। नीचे दिए गये ऐसे फलों के नाम लिखिए जिन्हें आपने खाया हो-

(क) एक बीज वाले फल

(ख) अनेक बीज वाले फल

(ग) बिना बीज वाले फल

(घ) कड़े छिलके वाले फल

2. इस पाठ में एक अच्छे राजा के आवश्यक गुण बताये गये हैं। आपके विचार में किसी राजा/श्रेष्ठ व्यक्ति/नेता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? उन्हें लिखिए।

3- जब राजा ने अन्याय और अधर्म के साथ राज्य किया होगा, तब उसकी प्रजा को क्या-क्या कष्ट भोगने पड़े होंगे ?

जातक कथाओं में महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्म की घटनाएँ कहानी के रूप में वर्णित हैं। इन कथाओं में महात्मा बुद्ध को बोधिसत्त्व के रूप में सम्बोधित किया गया है। बोधिसत्त्व का अर्थ है-वह व्यक्ति जो बुद्धत्व (अध्यात्म ज्ञान) को प्राप्त करने का अधिकारी हो, पर अभी बुद्ध नहीं हो पाया हो। कहा जाता है कि वे गौतम बुद्ध के रूप में प्रकट होने से पहले लगभग 550 बार विभिन्न योनियों में जन्म लेकर लोकोपकार का कार्य कर चुके थे।

कुछ करने को

1. अपने आस-पास क्षेत्र में पाये जाने वाले बरगद, पीपल, पाकड़ वृक्षों को नजदीक से देखिए और उन पर बैठे पक्षियों के क्रियाकलापों को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

2. बरगद के वृक्ष का एक चित्र बनाइए।

3. कहानी को पूरा करो-

एक गाँव में एक गधा रहता था। वह रोज जंगल में जाकर दूर-दूर तक घास चरने जाता था। जंगल में उसने एक दिन शेर की खाल देखी। उस चमकदार खाल को उसने बड़े शौक से पहन लिया। खाल पहन कर वह अपने को शेर समझने लगा। जंगल में वह जहाँ कहीं भी जाता, सभी जानवर उसे शेर समझ कर डरने लगे। उसे इसमें बड़ा मजा आया। वह बड़ी

शान से रोज सवेरे जंगल में निकलता और शाम को अकड़ता हुआ गाँव लौटता।

एक दिन.....

भाषा की बात

1. नीचे लिखे हुए वाक्य को ध्यान से पढ़िए-

‘राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके।’

इस वाक्य में मुख्य वाक्य है- ‘राजा ने सोचा।’ यह एक साधारण वाक्य है। इसके अतिरिक्त दो अन्य साधारण वाक्य हैं:-

(क) कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय।

(ख) जो उसके दोष बता सके।

नीचे लिखे मिश्रित वाक्यों से मुख्य और अधीन वाक्य अलग-अलग लिखिए-

$\frac{1}{4}d\frac{1}{2}og,slsO;fDr dks <w_j<+rk Fkk] tks mlds nks"kkSA dks crk ldsA$

(ख) अधर्म और अन्याय से राज करूँगा और देखूँगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है।

2- तुलना की दृष्टि से विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था। मूल शब्द में ‘तर’ एवं ‘तम’ लगाने से क्रमशः उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था बनती है, जैसे- श्रेष्ठ-श्रेष्ठतर- श्रेष्ठतम। यहाँ श्रेष्ठतर का अर्थ ‘उससे श्रेष्ठ’ और श्रेष्ठतम का अर्थ ‘सबसे श्रेष्ठ’ है।

इसी प्रकार नीचे दिये गये शब्दों के तीनों रूप लिखिए-

गुरु, अधिक, उच्च, न्यून, सरल।

3- नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिये गये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़कर शब्द और उनके विलोम शब्दों के जोड़े बनाकर लिखिए-

अधार्मिक, सुगम, रहित, गुण, सरस, स्थूल, विषाद, अवगुण, सहित, सूक्ष्म, दुर्गम, नीरस, हर्ष, धार्मिक।

4- नीचे दिये गये शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

अधर्म, कुप्रथा, नेता, सुख, विनयपूर्वक, न्यायपूर्वक, राज्य।

5- रिक्त स्थानों की पूर्ति करके शब्द सीढ़ी बनाइए-

प्र सा

जा

क वा

ण

धा

इसे भी जानें

व्यास सम्मान- साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु के० के० बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है।



भिक्षुक

(प्रस्तुत कविता 'परिमल' से ली गयी है। इस कविता में समाज के पीड़ितों, दुःखी, दीन-हीन जन के प्रति कवि ने गहरी संवेदनशीलता प्रकट की है।)



वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते
और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।
भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते।
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
-कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'



कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई० में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ था। इनका मूल पैतृक निवास गढ़ाकोला ;उन्नावद्ध में था। अन्तिम समय में आप इलाहाबाद आकर रहने लगे। निराला जी में बहुमुखी प्रतिभा थी। उन्होंने हिन्दी की गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अनेक रचनाएँ लिखीं। उनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाओं में 'बिल्लेसुर बकरिहा' 'प्रभावती' और 'निरुपमा' हैं। उनकी काव्यकला का उत्कृष्ट स्वरूप 'परिमल' काव्य संग्रह में मिलता है। सन् 1961 ई० में प्रयाग में उनका निधन हो गया।

दाता देने वाला, दानी। भाग्यविधाता ब्रह्मा, भाग्य बनाने वाला। कवि का व्यंग्य है कि जिन लोगों को वह दाता और भाग्यविधाता समझता है, उनसे उसे कुछ भी नहीं मिल रहा है।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. भिक्षुक अपनी फटी-पुरानी झोली का मुँह दूसरे के सामने क्यों फैलाता है ?
2. “और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये” पंक्ति में दया-दृष्टि से क्या तात्पर्य है ?
3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) बायें से वे मलते हुए पेट को चलते

और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।

(ख) भूख से सूख ओठ जब जाते

दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते।

विचार और कल्पना

1. आदमी किसी भी स्थिति में रह सकता है किन्तु भूखा नहीं रह सकता। यदि कभी आप को बहुत अधिक भूख लगे और समय पर आपको भोजन नहीं मिल पाये तो आप क्या करेंगे?

2. आपने तीर्थ-स्थानों अथवा धार्मिक-स्थानों पर बहुत से भिक्षुओं को पंक्तिबद्ध बैठकर भीख

माँगते देखा होगा। इनमें से कुछ तो सचमुच दयनीय स्थिति में होते हैं जबकि बहुत से ऐसे भी होते हैं, जो काम-काज कर सकते हैं। आपकी दृष्टि में क्या उन्हें भिक्षा देना उचित है? यदि नहीं, तो उनको किन-किन कार्यों में लगाया जा सकता है, लिखिए।

कुछ करने को

1. आपके गाँव तथा मुहल्ले में भी बहुत से गरीब बच्चे होंगे जो गरीबी के कारण स्कूल नहीं जा पाते होंगे। आप उनकी सूची तैयार कीजिए और अपनी तथा अपने साथियों की पुरानी किताबें देकर उन्हें स्कूल आने के लिए प्रेरित कीजिए।

2. चेहरे कई प्रकार के होते हैं, जैसे- रुआँसा चेहरा, हँसता चेहरा, भयभीत चेहरा, पछताने का

चेहरा, भूखा चेहरा। खेल-खेल में अपने साथियों के बीच इन भावों की अभिव्यक्ति कीजिए।

भाषा की बात

1-निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए-

कलेजा, मुट्ठी, दाना, झोली, बच्चा, ओठ, आँसू।

2. दिये गये शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए-

पथ, भूख, मँह, दया।

3. क्रिया शब्दों से काल का बोध होता है। क्रियाओं का प्रयोग हम विभिन्न रूपों में करते हैं, जैसे- पछताना से पछताता। इसी प्रकार फैलाना, बढ़ाना, सजाना क्रियाओं के रूप लिखिए।

4-इस कविता में शरीर के अंगों से सम्बन्धित मुहावरे प्रयोग किये गये हैं। शरीर के अंगों से सम्बन्धित अन्य मुहावरे भी हैं, जैसे- कान के बारे में प्रचलित मुहावरे हैं- कान पर जूँ न रेंगना, कान खड़े होना। इसी तरह आँख से सम्बन्धित पाँच मुहावरे लिखिए।

5. दो टूक कलेजा करना, पेट-पीठ मिलकर एक होना, आँसू के घूँट पीकर रह जाना, मुहावरों के अर्थ लिखिए।

इसे भी जानें

सन् 1991 ई0 की गणना के अनुसार भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी, बंगला, तेलगू, मराठी और तमिल है।”



मेरी यूरोप यात्रा

प्रस्तुत पाठ में डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी की यूरोप यात्रा का वर्णन है। यात्रा के दौरान देखी गयी ऐतिहासिक इमारतों एवं शहरों के बारे में लेखक ने रोचक संस्मरण प्रस्तुत किया है। ब्रह्म यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी। मित्रों के परामर्श से मैंने सरदी के लिए गरम कपड़े बनवाये। मैं बराबर केवल खादी ही पहना करता था। वहाँ जाकर भी इस नियम को भंग करना मैंने उचित नहीं समझा। इसलिए कश्मीरी ऊन के कपड़े ही खादी भण्डार से मँगवाकर बनवाये। कपड़े की काटण्छाँट भी देशी रखी। अंग्रेजी पोशाक न पहनने का निश्चय कर लिया। फलस्वरूप दो बातें हुईं। बहुत कम खर्च में काम के लायक काफी कपड़े तैयार हो गये। पोशाक हिन्दुस्तानी थी। इसलिए उसमें कुछ भूल अथवा भद्दापन भी होए तो कोई विदेशी समझ नहीं सकता था। अंग्रेजी पोशाक और रहनरहान धारण करने पर उन लोगों के फैशन और रीतिरिवाज के अनुसार ही चलनापिहरनाए कपड़ा पहनना और खानापीना पड़ता है। अपना रहनरहान कायम रखने से यह सब झंझट दूर हो जाता है। विशेषकर मुझ जैसे आदमी के लिए यह झंझट कुछ कम नहीं है क्योंकि मैंने कभी जीवन में कपड़े और फैशन पर ध्यान ही नहीं दिया है। मैंने कपड़ों को शरीर गरम रखने और लज्जापिनिवारण का साधनमात्र ही समझा है।

जहाज पर मेरी पोशाक लोगों के कौतूहल का केन्द्र बनी रही। एक पारसी दंपती और एक अंग्रेज सज्जन मेरी ओर विशेष आकर्षित हुए। गांधी जी, खादी और शाकाहार के सम्बन्ध में बातचीत करने में समय आसानी से कट गया।

रास्ते में मुझे ज्ञात हुआ कि जब तक जहाज स्वेज नहर से गुजरता है, थामस-कुक कम्पनी की ओर से ऐसा प्रबंध रहता है कि जो यात्री चाहे, वह मोटरगाड़ी द्वारा जाकर कैरो नगर देखकर आ सकता है। मैंने यह देख आना अच्छा समझा। मेरे साथ कुछ और यात्रियों ने भी थामस-कुक के साथ वहाँ जाने का प्रबंध कर लिया था।

हमलोग सवेरे पाँच बजे जहाज से उतरकर मोटरगाड़ी पर कैरो चले गये। कैरो पहुँचने पर मुँह-हाथ धोने और नाश्ता करने के लिए हम एक होटल में ले जाये गये, फिर हम कैरो का अजायबघर देखने गये। वहाँ पिरामिडों की खुदाई से निकली वस्तुएँ अब तक सुरक्षित रखी हैं। प्राचीन मिस्र के कितने ही बड़े नामी और प्रतापी बादशाहों के ममी अर्थात् शव, जो पिरामिडों से निकले हैं, वहाँ सुरक्षित रखे हैं। अब देखने में वे काले पड़ गये हैं, पर उनके चेहरे और हाथ-पैर ज्यों के त्यों हैं। वे जिस कपड़े में लपेटकर गाड़े हुए थे, वह कपड़ा भी अभी तक वैसा ही लिपटा हुआ है। वह कपड़ा बहुत ही बारीक हुआ करता था। कहते हैं,

उन कपड़ों का निर्यात भारतवर्ष से ही हुआ करता था। उन दिनों वहाँ के निवासियों का विश्वास था कि आराम के सभी सामान यदि निर्जीव शरीर के साथ गाड़ दिये जायें, तो परलोक में भी उनसे वह आराम पा सकता है। इसी विश्वास के अनुसार, पिरामिडों के अंदर, शव के साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ गाड़ी जाती थीं। पहनने के कपड़े और गहने, बैठने के लिए चौकी, खाने के लिए अन्न, शृंगार के सामान, सवारी के लिए रथ और नाव तक रखे जाते थे। उन्हें देखने से ज्ञात होता है कि उस समय भी लोग सोने का व्यवहार जानते थे।

सुना है कि इसी प्रकार की खुदाई में मोहन-जो-दड़ो (सिंध) में जो गेहूँ निकला है, वह बो देने पर उग गया। संग्रहालय की वस्तुओं और विशेषकर प्रतापी राजाओं के शव देखकर यह मालूम होने लगता है कि हम जो कुछ अपने बड़प्पन के मद में करते हैं, वह सब कितना तुच्छ और अस्थायी है। जिन बादशाहों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उन्होंने अपने जमाने में बहुत अत्याचार किये थे, उनके शव उसी तरह आज भी पड़े हैं। जो वहाँ का इतिहास नहीं पढ़ता, उसे उनके नाम तक मालूम नहीं हैं। यद्यपि अजायबघर का सफर मनोरंजक रहा, तथापि मेरे दिल पर क्षणभंगुर जीवन की सच्चाई का गहरा प्रभाव पड़ा। मैं वहाँ से उदास ही निकला।

अजायबघर के बाद हम लोगों को शहर की कुछ प्राचीन और प्रसिद्ध इमारतें दिखायी गयीं, जिनमें एक प्रसिद्ध मस्जिद भी थी। मिस्र में मुसलमान पूर्व की ओर मुँह करके नमाज पढ़ते हैं, क्योंकि वहाँ से पवित्र काबा पूरब की ओर पड़ता है। वहाँ की मस्जिदें भी इसी कारण पूरब रुख की रहती हैं। यद्यपि कैरो पुराना शहर है, पर जिस हिस्से को हमने देखा, वह बहुत कुछ आजकल के शहरों-जैसा ही था।



दोपहर का भोजन करके हम लोग कुछ दूर तक मोटरगाड़ी पर पिरामिड देखने गये। एक स्थान पर पहुँचकर मोटरगाड़ी छोड़ देनी पड़ी। ऊँटों पर सवार होकर पिरामिडों तक जाना पड़ा। मेरे लिए यह सवारी बिल्कुल नयी थी, क्योंकि मैं कभी ऊँट पर चढ़ा नहीं था।

पिरामिडों को नजदीक से जाकर देखा। ये चौखँटूटी इमारतें हैं। हमारे देश में ईंटों के भट्टे जैसे बने होते हैं, वैसे ही ये पत्थरों के बहुत बड़े-बड़े चौरस टुकड़ों में बने हैं। भट्टे की तरह ही नीचे की चौड़ाई ज्यादा है, जो ऊपर की ओर कम होती गयी है। ईंटों का भट्टा छोटा होता है, पर पिरामिड बहुत बड़े और ऊँचे हैं। इनमें लगी पत्थर की एक-एक ईंट, मेरे अनुमान से, पाँच हाथ लम्बी होगी। इसी के अनुसार उनकी चौड़ाई और मोटाई भी है। एक-एक ईंट काटकर न जाने कितने दिनों में इतनी बड़ी इमारत तैयार हुई होगी ! इसमें कितने गरीबों ने अपनी जिन्दगी का कितना हिस्सा लगाया होगा ! और, यह सब किसी एक राजा के नाम को, उसके मरने के बाद भी, कायम रखने के लिए किया गया था। नाम तो अब केवल पुस्तकों में रह गया है। ये इमारतें, जिनसे मनुष्य कोई लाभ नहीं उठा सकता, अपनी जगह पर आज भी, हजारों वर्ष के बाद ज्यों की त्यों खड़ी हैं।

हमने रेगिस्तान में एक विचित्र मूर्ति भी देखी। इसे 'स्फिंक्स' कहा जाता है। सुनते हैं, प्राचीन काल में यह प्रश्नों के उत्तर देती थी।

सन्ध्या समय वापस आकर हम लोग रेलगाड़ी पर सवार हुए और रात को ग्यारह बजे सईद बंदरगाह पहुँचे। जहाज वहाँ पहुँच गया था। खाना-पीना रेलगाड़ी में ही हो गया था। अतः हम सब जाकर अपने-अपने कमरे में सो गये।

भूमध्य सागर में पहुँचने पर कुछ सर्दी लगने लगी। लाल सागर तो बहुत गरम था, अरब सागर से भी अधिक। भूमध्य सागर में हवा भी कुछ जोर से चलती थी। इसलिए जहाज कुछ हिलता था। इटली के निकटवर्ती सिसिली टापू के पास होकर जब जहाज गुजरा, तो वहाँ का शहर कुछ दूर से देखने में आया। पहाड़ साफ नजर आता था। कुछ दिन बाद हम मार्सेल्स (फ्राँस) पहुँच गये। रास्ते में कोई विशेष बात नहीं हुई। समुद्रयात्रा में चारों ओर पानी ही पानी दिखता है। दिन-रात पानी देखते-देखते एक दो दिनों के बाद जी ऊब जाता है। अगर कहीं कोई गुजरता हुआ जहाज नजर आ जाये या जमीन देखने में आ जाये, तो बहुत आनन्द होता है। सभी यात्री उसे इस तरह देखने लगते हैं मानो उन्होंने कभी जमीन देखी ही नहीं हो।

मार्सेल्स में हम लोग सवेरे ही उतरे। वहाँ एक होटल में ठहर गये। वहाँ भी थामस-कुक कम्पनी की नौका से शहर के देखने योग्य सभी स्थानों को देख लिया सवेरे जहाज से उतरते ही रात को रवाना होनेवाली रेलगाड़ी में अपने लिए मैंने स्थान सुरक्षित करा लिया था। दिनभर घूम-घामकर रात की गाड़ी से पेरिस के लिए रवाना हो गया। पेरिस की गाड़ी बदलकर कैले पहुँचा। वहाँ फिर जहाज पर चढ़कर सन्ध्या होते-होते डोवर में उतरा। डोवर से रेलगाड़ी में चढ़कर रात के करीब नौ बजे लंदन पहुँच गया। मैं मार्च के तीसरे सप्ताह में लंदन पहुँचा था। स्टेशन पर पहले से वहाँ पहुँचे हुए मित्र मिल गये। मैं सीधा उस मकान में

चला गया, जो पहले ले लिया गया था। वह गोल्डर्सग्रीन में था। हमलोग कुछ दिनों तक वहीं ठहरे।

मैं लंदन एक मुकदमे के सिलसिले में गया था। मुकदमे से छुट्टी पाकर मैं स्विट्जरलैंड गया। मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं रोमाँ रोलाँ से मिलूँ, पर उनके घर पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि वे गर्मी के कारण कार्टरिगी पहाड़ी पर गये हैं। मैं वहाँ चला गया। रास्ता सुन्दर था। रेलगाड़ी ऊँचे पहाड़ पर आहिस्ता-आहिस्ता चढ़ती गयी। दो दिन तक वहाँ रहा। वहाँ रोमाँ रोलाँ से हमारी बातचीत भी हुई। कठिनाई यह हुई कि मैं फ्राँसीसी नहीं जानता था और वे अंग्रेजी नहीं जानते थे। इसलिए, एक दुभाषिए की सहायता लेनी पड़ी।

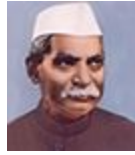
वहाँ से चलकर मैंने वर्नवेल, न्यूटाटेल, लोसान और जेनेवा शहरों को देखा। न्यूटाटेल में एक आश्चर्यजनक घटना हुई। मैं वहाँ बाजार में घूम रहा था। एक दुकान में हाथ के बुने कपड़े देखने लगा। दुकानदार महिला थी। उसने मेरे कपड़ों को देखा और समझ लिया कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ। उस महिला ने गांधी जी के बारे में बताया। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह न केवल गाँधी जी का नाम जानती थी, बल्कि उनके सम्बन्ध में जो ग्रन्थ उसे मिल सके, उन्हें वह पढ़ गयी थी।

वहाँ से फिर लंदन लौट आया। लंदन से मैं हालैंड गया। वहाँ उन दिनों युवकों का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हो रहा था। मैंने भी उसमें भाषण दिया। सम्मेलन युद्ध विरोधी युवकों का था। वहाँ से बर्लिन गया। घूम-घूमकर बर्लिन देखा। बर्लिन से लिपजिग पहुँचा और वहाँ एक दिन ठहरा। वहाँ प्रसिद्ध जल-चिकित्सक लुई कोहने से मिलने का विचार हुआ, पर ज्ञात हुआ कि मेरे पहुँचने से पूर्व ही उनकी मृत्यु हो चुकी है, फिर अपने यात्रा-क्रम के अनुसार म्यूनिख पहुँचा। वहाँ पर प्रसिद्ध सेलर हाऊस देखा, जहाँ हिटलर के भाषण हुआ करते थे। वहाँ का प्रसिद्ध अजायबघर भी देखा। म्यूनिख से वेनिस गया। यह अजीब शहर है। घर-घर में समुद्र है। नाव के सिवा दूसरी सवारी वहाँ नहीं चलती। पानी के बीच चट्टानें हैं। उन्हीं पर मकान बने हुए हैं। मच्छरों की भरमार है। मसहरी में भी नींद आना कठिन है। वेनिस से रोम पहुँचा। वहाँ के सभी प्रसिद्ध स्थान देखकर मार्सेल्स के लिए रवाना हुआ। मार्सेल्स से 'मुल्तान' जहाज पर सवार हुआ और मुम्बई आ उतरा।

-राजेन्द्रप्रसाद

लज्जा-निवारण = लाज बचाने का। साधन मात्र = केवल उपाय। दंपती = पति-पत्नी। अजायबघर = अद्भुत और अनोखी कला तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी वस्तुओं, विविध प्रकार के पशु-पक्षियों (जीवित तथा मृत), तरह-तरह के परिधानों, हथियारों, बरतनों आदि के संग्रह का स्थान। चौखूँटी = चौकोर। दुभाषिया = दो भाषाएँ जाननेवाला वह मध्यस्थ, जो उन

भाषाओं के बोलने वाले दो व्यक्तियों की वार्ता के अवसर पर एक को दूसरे का अभिप्राय समझाये।



डॉ० राजेन्द्रप्रसाद का जन्म 3 दिसम्बर सन् 1884 ई० में हुआ। इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० ए० तथा एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1920 ई० में वकालत छोड़कर आप असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। सन् 1950 से 1962 ई० तक भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति की हैसियत से भारत के राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया। इन्होंने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें- 'आत्मकथा', 'चम्पारण', 'सत्याग्रह', 'इण्डिया डिवाइडेड', 'बापू के कदमों में' आदि प्रमुख हैं। इनका निधन 28 फरवरी सन् 1963 ई० में हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

यात्रावृत्त से

1. भिक्षुक अपनी फटी-पुरानी झोली का मुँह दूसरे के सामने क्यों फैलाता है ?
2. “और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये” पंक्ति में दया-दृष्टि से क्या तात्पर्य है ?
3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) बायें से वे मलते हुए पेट को चलते

और दाहिना दया-दृष्टि पाने की ओर बढ़ाये।

(ख) भूख से सूख ओठ जब जाते

दाता-भाग्यविधाता से क्या पाते।

विचार और कल्पना

1. आदमी किसी भी स्थिति में रह सकता है किन्तु भूखा नहीं रह सकता। यदि कभी आप को बहुत अधिक भूख लगे और समय पर आपको भोजन नहीं मिल पाये तो आप क्या करेंगे?

2. आपने तीर्थ-स्थानों अथवा धार्मिक-स्थानों पर बहुत से भिक्षुओं को पंक्तिबद्ध बैठकर भीख

माँगते देखा होगा। इनमें से कुछ तो सचमुच दयनीय स्थिति में होते हैं जबकि बहुत से ऐसे भी होते हैं, जो काम-काज कर सकते हैं। आपकी दृष्टि में क्या उन्हें भिक्षा देना उचित है? यदि नहीं, तो उनको किन-किन कार्यों में लगाया जा सकता है,

लिखिए।

कुछ करने को

1. आपके गाँव तथा मुहल्ले में भी बहुत से गरीब बच्चे होंगे जो गरीबी के कारण स्कूल नहीं जा पाते होंगे। आप उनकी सूची तैयार कीजिए और अपनी तथा अपने साथियों की पुरानी किताबें देकर उन्हें स्कूल आने के लिए प्रेरित कीजिए।
2. चेहरे कई प्रकार के होते हैं, जैसे- रुआँसा चेहरा, हँसता चेहरा, भयभीत चेहरा, पछताने का चेहरा, भूखा चेहरा। खेल-खेल में अपने साथियों के बीच इन भावों की अभिव्यक्ति कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए-
कलेजा, मुट्ठी, दाना, झोली, बच्चा, ओठ, आँसू।
2. दिये गये शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए-
पथ, भूख, मँह, दया।
3. क्रिया शब्दों से काल का बोध होता है। क्रियाओं का प्रयोग हम विभिन्न रूपों में करते हैं, जैसे- पछताना से पछताता। इसी प्रकार फैलाना, बढ़ाना, सजाना क्रियाओं के रूप लिखिए।
4. इस कविता में शरीर के अंगों से सम्बन्धित मुहावरे प्रयोग किये गये हैं। शरीर के अंगों से सम्बन्धित अन्य मुहावरे भी हैं, जैसे- कान के बारे में प्रचलित मुहावरे हैं- कान पर जूँ न रेंगना, कान खड़े होना। इसी तरह आँख से सम्बन्धित पाँच मुहावरे लिखिए।
5. दो टूक कलेजा करना, पेट-पीठ मिलकर एक होना, आँसू के घूँट पीकर रह जाना, मुहावरों के अर्थ लिखिए।

इसे भी जानें

सन् 1991 ई0 की गणना के अनुसार भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा

हिन्दी, बंगला, तेलगू, मराठी और तमिल है।

(घ) मैं कभी ऊँट पर चढ़ा नहीं था।

(ङ) हम लोग रेलगाड़ी पर सवार हुए।

(च) लाल सागर में पहुँचने पर कुछ गर्मी लगने लगी।

(छ) पानी के बीच चट्टानों पर मकान बने हुए थे।

4. इन शब्दों में उपसर्ग लगाकर नये शब्द बनाएँ-

स्थायी, लोक, भाव, रस, शेष,

सिद्ध, मान, देश, ताप।

इसे भी जानें

राजेन्द्रसम्मान- बिहार हिन्दी संस्थान द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार है।

निजभाषा उन्नति

(प्रस्तुत पाठ में कवि ने स्वाभिमान और देश-प्रेम की भावना के विकास के लिए अपनी मातृभाषा के विकास पर बल दिया है। साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए परस्पर मिलजुल कर रहने का संदेश दिया है।)

(दोहे)

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब उठहु मिटावहु शूल।
निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सब को मूल॥
प्रचलित करहु जहान में निज भाषा करि जत्न।
राज काज दरबार में फैलावहु यह रत्न॥
सुत सो तिय सो मीत सो भृत्यन सो दिन रात।
जो भाषा मधि कीजिए निज मन की बहु बात॥
निज भाषा निज धरम निज मान करम व्यवहार।
सबै बढ़ावहु बेगि मिलि कहत पुकार-पुकार॥
पढ़ो लिखो कोउ लाख विध भाषा बहुत प्रकार।
पै जबही कछु सोचिहो निज भाषा अनुसार॥
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन॥

घर की फूट बुरी

(पद)

जगत में घर की फूट बुरी।

घर के फूटहिं सों बिनसाई सुबरन लंकपुरी॥

फूटहिं सों सत कौरव नासे भारत युद्ध भयो।
जाको घाटो या भारत में अबलौं नहिं पुजयो॥

फूटहिं सो जयचन्द बुलायो जवनन भारत धाम।
जाको फल अब लौं भोगत सब आरज होइ गुलाम॥

फूटहिं सों नवनन्द विनासो गयो मगध को राज।
चन्द्रगुप्त को नासन चाह्यो आपु नसे सह साज॥

जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय॥

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म सन् 1850 ई० में काशी में हुआ था। इनके पिता बाबू गोपाल चन्द्र जी भी कवि थे। भारतेन्दु जी ने निबन्ध, नाटक, कविता आदि की रचना की।

आधुनिक काल के वे जन्मदाता कहे जाते हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम फुलवारी', 'भक्तमाल' आदि हैं। इन्होंने खड़ी बोली में गद्य लिखा और गद्य लिखने के लिए लोगों को उत्साहित किया। ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। 35 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1885 ई० में इनकी मृत्यु हो गयी।



मूल = आधार। शूल = पीड़ा। बिलम्ब = देर। जत्न = यत्न, प्रयास। भृत्यन = सेवकों।

मधि = बीच में। बेगि = शीघ्र। प्रवीन = कुशल। हीन = अधूरा, रहित। बिनसाई = नष्ट हुई।

पुजयो = पूरा हुआ। जवनन = यवनों के। आरज = आर्य। साज = ठाट-बाट।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. निज भाषा की उन्नति से क्या-क्या लाभ होगा ?
2. कवि ने निज भाषा का प्रसार कहाँ-कहाँ करने के लिए कहा है ?
3. कवि ने निज भाषा के अतिरिक्त किसको-किसको बढ़ाने की बात की है ?
4. महाभारत के युद्ध का क्या कारण था ?

5. निम्नांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

(ख) पै निज भाषा ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।

(ग) जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय।।

विचार और कल्पना

1. यदि आपको अपनी बात हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में कहने के लिए कहा जाय, तो आप अपनी बात कहने के लिए किस भाषा को चुनेंगे और क्यों?

2. कवि ने फूट के कारण होने वाले विनाश के अनेक उदाहरण दिये हैं, यथा-

(क) रावण और विभीषण की फूट के कारण लंका का नाश।

(ख) कौरव-पाण्डवों की फूट के फलस्वरूप महाभारत युद्ध।

(ग) पृथ्वीराज और जयचन्द की आपसी फूट के कारण यवनों का भारत आगमन।

इन विषयों पर शिक्षक/शिक्षिका के साथ चर्चा कीजिए।

कुछ करने को

निम्नांकित स्थितियों पर छोटे समूहों में चर्चा कीजिए और निष्कर्ष को पाँच-सात पंक्तियों

में लिखिए-

(क) ऐसा घर जिसमें सब मिलकर कार्य करते हैं।

(ख)ऐसा घर जिसमें परस्पर फूट है।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए-

करम, जदपि, सुबरन, आरज।

2. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।।

उपर्युक्त पंक्तियों में आये हुए ‘मूल’ और ‘शूल’ शब्द तुकान्त शब्द हैं। कविता में आये हुए ऐसे ही तुकान्त शब्द छाँटकर उन शब्दों के आधार पर कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

इसे भी जानें

महात्मा गांधी- “राष्ट्र भाषा की जगह एक हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।”

सुमित्रानंदन पंत- “हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है वह विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी।”

विनोबा भावे- “भारत की एकता के लिए आवश्यक है कि देश की सभी भाषाएँ नागरी लिपि अपनाएँ।”

सुभाषचन्द्र बोस- “प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी-प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं।”

राजर्षि टण्डन- “हिन्दी राष्ट्रियता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है।”

डॉ० जाकिर हुसैन- “हिन्दी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी।”



शाप-मुक्ति

;प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने डॉ० प्रभात के माध्यम से अपराधबोध तथा प्रायश्चित्त-स्वरूप मानव सेवा का व्रत लेने का चित्रण किया है।

एक दिन ऐसा हुआ कि मैं बूढ़ी दादी की आँखों का इलाज कराने दिल्ली के एक बड़े

प्रसिद्ध नेत्र-चिकित्सक डॉ० प्रभात के पास गया। लगभग अन्धी हो चुकी दादी को सहारा दिये जब मैं डॉ० प्रभात के कमरे में पहुँचा तो उन्होंने मुस्कुराते हुए दादी का स्वागत किया। 'आओ दादी अम्मा! कहाँ क्या तकलीफ है?'

दादी ने आवाज से ही डॉक्टर की उम्र का अनुमान लगा कर कहा 'कोई तकलीफ नहीं है। बस बुढ़ापे की मारी हूँ। बुढ़ापे में नजर कमजोर हो ही जाती है।'



‘पर मैं तो आँखों का डॉक्टर हूँ दादी अम्मा! बुढ़ापे का इलाज मेरे पास कहाँ?’ डॉ. प्रभात ने हँसते हुए कहा।

मेरी दादी भी कम विनोदी स्वभाव की नहीं। कहने लगी, ‘कोई बात नहीं, बेटा! तुम आँखों का ही इलाज कर दो, बुढ़ापे का इलाज तो भगवान के पास भी नहीं है।’

यह सुनकर डॉ. प्रभात हँस पड़े और दादी से बात करते हुए उनकी आँखों की जाँच करने लगे। उन्होंने विस्तार से, कई उपकरणों और यन्त्रों की सहायता से दादी की आँखों की जाँच की। बीच-बीच में बातचीत और हँसी-मजाक भी करते जाते थे।

मैं चुपचाप बैठा डॉ. प्रभात की ओर देख रहा था। पहले तो मुझे उनकी हँसी ही कुछ जानी-पहचानी लगी थी, फिर ध्यान से देखने पर उनका चेहरा भी कुछ परिचित-सा मालूम हुआ। लेकिन याद नहीं आ रहा था कि मैंने इन्हें पहले कहाँ देखा है। आखिर जब उन्होंने दादी की आँखों की पूरी जाँच कर ली, तो मैंने पूछ ही लिया, ‘आप कहाँ के रहने वाले हैं, डॉक्टर साहब?’

‘इलाहाबाद का हूँ।’ क्यों?

‘अरे, हम भी इलाहाबाद के ही हैं।’ दादी मुझसे पहले ही बोल उठीं।

‘अच्छा? बड़ी खुशी हुई।’ डॉ. प्रभात ने सचमुच खुष होकर पूछा ‘इलाहाबाद में कहाँ रहते हैं आप लोग?’

दादी ने ज्यों ही हमारे इलाहाबाद वाले घर का पता-ठिकाना बताया, डॉ. प्रभात ने मेरी तरफ़ देखा और अचरज भरी प्रसन्नता से बोले, ‘अरे, तुम बब्बू तो नहीं हो?’

‘और तुम मंटू?’ अचानक मेरे मुँह से निकल गया, ‘तुम... आप हमारे बचपन के मित्र मंटू हैं न?’

”हाँ भई, मैं मंटू ही हूँ। वाह, यार तुम खूब मिले! तुम तो षायद जब दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ते थे, तभी अपने परिवार के साथ दिल्ली चले आये थे। है न ? वाह, मुझे तो स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि जीवन में फिर कभी तुमसे भेंट होगी। सच, बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर।“

”मुझे भी।“ मैंने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा।

तभी डॉ. प्रभात ने दादी का चेहरा ध्यान से देखा और अचानक उनकी मुस्कान लुप्त हो गयी। चेहरा किसी दुखदाई स्मृति में काला-सा हो आया। दादी की अत्यधिक कमजोर आँखों को डॉक्टर के चेहरे का यह भाव-परिवर्तन नज़र नहीं आया। वे प्रसन्न होकर पूछने लगीं, ”अच्छा, तो तुम दोनों बचपन में साथ-साथ खेले हो? यह तो बड़ा अच्छा संयोग रहा। तुम तो अपने ही हुए, डॉक्टर बेटा। हाँ, तुमने अपना क्या नाम बताया? मंटू? इलाहाबाद में हमारे पड़ोस में एक वकील रहते थे, उनके लड़के का नाम भी कुछ ऐसा ही था। बड़ा बदमाश लड़का था“

डॉ. प्रभात ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे सहसा बहुत गम्भीर हो गये। दादी के लिए दवाई का पर्चा लिखते हुए उन्होंने कहा, “ये बातें फिर कभी हाँगी, दादी अम्मा! बाहर और भी कई रोगी इन्तजार कर रहे हैं। मैं तुम्हारी दवाई लिख रहा हूँ। बाजार से मँगवा लेना और दिन में तीन बार आँखों में डालती रहना, फिर अगले सप्ताह आज के ही दिन आ जाना। तुम्हारी आँखों का ऑपरेशन करना होगा। घबराना मत, ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारी आँखें अच्छी हो जायेंगी।”

बाहर आते ही दादी ने मुझसे पूछा, “यह उसी वकील का बेटा मंटुआ था न?”

“हाँ, दादी ! बचपन में मेरे साथ पढ़ता था।”

“बस, तो अब इसके पास दुबारा आने की जरूरत नहीं। मैं इस दुष्ट के हाथों अपनी आँखें नहीं फुड़वाऊँगी।”

“कैसी बातें करती हो, दादी! यह तो बहुत माना हुआ डॉक्टर है और अब तो अपनी जान-पहचान का भी निकल आया। उसे दुष्ट क्यों कह रही हो?”

“तू भूल गया इसने वहाँ इलाहाबाद में क्या किया था?”

“क्या किया था?”

“अरे, तुझे याद नहीं, इसने मुहल्ले की कुतिया के तीन पिल्लों की आँखें आक के पौधों का दूध डालकर फोड़ दी थीं? तूने ही तो यह बात हम लोगों को बतायी थी। उनमें से एक अन्धा पिल्ला तूने जिद करके पाला था, यह भी तुझे याद नहीं?”

मैं सचमुच ही सब कुछ भूला हुआ था, लेकिन दादी के याद दिलाने पर एक धुँधली-सी स्मृति उभरी और ज्यों ही मैंने दिमाग पर थोड़ा जोर दिया, बचपन की वह दुःखद स्मृति सहसा कल की-सी घटना के रूप में स्पष्ट होकर मेरी आँखों के आगे आ गयी।



इलाहाबाद में हमारे पड़ोसी वकील साहब की कोठी के पीछे एक बहुत बड़ा बाग और घास का मैदान था। मैं मंटू के साथ अक्सर वहाँ खेला करता था। बाग की मेड़ के पास आक के बहुत से

पौधे उगे हुए थे। एक दिन हम खेल-खेल में आक के पत्ते तोड़ने लगे। उधर से गुजरते हुए हमारे स्कूल के अध्यापक ने हमें देख लिया। उन्होंने हमें डाँट लगायी और बताया कि आक के पत्ते कभी नहीं तोड़ने चाहिए, क्योंकि उन्हें तोड़ने से जो गाढ़ा-गाढ़ा सफेद दूध-सा निकलता है, यदि आँखों में चला जाये तो आदमी अन्धा हो जाता है।

यह जानकारी हम लोगों के लिए एकदम नयी और विस्मयकारी थी। वास्तव में ऐसा होता है या नहीं, यह देखने के लिए मंटू ने एक प्रयोग कर डाला था। ठंड के दिन थे और मुहल्ले में आवारा घूमने वाली एक कुतिया ने वकील साहब की कोठी के पीछे पड़ी सूखी टहनियों के ढेर के नीचे तीन पिल्ले दिये थे। पिल्ले बड़े सुन्दर थे। मैं और मंटू उनसे खेला करते थे। आक के दूध के भयानक असर की जानकारी मिलने के अगले दिन जब मैं स्कूल से आकर खाना खाने के बाद मंटू के साथ खेलने गया तो मैंने देखा, मंटू आक के पौधों के पास बैठा है और उसके घुटनों में दबा पिल्ला कें-कें कर रहा है। दो पिल्ले पास ही कूँ-कूँ करते इधर-उधर भटक रहे थे। नजदीक जाकर मैंने देखा, हैरान रह गया। मंटू आक के पत्ते तोड़-तोड़ कर उनका दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

”यह तूने क्या किया, बेवकूफ! पिल्ला अन्धा हो जायेगा।“ मैंने चिल्ला कर कहा।

मंटू ने उस पिल्ले को रख दिया और बोला, ”मैंने उन दोनों की आँखों में भी आक का दूध भर दिया है। अब देखेंगे, ये तीनों अन्धे होते हैं या नहीं।“

उस गाढ़े चिपचिपे दूध से तीनों पिल्लों की आँखें बन्द हो गयीं। कुछ दिनों बाद आँखें तो षायद खुल गयी थीं, लेकिन वे अन्धे हो गये थे।

मंटू के इस कुकृत्य की जानकारी केवल मुझे ही थी। मैंने उसे उन प्यारे-प्यारे पिल्लों को

अन्धा बना देने के लिए बहुत बुरा-भला कहा था और वकील साहब से शिकायत करने की धमकी भी दी थी। लेकिन मंटू को एहसास हो गया था कि उसने अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए इस प्रयोग के रूप में एक बड़ा पाप कर डाला है। उसने गिड़गिड़ा कर मुझसे कहा था कि यह बात मैं किसी को न बताऊँ। मैं शायद बताता भी नहीं, लेकिन जब उन तीन पिल्लों में से दो, दिन-रात कूँ-कूँ करते, इधर से उधर भटकते मर गये, मुझे बहुत दुःख हुआ और उस दिन मैं बहुत रोया।

दादी, माँ और परिवार के अन्य सभी लोग मुझसे बार-बार पूछने लगे कि मैं क्यों रो रहा हूँ? पहले मैंने बात छिपा कर अपने मित्र मंटू को बचाने की कोशिश की, लेकिन फिर मुझे तीसरे पिल्ले का ध्यान आ गया, जो अभी जीवित था और उसकी जान बचाना मुझे मंटू को पिटाई से बचाने से ज्यादा जरूरी लग रहा था। इसलिए मैंने रोते-रोते सारी बात बता दी और उस पिल्ले की आँखों का इलाज करा देने की जिद पकड़ ली। सब लोगों ने मंटू को बुरा-भला कहा। वकील साहब ने उसकी पिटाई भी की। मुझे भी बहुत कुछ सुनना पड़ा, क्योंकि मैंने भी सब कुछ जानते हुए भी बात को तब तक छिपाए रखा, जब तक दो पिल्ले मर नहीं गये।

आखिर तीसरे पिल्ले को बचाने के प्रयास किये गये। मैंने जिद करके उसे पाल लिया। पिताजी ने उसकी आँखों का इलाज भी कराया, लेकिन वह अन्धा ही रहा। माँ और दादी उसकी बड़ी सेवा करती थीं। मैं भी उसका बहुत ध्यान रखता था। उस समय तो उसकी जान बच गयी, लेकिन जब वह बड़ा हो गया, एक दिन घर से बाहर निकल गया और सड़क पर किसी वाहन से कुचल कर मर गया।

उस घटना को याद कर मैं हैरान रह गया। बचपन में तीन पिल्लों की आँखें फोड़ देने वाला मंटू आज इतना बड़ा नेत्र-चिकित्सक! इससे भी ज्यादा हैरानी की बात यह थी कि लगभग पैंतीस साल पहले की वह घटना, जिसे मैं भूल चुका था, दादी को अभी तक याद थी।

निश्चय ही वह घटना प्रभात को भी याद होगी, तभी तो वह हम लोगों का परिचय पाते ही अचानक चुप, गम्भीर और उदास हो गये थे।

‘लेकिन दादी, बचपन की उस बात को लेकर अब तो डॉ. प्रभात को बुरा-भला कहना ठीक नहीं।’ मैंने दादी को समझाने की कोषिष की, ‘अब वे मंटू नहीं, देश के माने हुए नेत्र-चिकित्सक हैं। दूर-दूर से लोग उनके पास अपनी आँखों का इलाज कराने आते हैं। अब तक तो हजारों लोगों को उनकी खोयी हुई नेत्र-ज्योति लौटा चुके होंगे। क्या इतनी बड़ी सेवा से उनका बचपन का अबोध अवस्था में किया हुआ पाप अब तक धुल नहीं गया होगा?’



‘कुछ भी हो, मैं उससे अपनी आँखों का इलाज नहीं कराऊँगी।’ दादी ने निष्चय के स्वर में कहा।

दादी का स्वभाव बिल्कुल बच्चों का-सा है। हठ पकड़ लेती हैं तो किसी के मनाये नहीं मानतीं। मैंने उन्हें बहुत समझाने की कोषिष की, लेकिन वे डॉ. प्रभात से इलाज कराने को तैयार न हुईं। आँखों में डालने की जो दवाई डॉ. प्रभात ने लिखकर दी थी, वह भी नहीं खरीदने दी। परिवार के सब लोगों ने उन्हें समझाया, लेकिन वे टस से मस नहीं हुईं।

आखिर शाम को मैंने डॉ. प्रभात को टेलीफोन किया और दादी की जिद के बारे में बताया। डॉ. प्रभात ने गम्भीर होकर सब कुछ सुना और बोले, ‘तुम अपने घर का पता बताओ, मैं स्वयं आकर दादी अम्मा को समझाऊँगा।’

लगभग एक घंटे बाद डॉ. प्रभात हमारे घर में थे और दादी से कह रहे थे, ‘दादी अम्मा! मैंने बचपन में जो पाप किया था, उसे मैं आज तक नहीं भूला हूँ और मैं उस पाप को भी नहीं

भूला हूँ, जो आपने मुझे दिया था। जब तक आप इलाहाबाद में रहीं, मुझे देखते ही कहने लगती थीं- अरे, कम्बख्त मंटुआ, तूने मासूम पिल्लों की आँखें फोड़ी हैं, तेरी आँखें भी किसी दिन इसी तरह फूटेंगी। आप के इस षाप से मुझे अपने पाप का बोध हुआ और मैंने फैसला कर लिया कि मुझे जीवन में नेत्र-चिकित्सक ही बनना है। मेरी आँखें तो आप के षाप के कारण कभी-न-कभी फूटेंगी ही, पर उससे पहले मैं बहुत-सी आँखों को रोषनी दे जाऊँगा। उन बहुत-सी आँखों में से दो आँखें आप की भी होंगी, दादी अम्मा।’

डॉ. प्रभात की बातों में न जाने कैसा जादू था कि दादी की ही नहीं, हम सबकी आँखें भर आयीं। दादी तो इतनी भाव-विह्वल हो उठीं की उन्होंने डॉ. प्रभात को पास बुलाकर हृदय से लगा लिया।

उनके सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, ‘जीते रहो, मेरे लाल ! तुम्हारी आँखों की ज्योति हमेशा बनी रहे।’

इसके बाद दादी ने मुझसे कहा, ‘अरे बबुआ, तेरा बालसखा आया है, इसकी खातिरदारी नहीं करेगा? जा, इसके लिए, अच्छी-सी मिठाई लेकर आ और सुन, इसने मेरी आँखों के लिए जो दवाई लिखी थी न, वह भी खरीद लाना।’

-रमेश उपाध्याय

आधुनिक हिन्दी कहानीकारों में रमेश उपाध्याय का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका जन्म एटा जिले के बधारी गाँव में हुआ था। इन्होंने पहले ‘साप्ताहिक हिन्दुस्तान’ तथा ‘नवनीत’ में उपसम्पादक का कार्य किया। इस समय ये व्यावसायिक अध्ययन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। ‘षेश इतिहास’, ‘नदी के साथ’, ‘बदलाव से पहले’ इनके प्रसिद्ध उपन्यास तथा ‘पेपरवेट’ नाटक विशेष उल्लेखनीय हैं।



नेत्र-चिकित्सक = आँख का डॉक्टर। लुप्त = गायब। स्मृति = याद। सहसा = एकाएक। जरूरत = आवश्यकता। आक = मदार। पिल्ला = कुत्ते का बच्चा। अक्सर = प्रायः। विस्मयकारी = आश्चर्य उत्पन्न करने वाला। कुकृत्य = बुरा कार्य। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। जिद = हठ। मासूम = भोला, अबोध। बालसखा = बचपन का मित्र।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. डॉ० प्रभात का चेहरा किस दुःखदायी स्मृति से काला-सा हो गया ?
2. मंटू ने बचपन में क्या पाप किया था और उस पाप का प्रायश्चित्त उसने किस प्रकार किया ?
3. बब्बू द्वारा मंटू के पाप का भेद खोल दिये जाने पर घर वालों ने उन दोनों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया ?
4. दादी डॉ० प्रभात से अपनी आँखों का इलाज क्यों नहीं करवाना चाहती थीं, फिर वह

इलाज के लिए कैसे तैयार हुई ?

विचार और कल्पना

1. प्रायः कुछ लोग आपसे किसी बात के लिए मना करते होंगे- “ऐसा नहीं, ऐसे करो”- याद कीजिए और लिखिए कि ऐसा आपको कब-कब और क्यों कहा गया।

2. जब उस पिल्ले की आँखें चली गयी होंगी तो उसे क्या-क्या कठिनाइयाँ हुई होंगी। सोचिए और लिखिए।

3. माफी माँगना आसान होता है या माफ करना ? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

कुछ करने को

1. आक के पौधे से गाढ़ा दूध निकलता है। अन्य किन-किन पेड़-पौधों से गाढ़ा दूध निकलता है, उनके नाम लिखिए।

2. अपने पास के किसी अस्पताल में जाकर किसी आँख के डॉक्टर से मिलिए और पूछिए कि उन्होंने यह पेशा क्यों चुना।

3. किसी अन्धे व्यक्ति से मिलिए, उससे बातचीत कीजिए और महसूस कीजिए कि उसकी कल्पना में दुनिया कैसी है।

4. यह जानकारी हम लोगों के लिए एकदम नयी और विस्मयकारी थी। वास्तव में ऐसा होता है या नहीं, यह देखने के लिए मंटू ने एक प्रयोग कर डाला था। ठंड के दिन थे और मुहल्ले में आवारा घूमने वाली एक कुतिया ने वकील साहब की कोठी के पीछे पड़ी सूखी टहनियाँ के ढेर के नीचे तीन पिल्ले दिये थे। पिल्ले बड़े सुन्दर थे। मैं और मंटू उनसे खेला करते थे। आक के दूध के भयंकर असर की जानकारी मिलने के अगले दिन जब मैं स्कूल से आकर खाना खाने के बाद मंटू के साथ खेलने गया तो मैंने देखा, मंटू आक के पौधों के पास बैठा है और उसके घुटनों में दबा पिल्ला कें-कें कर रहा है। दो पिल्ले पास ही कूँ-कूँ करते इधर-उधर भटक रहे थे। नजदीक जाकर मैंने देखा, हैरान रह गया। मंटू आक के पत्ते तोड़-तोड़कर उनका दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

उपर्युक्त अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और अपने सहपाठियों से पूछने के लिए अनुच्छेद के आधार पर चार प्रश्न बनाइए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

नयी, ठंड, पाप, बूढ़ा।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टस से मस न होना, हृदय से लगाना, मुस्कान लुप्त होना।

3. 'बच्चा' शब्द में 'पन' प्रत्यय लगाकर 'बचपन' शब्द बना है जो भाववाचक संज्ञा है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में 'पन' प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाइए-

लड़का, अपना, अनाड़ी, रूखा।

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के कारक बताइए-

(क) मैं तो आँखों का डॉक्टर हूँ।

(ख)मैं तुम्हारी दवाई लिख रहा हूँ।

(ग)दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

(घ)सब लोगों ने मंटू को बुरा-भला कहा।

इसे भी जानें

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में बाईस मान्यताप्राप्त भाषाओं को सम्मिलित किया गया है।



बाललीला और भक्तिपद

(कृष्ण भक्त कवियों में सूर तथा रसखान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत पाठ में सूरदास तथा रसखान के द्वारा रचित बाललीला तथा भक्ति के कुछ पद लिये गये हैं।)

(क) सूरदास: बाललीला

(1)

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।

मोसों कहत मोल कौ लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ।

कहा करौं यहि रिसि के मारे, खेलन हौं नहिं जात।

पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात।

गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।

चुटकी दै दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।

तू मोहीं कौ मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।

मोहन-मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।

‘सूर’ स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।



(2)

खेलन में को काकौ गुसैयाँ।

हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस ही कत करत रिसैयाँ।

जाति-पाँति हमतें बड़ नाहीं, नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ।

अति अधिकार जनावत मोंतै, जातें अधिक तुम्हारे गैयाँ।

रुहठि करै तासौं को खेलै, रहे बैठि जहँ-तहँ सब गवैयाँ।

सूरदास प्रभु खेल्यौई चाहत, दाउँ दियौ करि नन्द दुहैयाँ।

भक्ति-पद

(1)

अबकी राखि लैहु भगवान।

हौं अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।

ताके डर भाज्यो चाहत हौं, ऊपर दुख्यौ सचान।

दुहँू भाँति दुख भयौ आनि यह कौन उबारै प्रान।

सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी कर छूट्यौ सन्धान।

सूरदास सर लग्यौ सचानहि जय जय कृपा निधान।



$\frac{1}{4}2\frac{1}{2}$

जैसे तुम गज कौ पाउँ छुड़ायौ।

अपने जन कौ दुखित जानि कै पाउँ पियादे धायौ ।

जहँ जहँ गाढ़ परी भक्तिन कौ तहँ तहँ आपु जनायौ ।

भक्ति हेत प्रहलाद उबार्यो, द्रौपदि-चीर बढ़ायौ ।

प्रीति जानि हरि गए बिदुर कै, नामदेव-घर छायौ ।

सूरदास द्विज दीन सुदामा, तिहिँ दारिद्र नसायौ ।

- सूरदास

(ख) रसखानः भक्ति-पद

(1)

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारों।

आठहुँ सिद्धि नवहुँ निधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारों।।

रसखानि कबौं इन आँखिन सो ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारों।

कोटिक हौं कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

(2)

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै।

जाहि अनादि अनन्त अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावै॥

नारद से सुक व्यास रतै पचि हारे तऊ पुनि पार न पावै।

ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै॥

- रसखान

रसखान कृष्ण भक्तिशाखा के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका जन्म सन् 1548 ई० के लगभग हुआ था। इनका वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम था। इन्होंने 'रसखान' नाम से कविताएँ लिखीं। इनकी दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं- 'सुजान रसखान' और 'प्रेम वाटिका'। इनका निधन सन् 1628 ई० के लगभग माना जाता है।

सूरदास जी भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 ई० में रुनकता नामक ग्राम (मथुरा) में हुआ था। इन्होंने कृष्ण की बाललीलाओं एवं प्रेमलीलाओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है। ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे। 'सूरसागर' नामक ग्रन्थ में इनके पद

संकलित हैं। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- 'सूर सारावली' तथा 'साहित्य लहरी'। इनका निधन सन् 1585 ई० में हुआ।



खिझायौ = चिढ़ाया। जायौ = पैदा किया। खीझै = डाँटना। चबाई = चुगली करने वाला।

धूत = चालाक (धूर्त)। गुसैयाँ = (गोस्वामी) मालिक। रिसैयाँ = क्रोध करना। छैयाँ = अधीन, छाया में। रुहठि = रूठना। द्रुम-डरिया = पेड़ की डाली। पारधि = बहेलिया। दुक्यौ = छिपा हुआ। सचान = बाज। अहि = सर्प। पियादे = पैदल। धायौ = दौड़ पड़े। उबायौ = उद्धार किया (रक्षा करना)। नसायौ = नष्ट किया। लकुटी = लाठी (छोटी)। कामरिया = कम्बल। तिहँूपुर = त्रैलोक्य (स्वर्ग, मर्त्य, पाताल)। तड़ाग = बावली। कलधौत = सोना। अनादि = जिसका आरम्भ न हो। अनन्त = जिसका अन्त न हो। पचि = बार-बार। छछिया = छाछ नापने का बर्तन। छाछ = मट्ठा।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. दाऊ क्या कहकर कृष्ण को खिझाते हैं और माँ उन्हें क्या कहकर समझाती हैं?
2. खेल में हार जाने पर कृष्ण जब रूठते हैं तब उनके मित्र उनसे क्या कहते हैं?
3. पक्षी की करुणपुकार पर प्रभु ने उसकी रक्षा कैसे की?
4. सुदामा की दरिद्रता को भगवान ने क्यों और कैसे मिटाया?
5. भक्त रसखान ने तीनों लोकों के राज्य को कृष्ण की किन वस्तुओं से तुच्छ कहा है?
6. निम्नांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी कर छूट्यौ सन्धान।

सूरदास सर लग्यौ सचानहि जय जय कृपा निधान।

(ख) अपने जन कौ दुखित जानि कै पाउँ पियादे धायौ ।

जहँ जहँ गाढ़ परी भक्तिन कौ तहँ तहँ आपु जनायौ ।

विचार और कल्पना

1. श्री कृष्ण को गेंद का खेल प्रिय था। बताइए आपको कौन-सा खेल प्रिय है और क्यों?

2. आप अपना गृहकार्य कर रहे हैं। उसी समय आप के मित्र आ जाते हैं और आपसे

खेलने के लिए आग्रह करने लगते हैं, आप क्या करेंगे-

(क) अपना गृहकार्य छोड़कर खेलने चले जायेंगे।

(ख) उनसे कहेंगे कि मैं अपना गृहकार्य करके फिर खेलने जाऊँगा।

(ग) आप उनके साथ जाने के लिए सीधे मना कर देंगे।

कुछ करने को

जिस काल में भक्ति प्रधान रचनाएँ अधिक लिखी गयीं, उस काल विशेष को हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल के नाम से जानते हैं। सूरदास जी के अतिरिक्त इस काल के अन्य कवियों के नाम की सूची बनाइए।

भाषा की बात

1. ब्रजभाषा के शब्द- कत, मोही, काकौ, हौं को खड़ी बोली हिन्दी के रूप में लिखिए।

उदाहरण- मोसों=मुझसे।

2.निम्नलिखित शब्दों का तत्सम रूप लिखिए-

सेस, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेस।

3.सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै ।

जाहि अनादि अनन्त अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावै।।

उपर्युक्त पंक्तियों में एक विशेष प्रयोग हुआ है। पहली पंक्ति में 'स' और दूसरी में 'अ' वर्ण के कई बार प्रयोग होने से कविता की सुन्दरता बढ़ गयी है। कविता में इस तरह के प्रयोग को अनुप्रास अलंकार कहते हैं। अपनी पाठ्यपुस्तक में आयी हुई कविताओं में से अनुप्रास अलंकार के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए।

इसे भी जानें

आठहुँ सिद्धि- (आठ सिद्धियाँ)- अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य,

ईशित्व और वशित्व।

नवहुँ निधि- (नौ निधियाँ)- पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व।

“सवैया छन्द में कृष्ण-लीला का गान करने वाले प्रथम कवि रसखान हैं।”



स्कूल मुझे अच्छा लगा

(प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने वर्तमान स्कूलों की शिक्षा-पद्धति पर करारी चोट करते हुए उसे बच्चों के लिए व्यावहारिक बनाने की बात कही है।)

जब तोत्तो-चान ने नये स्कूल का गेट देखा तो वह ठिठक गयी। अब तक जिस स्कूल में वह जाती रही थी उसका गेट सीमेन्ट के दो बड़े खम्भों का बना था और गेट पर बड़े-बड़े अक्षरों में स्कूल का नाम लिखा था, पर इस स्कूल का गेट तो पेड़ के दो तनों का था। उन पर टहनियाँ और पत्ते भी थे।

‘अरे, यह गेट तो बढ़ रहा है,’ तोत्तो-चान ने कहा। ‘यह बढ़ता जायेगा, और एक दिन शायद टेलीफोन के खम्भे से भी ऊँचा हो जायेगा।’

गेट के ये दो खम्भे असल में पेड़ ही थे, जिनकी जड़ें मौजूद थीं। कुछ और पास पहुँचने पर तोत्तो-चान ने अपनी गर्दन टेढ़ी कर स्कूल का नाम पढ़ना चाहा। टहनी पर टँगी नाम की तख्ती भी हवा से टेढ़ी हो गयी थी।



‘तो-मो-ए गा-कु-एन।’

तोत्तो-चान माँ से पूछना चाहती थी कि तोमोए का मतलब क्या होता है, तभी अचानक उसे एक चीज दिखी और उसे लगा जैसे वह सपना देख रही हो। वह बैठ गयी ताकि झाड़ियों के बीच से अच्छी तरह देख पाये। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

‘माँ, क्या वह सचमुच की रेलगाड़ी है? देखो, वहाँ स्कूल के मैदान में।’

स्कूल के कमरों की जगह रेलगाड़ी के छह बेकार डिब्बे काम में लाये जाते थे। तोत्तो-चान को लगा, ऐसा तो सपनों में ही होता होगा। रेलगाड़ी में स्कूल!

डिब्बों की खिड़कियाँ सूरज की प्रातःकालीन धूप में चमक रही थीं। लेकिन झाड़ियों के बीच से झाँकती गुलाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की की आँखें और भी अधिक चमक रही थीं।

क्षण-भर बाद ही तोत्तो-चान खुशी से चिल्लायी और रेलगाड़ी के डिब्बे की ओर भागी। भागते-भागते मुड़कर ही माँ से कहा, ‘आओ, जल्दी करो। बिना हिले-डुले खड़ी इस गाड़ी में हम झट से चढ़ जाते हैं।’

‘तुम अभी अन्दर नहीं जा सकती,’ माँ ने उसे रोकते हुए कहा। ‘ये कक्षाएँ हैं और तुम तो अभी स्कूल में दाखिल तक नहीं हुई हो। अगर सचमुच इस ट्रेन में चढ़ना चाहती हो तो तुम्हें हेडमास्टर जी के सामने कायदे से पेश आना होगा। अब हम उनसे मिलने जायेंगे। अगर सब कुछ ठीक रहा तो तुम इस स्कूल में आ सकोगी। समझी?’

तोत्तो-चान को तुरन्त ‘ट्रेन’ में न चढ़ पाने का दुःख तो हुआ, पर उसे लगा कि जैसा माँ कहती है, वैसा करना ही शायद अच्छा हो।

‘ठीक है’, उसने कहा। साथ ही जोड़ा, ‘यह स्कूल मुझे बहुत अच्छा लगा है।’ माँ ने कहना तो चाहा कि प्रश्न यह नहीं है कि तुम्हें स्कूल अच्छा लगता है या नहीं, बल्कि यह है कि हेडमास्टर जी को तुम अच्छी लगती हो या नहीं, पर उसने कुछ कहा नहीं। माँ ने उसका हाथ थाम लिया और वे हेडमास्टर जी के दफ्तर की ओर बढ़ने लगीं।

हेडमास्टर जी का दफ्तर रेलगाड़ी के डिब्बे में नहीं था। वह दाहिने हाथ की ओर एक मंजिले भवन में था। वहाँ पहुँचने के लिए सात अर्ध-गोलाकार पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़नी होती थीं।

तोत्तो-चान माँ से अपना हाथ छुड़ा कर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। अचानक वह रुकी और मुड़ी।

‘क्या हुआ?’ माँ ने पूछा, मन में भय था कि कहीं तोत्तो-चान ने स्कूल के बारे में अपना विचार न बदल लिया हो।

सबसे ऊपरी सीढ़ी पर खड़ी तोत्तो-चान गम्भीरता से फुसफुसायी, ‘जिनसे हम मिलने जा रहे हैं, वे जरूर स्टेशन मास्टर होंगे।’

माँ धीरज वाली थी। साथ ही, मजाक करना भी आता था। वह झुकी, अपना चेहरा तोत्तो-चान के चेहरे के पास ले गयी और फुसफुसायी, ‘क्यों?’

तोत्तो-चान ने धीरे से कहा, ‘तुमने कहा था कि वे हेडमास्टर हैं, पर अगर वे इन सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं तो वे स्टेशन मास्टर हुए न।’

माँ को मानना पड़ रहा था कि रेलगाड़ी के डिब्बों में स्कूल चलाना कुछ अनूठी बात थी, पर फिलहाल समझाने का समय नहीं था। माँ ने सिर्फ इतना ही कहा, ‘तुम उनसे ही क्यों नहीं पूछ लेती? पर..... तुम अपने डैडी के बारे में क्या सोचती हो? वे वायलिन बजाते हैं, और

उनके पास ढेरों वायलिन हैं, पर इससे अपना घर वायलिन की दुकान तो नहीं बन जाता। नहीं?’

‘हाँ, दुकान तो नहीं बन जाता अपना घर।’ तोत्तो-चान ने माँ का हाथ थामते हुए सहमति जतायी।

हेडमास्टर जी

जब माँ और तोत्तो-चान दफ्तर में घुसीं तो कुर्सी पर बैठे सज्जन उठ खड़े हुए।

उनके सिर पर बाल कम हो चले थे। कुछ दाँत भी गायब थे, पर चेहरा उनका स्वस्थ लगता था। बहुत लम्बे भी नहीं थे वे सज्जन, पर उनके कन्धों व बांहों में मजबूती लगती थी।

जल्दी से झुककर तोत्तो-चान ने नमस्ते किया और तब उत्साह से पूछा, ‘आप स्कूल मास्टर हैं या स्टेशन मास्टर?’

माँ अकुलायी, पर इसके पहले कि वह कुछ सफाई देती, सज्जन हँस पड़े और बोले, ‘मैं इस स्कूल का हेडमास्टर हूँ।’

तोत्तो-चान की खुशी का ठिकाना न रहा। ‘मुझे बड़ी खुशी हुई’, उसने कहा, ‘क्योंकि मैं अब आपसे कुछ माँगना चाहती हूँ। मैं आपके स्कूल में पढ़ना चाहती हूँ।’

हेडमास्टर जी ने तोत्तो-चान को कुर्सी पर बैठने को कहा, फिर माँ की ओर मुड़कर वे बोले, ‘आप घर जा सकती हैं, मैं तोत्तो-चान से बात करना चाहता हूँ।’

तोत्तो-चान को थोड़ी-सी उलझन हुई, पर उसने सोच कर देखा तो लगा कि सामने बैठे सज्जन से बात करना उसे बुरा नहीं लगेगा।

‘तो मैं इसे आपके पास छोड़े जा रही हूँ।’ माँ ने कहा और दफ्तर से निकलकर दरवाजा बन्द कर दिया।

हेडमास्टर जी ने एक कुर्सी खींची और तोत्तो-चान की कुर्सी के सामने रखी। जब दोनों आमने-सामने बैठ गये तो उन्होंने कहा, ‘अब तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। कुछ भी, जो तुम बताना चाहो, बताओ।’

‘जो मुझे अच्छा लगे वह बताऊँ?’ तोत्तो-चान ने सोचा था कि वे प्रश्न करेंगे और उसे उत्तर देने होंगे, पर जब उससे यह कहा गया कि वह किसी भी चीज के बारे में बोल सकती है तो उसे बड़ा अच्छा लगा। वह तुरन्त बोलने लगी। उसने जो कुछ कहा, वह था तो काफी गड्ढमड्ढ पर वह अपनी पूरी ताकत से बोलती गयी। उसने हेडमास्टर जी को बताया कि जिस टेबल पर चढ़कर वे आये थे वह कितनी तेजी से चली थी, उसने बताया कि उसने टिकट बाबू से कहा था कि वे उससे टिकट न लें, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, उसने बताया कि उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका कितनी सुन्दर है, अबबील का घोंसला कैसा है, उसका भूरा कुत्ता रॉकी कैसे-कैसे करिश्मे दिखा सकता है, उसने बताया कि वह कैची मुँह में डालकर चलाया करती थी, पर उसकी शिक्षिका ने उसे ऐसा करने से मना किया था, क्योंकि उन्हें डर था कहीं तोत्तो-चान की जीभ न कट जाये, पर वह फिर भी वैसा करती रही, उसने बताया कि वह नाक कैसे सिनक लेती है, क्योंकि उसकी बहती नाक अगर माँ देख लेती है तो उसे डाँट लगाती है, उसने बताया कि पापा कितने अच्छे तैराक हैं, और तो और वे गोता भी लगा सकते हैं। वह लगातार बोलती गयी। हेडमास्टर जी कभी हँसते, कभी सिर हिलाते और कहते, ‘अच्छा फिर?’ तोत्तो-चान इतनी खुश थी कि वह आगे बोलती जाती। बोलते-बोलते आखिर उसके पास बोलने को कुछ भी नहीं बचा। अब उसका मुँह बन्द था, वह अपने दिमाग पर जोर डाल रही थी। सोच रही थी कि आगे क्या कहें?

‘मुझे और कुछ बताने को तुम्हारे पास क्या कुछ भी नहीं है?’ हेडमास्टर जी ने पूछा।

ऐसे में चुप रहना कितने शर्म की बात है, तोत्तो-चान ने सोचा। कितना अच्छा मौका है। क्या वह किसी भी चीज के बारे में और कुछ भी नहीं बता सकती? उसने मन ही मन सोचा, अचानक उसे कुछ सूझा।

हाँ, वह अपनी फ्रॉक के बारे में बतायेगी जो उसने पहन रखी थी। वैसे उसके ज्यादातर कपड़े माँ खुद ही सीती थी, पर यह फ्रॉक दुकान से खरीदी हुई थी। जब भी वह दोपहर के बाद स्कूल से घर लौटती थी तो अक्सर उसके कपड़े फटे होते थे। माँ को समझ ही नहीं आता कि वे ऐसे कैसे फटे होंगे। उसने हेडमास्टर को बताया कि ऐसा कैसे हो जाता था। असल में उसके कपड़े इसलिए फटते थे क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में झाड़ियों के बीच में से घुसती थी। साथ ही, वह खाली जमीन के चारों ओर लगे कँटीले तारों के नीचे से भी घुसती थी। इसलिए आज सुबह जब तैयार होने की बारी आयी तो माँ की सिली हुई सारी फ्रॉकें फटी निकलीं और उसे यह खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी। फ्रॉक पर लाल और सलेटी रंग के चेक बने थे, कपड़ा जर्सी का है। फ्रॉक इतनी बुरी भी नहीं है, पर माँ को लगता है कि कालर पर कढ़े लाल फूल फूहड़ हैं। ‘माँ को कालर पसन्द नहीं है,’ तोत्तो-चान ने कालर उठाकर हेडमास्टर जी को दिखाया।

लेकिन इसके बाद खूब सोचने पर भी तोत्तो-चान को कुछ और न सूझा। उसे इस बात से कुछ दुःख हुआ, लेकिन तभी हेडमास्टर जी उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना प्यार भरा बड़ा-सा हाथ उसके सिर पर रखा और कहा, ‘अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो।’

ठीक ये ही शब्द थे उनके। और उस समय तोत्तो-चान को लगा कि वह जीवन में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिली है जो उसे सच में अच्छा लगता हो। असल में इससे पहले किसी ने उसे इतनी देर बोलते नहीं सुना था। और तो और, उसे सुनते समय हेडमास्टर जी ने एक बार भी जम्हाई नहीं ली थी, न ही उनके चेहरे पर अरुचि का भाव आया था। शुरू से अन्त तक उन्हें सुनना उतना ही अच्छा लगा था, जितना कि उसे बोलना।

इस दिन से पहले या उसके बाद किसी वयस्क ने तोत्तो-चान की बात इतने लम्बे समय तक नहीं सुनी। और पिछली शिक्षिका को यह जानकर भी आश्चर्य होता कि एक सात साल की लड़की लगातार चार घंटे बोलने का मसाला भी जुटा सकती है।

हेडमास्टर जी के सामने वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही थी। वह बहुत खुश थी। वह हमेशा-हमेशा के लिए उनके साथ ही रहना चाहती थी।

ये भावनाएँ थीं तोत्तो-चान की उस पहले दिन हेडमास्टर सोसाकु कोबायाशी के बारे में। सौभाग्य से हेडमास्टर जी की भावनाएँ भी उसके प्रति ठीक ऐसी ही थीं।

दोपहर का भोजन

अब हेडमास्टर जी तोत्तो-चान को वह जगह दिखाने ले गये जहाँ बच्चे दोपहर का खाना खाते थे। 'हम ट्रेन में नहीं खाते,' उन्होंने समझाया, 'बल्कि सभागार में खाते हैं।' सभागार उन सीढ़ियों के ऊपर था जिन्हें चढ़कर तोत्तो-चान पहले आयी थी। जब वे वहाँ पहुँचे थे, बच्चे हल्ला करते हुए मेज व कुर्सियाँ उठा-खिसका कर उन्हें एक गोल घेरे में लगा रहे थे। वे सभागार के कोने में खड़े बच्चों को देखते रहे। तोत्तो-चान ने हेडमास्टर जी के जैकेट का किनारा खींचा और पूछा, 'बाकी बच्चे कहाँ हैं?'

'बस इतने ही हैं, जितने यहाँ मौजूद हैं।' उन्होंने उत्तर दिया।

'बस इतने ही?'' तोत्तो-चान को विश्वास नहीं हुआ। उसके पिछले स्कूल की एक कक्षा में जितने बच्चे थे, केवल उतने बच्चे मौजूद थे।



‘आपका मतलब है कि पूरे स्कूल में करीब पचास ही बच्चे हैं?’

‘हाँ, बस इतने ही।’ हेडमास्टर जी ने कहा।

यहाँ पहले वाले स्कूल से हर चीज अलग है, तोत्तो-चान सोचने लगी।

जब सारे बच्चे बैठ गये तो हेडमास्टर जी ने जानना चाहा कि हरएक बच्चा खाने में समुद्र से और कुछ पहाड़ से लाया है या नहीं।

‘हाँ जी।’ बच्चों ने अपने-अपने डिब्बे खोलते हुए एक स्वर में कहा।

‘जरा देखें तो क्या-क्या लाये हो तुम लोग’, हेडमास्टर जी ने मेजों के घेरे में घूमते हुए कहा। वे हरएक बच्चे के डिब्बे में झाँक रहे थे, और बच्चे खुशी से किलकारियाँ मार रहे थे।

‘वाह, क्या मजा है’, तोत्तो-चान ने सोचा, ‘पर ‘कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से’ का क्या मतलब होगा।’ कितना अलग है यह स्कूल, पर है अच्छा। उसे तो इससे पहले पता ही न था कि स्कूल में दोपहर का खाना भी इतने आनन्द की बात हो सकती थी।

हेडमास्टर जी हर मेज पर रुक कर डिब्बों में झाँक रहे थे और दोपहर की हल्की धूप उनके कन्धों को नहला रही थी।

तोत्तो-चान का स्कूल जाना

हेडमास्टर के यह कहने के बाद से ही कि ‘अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो’ तोत्तो-चान बेसब्री से अगले दिन का इन्तजार कर रही थी। इस सप्ताह से उसने कभी किसी दिन का इन्तजार नहीं किया था। अक्सर माँ को उसे सुबह स्कूल के लिए बिस्तर छुड़वाने में भी परेशानी होती थी, पर उस दिन वह दूसरों से पहले उठ कर तैयार हो गयी और अपना बस्ता पीठ पर बाँधे इन्तजार करने लगी।

माँ को तो बहुत कुछ करना था। तोत्तो-चान को नाश्ता देकर वह उसका लंच-बॉक्स बनाने में जुट गयी। उसमें ‘कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से’ भी तो डालना था। माँ ने रेलगाड़ी के पास को एक प्लास्टिक की थैली में डाला और एक डोरी से उसे तोत्तो-चान के गले में लटका दिया ताकि वह खो न जाय।

‘अच्छी लड़की बनना’।

‘बिल्कुल’, तोत्तो-चान ने जूते पहने और सामने का दरवाजा खोला। तब वह मुड़ी और शिष्टता से झुककर बोली, ‘अच्छा, गुड-बाय।’

तोत्तो-चान को यों निकलते देख माँ की आँखें बरबस भर आयीं। कितना कठिन था यह मानना कि उसकी चुलबुली बिटिया, जो आज इतनी खुशी से इस स्कूल में जा रही है, हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी। उसने दिल से प्रार्थना की-इस बार सब शुभ हो।

- तेत्सुको कुरोयानागी

तेत्सुको कुरोयानागी जापानी लेखिका हैं। इनका जन्म टोकियो में हुआ था। इनके पिता एक सम्मानित वायलिन वादक थे। इन्होंने टोकियो कालेज से ग्रेजुएशन किया था। इनकी पुस्तक 'तोत्तोचान' विश्व-प्रसिद्ध कृति है, जिसका दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। यहाँ दिया गया पाठ इस पुस्तक का ही एक अंश है।

कायदा = नियम, ढंग, विधान। फुसफुसाना = धीमी आवाज में बोलना। वायलिन = एक तरह का वाद्ययन्त्र। गड्ढमड्ढ = अनाप-सनाप, मिला हुआ। अबाबील = एक छोटी चिड़िया, जो प्रायः खंडहरों में घोंसला बनाती है। करिश्मा = करामात, चमत्कार। जम्हाई = उबासी, (ऊब, आलस्य आदि से होने वाली शरीर की एक सहज क्रिया)। बेसब्री = अधीरता।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. नये स्कूल का गेट कैसा था और गेट को देखते ही तोत्तो-चान ने क्या कहा?
2. तोत्तो-चान को वह स्कूल अच्छा क्यों लगा?
3. तोत्तो-चान ने स्कूल के हेडमास्टर को स्टेशन मास्टर क्यों कहा?
4. तोत्तो-चान ने हेडमास्टर से अपनी फ्रॉक के बारे में क्या-क्या बताया?

5.आपके विचार में 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' का क्या मतलब हो सकता है?

6.तोत्तो-चान को स्कूल जाते देख माँ की आँखें क्यों भर आयीं ?

7.निम्नलिखित प्रश्न को पढ़िए और सही विकल्प पर सही का चिह्न (□) लगाइए-

तोत्तो-चान ने स्कूल को अच्छा कहा, क्योंकि-

(क)स्कूल रेलगाड़ी के डिब्बे में चलता था।

(ख)हेडमास्टर ने उसकी पूरी बात सुनी।

(ग)दोपहर के भोजन के समय सभी बच्चे मिल-बाँटकर भोजन करते थे।

(घ)उपर्युक्त सभी।

विचार और कल्पना

आप जब पहली बार स्कूल में पढ़ने आये थे तो कैसा महसूस हुआ था? अपने अनुभव को लिखकर अपने अध्यापक को दिखाइए।

कुछ करने को

1. स्कूल के मुखिया को हेडमास्टर कहते हैं और स्टेशन के मुखिया को स्टेशन मास्टर। नीचे लिखे कार्यस्थलों के मुखिया को क्या कहते हैं-

पोस्ट ऑफिस, बैंक, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पुस्तकालय, कॉलेज, कारखाना।

2. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर अपने स्कूल के विषय में कुछ वाक्य लिखिए -

(क) स्कूल का भवन(ख) तुम्हारी कक्षा

(ग) हैंडपम्प(घ) हेडमास्टर

(ङ) शिक्षक-शिक्षिका(च) खेल का मैदान

(छ) दोपहर का भोजन(ज) पढ़ना-लिखना

- अब लिखिए कि आप इनमें क्या-क्या बदलाव करना चाहते हैं।

भाषा की बात

1. पाठ को पढ़ते हुए आपने कई विराम चिह्न देखे होंगे। विरामचिह्नों के बिना वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उपयुक्त विरामचिह्न लगाइए-

चिड़ीमार की बीबी ने डरे हुए तोते को हाथ में लिया और उसे सहलाते हुए बोली कितना छोटा तोता है इसका तो एक निवाला भी नहीं होगा इसे मारना फिजूल है हीरामन ने कहा माँ मुझे मत मारो राजा को बेच दो तुम्हें बहुत पैसे मिलेंगे। तोते को बोलते हुए सुनकर वे हक्के-बक्के रह गये थोड़ी देर बाद अचरज से उबरे तो पूछा कि वे उसकी कितनी कीमत माँगे हीरामन ने कहा यह मुझपर छोड़ दो राजा कीमत पूछे तो कहना कि तोता अपनी कीमत खुद बतायेगा।

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए-

अचानक, सचमुच, बेकार, दफ्तर, गम्भीरता।

3. अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं- एकार्थी और अनेकार्थी।

जिन शब्दों का प्रयोग सामान्य रूप में एक ही अर्थ के लिए होता है, उन्हें एकार्थी कहते हैं, जैसे- छत, पेन्सिल, पीला।

कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी कहते हैं, जैसे- अम्बर। अम्बर के दो अर्थ होते हैं- आकाश और वस्त्र।

नीचे दिये गये शब्द-समूह में से एकार्थी तथा अनेकार्थी शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए-

दरवाजा, दवात, खिड़की, अंक, पत्र, मान, सोना, दल, कुल, मेज, नाना, कुर्सी, पद, वर्ण, वर, कक्षा, पक्ष।

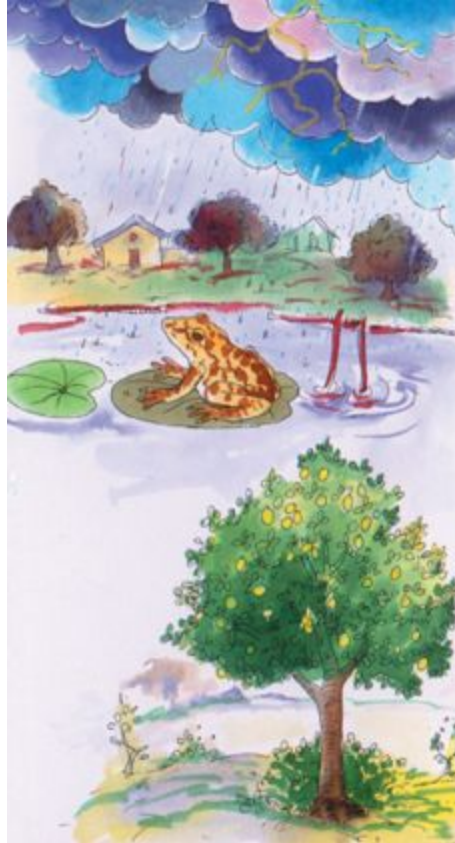
4. नीचे लिखे शब्दों में से भाववाचक संज्ञा शब्दों को अलग छाँटकर लिखिए-

स्कूल, अच्छाई, चमक, कोमलता, थकावट, बुराई, दरवाजा, गुलाबीपन, कठोरता, सहजता, सहनशील, समानता, भावुकता।



मेघ बजे, फूले कदम्ब

(प्रस्तुत कविता में कवि ने बादलों की उमड़-घुमड़ एवं उनकी ध्वनि का स्वभाविक चित्रण किया है। दूसरी कविता में सावन में फैली हरियाली तथा फूले हुए कदम्ब वृक्ष का सजीव चित्रण है।)



मेघ बजे

धिन-धिन-धा धमक-धमक

मेघ बजे

दामिनि यह गयी दमक

मेघ बजे

दादुर का कंठ खुला

मेघ बजे

धरती का हृदय धुला

मेघ बजे

पंक बना हरिचन्दन

मेघ बजे

हल का है अभिनन्दन

मेघ बजे।

धिन-धिन-धा....

फूले कदम्ब

फूले कदम्ब

टहनी-टहनी में कन्दुक सम झूले कदम्ब

फूले कदम्ब।

सावन बीता

बादल का कोप नहीं रीता

जाने कब से वो बरस रहा

ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा

मन कहता है, छू ले कदम्ब

फूले कदम्ब

फूले कदम्ब।

-नागार्जुन

इस कविता के रचयिता श्री 'नागार्जुन' हैं। इनका पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' है। इनका जन्म सन् 1910 ई० में बिहार के दरभंगा जिले में हुआ था। इनकी रचनाओं में त्रस्त और पीड़ित मानव के प्रति विशेष सहानुभूति है। 'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखों वाली' इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। 05 नवम्बर सन् 1998 में इनका देहावसान हो गया।

इसे भी जानें

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची की मान्यताप्राप्त भाषाएँ- असमिया, बंगला,

बोड़ो, डोगरी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी,

मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिन्धी, तमिल, तेलगू, उर्दू।

दामिनी = बिजली। दादुर = मेढक। पंक = कीचड़। हरिचन्दन = पीला चन्दन, केशर।

अभिनन्दन = स्वागत। कन्दुक = गेंद। रीता = खाली होना, समाप्त होना। नाहक = व्यर्थ।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. मेघ बजने की ध्वनि कैसी होती है?

2. "जाने कब से तू तरस रहा" पंक्ति में 'तू' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

3. कवि ने कदम्ब के फूलों की तुलना 'कन्दुक' से क्यों की है?

4. इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पंक बना हरिचन्दन

हल का है अभिनन्दन

(ख) बादल का कोप नहीं रीता

जाने कब से वो बरस रहा

ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा

विचार और कल्पना

1. निम्नांकित कविता को ध्यान से पढ़िए-

बिजली चमकी कड़-कड़-कड़।

बादल गरजा गड़-गड़-गड़।

पानी बरसा तड़-तड़-तड़।

नानी बोली पढ़-पढ़-पढ़।

यह कविता आपके ही एक साथी द्वारा लिखी गयी है। आप भी कविता लिख सकते हैं। नीचे लिखे शब्दों की मदद से ऐसी ही एक कविता की रचना कीजिए-

धमक, चमक, दमक, महक।

2. निम्नांकित ऋतुओं में आप अपने आस-पास क्या-क्या परिवर्तन देखते हैं-

(क) बरसात में (ख) जाड़े में (ग) गर्मी में

कुछ करने को



1.चित्र देखिए और बताइए कि वर्षा ऋतु में गाँव में रहने वालों के समक्ष क्या-क्या समस्याएँ हो सकती हैं और उनके निदान के लिए क्या उपाय हो सकते हैं।

2.आपने कविता में पढ़ा-धिन-धिन- धा, धमक-धमक मेघ बजे। यह तबले का एक बोल है, इसी तरह अन्य वाद्ययंत्रों के भी बोल होते हैं। पता लगाएँ- ढोल, सितार, बाँसुरी, हारमोनियम के कौन-कौन से बोल होते हैं।

भाषा की बात

1.निम्नांकित शब्दों के तुकान्त शब्द कविता से छाँटकर लिखिए-

खुला, हरिचन्दन, दमक, रीता, बरस, झूले।

2.कविता की निम्नांकित पंक्तियों को पढ़िए-

‘ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा’

इनमें ‘नाहक’ शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द अरबी भाषा का है, जिसमें ‘ना’ उपसर्ग लगा हुआ है। ‘ना’ उपसर्ग रहित (नहीं) के अर्थ में प्रयोग होता है। इसी तरह के और भी शब्द हैं जैसे- नासमझ.....। आप इस प्रकार के चार शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए-

इसे भी जानें

भारतीय पंचाग के अनुसार हिन्दी महीने और ऋतुएँ निम्नलिखित हैं-

मास	ऋतु	मास	ऋतु
1.चैत्र	वसंत	7.आश्विन	शरद्
2.वैशाख		8.कार्तिक	
3.ज्येष्ठ	ग्रीष्म	9.मार्गशीर्ष	हेमंत
4.आषाढ़		10.पौष	
5.श्रावण	वर्षा	11.माघ	शिशिर
6.भाद्रपद		12.फाल्गुन	



सत्साहस

(संसार में कोई भी कार्य बिना साहस के नहीं होता किन्तु प्रत्येक साहस को सच्चे साहस की संज्ञा नहीं दी जा सकती। साहस की विभिन्न श्रेणियाँ होती हैं जिन्हें इस निबन्ध में समझाया गया है।)

संसार के काम-बड़े अथवा छोटे-साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी थे। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में जागरूक हैं। आल्प्स पर्वत के विशाल शिखरों को पार करने वाले हनीवल और नेपोलियन का नाम वीरवरो के नामों के साथ केवल उनके अतुलनीय साहस के कारण ही लिया जाता है। यह साहस का ही प्रभाव था जिसने तैमूर, बाबर, शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीत सिंह और संग्राम सिंह जैसे सामान्य व्यक्तियों को कुछ से कुछ कर दिया।

सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं। सूरवंश के क्रूरकर्मा बादशाह मुहम्मद आदिल पर, भरे दरबार में कितने ही सिरों और धड़ों को धरणी पर गिरा कर, एक मुसलमान युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था। कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर जब्त कर ली थी। इसी से उक्त युवक ने इतने साहस का काम किया। युवक मारा गया। उसके साहस और उसकी निर्भीकता का कुछ ठिकाना नहीं है परन्तु क्रोधान्ध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का साहस चोर और डाकू भी कभी-कभी कर गुजरते हैं। राजा-महाराजा भी अपनी कुत्सित इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं। ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है।

मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है। वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है। इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परन्तु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पायी जाती है।

अकबर बादशाह के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आये। अकबर ने उनसे पूछा कि तुम क्या काम करते हो? वे बोले, "जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर?" बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी। राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मर कर ठंडे हो गये। इस प्रकार का साहस निःसन्देह प्रशंसनीय है, परन्तु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं धन, मान आदि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है; वे हैं- हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है 'कर्तव्यपरायणता'। कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। इस विचार से शून्य होने पर कोई भी मनुष्य, फिर चाहे उसके और विचार कैसे ही उन्नत क्यों न हों, मानव जाति की कुछ भी भलाई नहीं कर सकता। अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकारपरायण या समाज-हित-चिन्तक नहीं कहा जा सकता। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार--नहीं-नहीं-अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा का --- उपकार नहीं कर सकता। कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

उच्चकोटि के साहस के लिए कर्तव्यपरायण बनना परमावश्यक है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया। मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया। थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिल्कुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा। स्वदेश-भक्ति ने उसे बतला दिया, 'यह समय ऐसा नहीं है कि तू अपने घरेलू झगड़ों को याद करे। उठ, और अपना कर्तव्य पालन कर।'।

इस विचार ने उसे इतना मतवाला कर दिया कि वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरन्त चल पड़ा। देश भर में मरहठे फैले हुए थे। उनके बीच में होकर निकल जाना कठिन काम था, परन्तु बुद्धन के साहस के सामने उस कठिनता को मस्तक झुकाना पड़ा। एक दिन अपने मुट्ठी भर साथियों को लिये वह मरहठों के बीच से होकर निकल ही गया। इस तरह निकल जाने से उसके बहुत से साथी रणक्षेत्र रूपी अग्नि-कुंड में आहुत हो गये। जीवित बचे हुआओं में बुद्धन सिंह भी था। वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा के लिए पहुँच गया।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गये, परन्तु आज तक वीर जाति राजपूत अपने कर्तव्यपरायण वीर बुद्धन की वीरता को सम्मानपूर्वक याद करते हैं। राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं। मौरूदा में आज भी एक स्तम्भ उन वीरों की यादगार में खड़ा हुआ, इतिहासवेत्ताओं के हृदय को उत्साहित करता है।

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं, परन्तु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले-यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदान्ध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति, और परिवार वालों के ही लिए नहीं, किन्तु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह हमारे संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेश मात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में आया करता है। देश, काल और कर्तव्य का विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

-गणेशशंकर 'विद्यार्थी'

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का जन्म सन् 1890 ई० में प्रयाग में हुआ था। ये पत्रकार थे तथा उर्दू-फारसी भली-भाँति जानते थे। इनकी शिक्षा ग्वालियर में हुई। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ये हाईस्कूल (एंट्रेंस) तक ही पढ़ सके किन्तु स्वतन्त्र अध्ययन में लगे रहे। ये कुछ दिन 'सरस्वती' पत्रिका फिर 'अभ्युदय' पत्र में कार्य करते रहे। बाद में ये 'प्रताप' साप्ताहिक के सम्पादक हुए। अपनी अतुल देशभक्ति एवं आत्मोत्सर्ग के लिए ये सदैव याद किये जाते हैं। इनकी भाषा सशक्त एवं शैली ओजपूर्ण, गाम्भीर्य एवं वक्रता-प्रधान है। इनका निधन सन् 1931 ई० में हुआ।

विशाल = बड़ा। वीरवर = श्रेष्ठ वीर। अभीष्ट = वांछित, चाहा हुआ। धरणी = पृथ्वी। कुत्सित = बुरा। आभा = चमक। सर्वोच्च = सबसे ऊँचा। अनभिज्ञ = अनजान। मुट्ठी भर = थोड़े से। रणक्षेत्र = युद्ध भूमि। आत्मोत्सर्ग = स्वयं को बलिदान करना। मदान्ध = मद से अन्धा। सहायतार्थ = सहायता के लिए।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1. लेखक ने साहस की कितनी श्रेणियाँ बतायी हैं तथा उनकी क्या विशेषताएँ हैं ?
2. बुद्धन सिंह द्वारा सत्साहस का कौन-सा कार्य किया गया?
3. सत्साहसी व्यक्ति में कौन-सी गुप्तशक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरों को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक दे सकता है ?

4. लेखक के अनुसार सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है, क्यों?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता।

(ख) कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए।

(ग) कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

विचार और कल्पना



1. चित्र को देखकर आपके मन में क्या विचार आ रहे हैं, उसे लिखिए।

2. आपके विचार से किसी डूबते हुए को बचाना किस प्रकार का साहस है ?

कुछ करने को

1.लेखक ने साहस की विभिन्न श्रेणियाँ बतायी हैं। आपके जीवन में भी ऐसी कोई घटना घटी होगी अथवा अपने आस-पास व परिवार के सदस्यों से सुनी होगी। जिसमें आपने या आप के आस-पास व परिवार के लोगों ने साहस का परिचय दिया होगा। उसका वर्णन कीजिए।

2.साहसी व्यक्तियों तथा बालकों की कहानियों को समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं से काटकर एकत्र कीजिए और पाठ के आधार पर उनके साहस का वर्गीकरण कीजिए।

3.प्रत्येक पाठ के साथ ही लेखकों व उनकी कृतियों का परिचय संक्षेप में दिया गया है, नीचे दिये गये समूह 'क' के लेखकों के सम्मुख उनकी कृतियाँ समूह 'ख' से चुनकर अपनी पुस्तिका में लिखिए-

‘क’ ‘ख’

जयशंकर प्रसाद प्रेम वाटिका

रामावतार त्यागी नदी के साथ

तेत्सुको कुरोयानागी नया खून

रसखान युगधारा

रमेश उपाध्याय तोत्तोचान

नागार्जुन कामायनी

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रेम-माधुरी

भाषा की बात

1. 'बलिष्ठता' शब्द बलिष्ठता(प्रत्यय) से बना है। 'बलिष्ठ' शब्द विशेषण और 'बलिष्ठता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। इसी प्रकार निम्नलिखित विशेषण शब्दों के साथ 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाइए-

पवित्र, उदार, दृढ़, अनभिज्ञ, कायर, मदान्ध।

2- निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) रक्त उबल पड़ना

(ख) मस्तक झुकाना

(ग) जान पर खेल जाना

(घ) फटकने न देना

(ङ) अवसर की राह देखना

3- 'अग्निकुंड' तथा 'स्वदेश-भक्ति' सामासिक पद हैं। इनका विग्रह होगा- 'अग्नि का कुंड' तथा 'स्वदेश के लिए भक्ति'। इनमें क्रमशः- सम्बन्ध कारक तथा सम्प्रदान कारक का चिह्न लगा हुआ है। समास होने पर उनका लोप हो जाता है। नीचे लिखे शब्दों का समास-विग्रह कीजिए-

कर्तव्यपरायण, क्रोधान्ध, इतिहास-वेत्ता, समाज-हित-चिन्तक, कर्तव्य-ज्ञान-शून्य

4. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को बहुवचन में बदलकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

माला, झरना, रोटी, आँख, कपड़ा।

इसे भी जानें

एडमंड हिलेरी तथा शेरपा तेनसिंह एवरेस्ट चोटी पर चढ़ने वाले प्रथम व्यक्ति थे।



कलम आज उनकी जय बोल

(प्रस्तुत कविता में कवि ने उन असंख्य शहीदों का गुणगान किया है, जिन्होंने अपने त्याग और बलिदान से देश में नयी चेतना जगायी है।)



कलम, आज उनकी जय बोल,
जला अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकायी जिसने चिनगारी,
जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
पी कर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ
जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।



- रामधारी सिंह ”दिनकर“

प्रस्तुत कविता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ द्वारा लिखी गयी है। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 ई0 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। ‘रेणुका’, ‘हुंकार’, ‘रसवन्ती’, ‘कुरुक्षेत्र’, ‘परशुराम की प्रतीक्षा’ आदि उनकी महत्त्वपूर्ण काव्य रचनाएँ हैं। इन कविताओं में देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना झलकती है। इनका देहावसान सन् 1974 ई0 में हो गया।

जय बोलना = विजय का गान करना, प्रशंसा के गीत गाना। जला अस्थियाँ = हड्डियाँ जलाकर अर्थात् अपना सबकुछ बलिदान कर। छिटकायी जिसने चिनगारी = जिसने लोगों में क्रान्ति की भावना या नयी चेतना फैलायी। अगणित लघुदीप = असंख्य या अनगिनत छोटे दीप। यहाँ कवि ने बलिदानी वीरों के लिए लघुदीप का प्रयोग किया है। माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल = यहाँ ‘स्नेह’ के दो अर्थ हैं- दीप के अर्थ में तेल और शहीदों के अर्थ में ‘प्रेम’। दीप जलते हुए समाप्त हो जाता है पर किसी से तेल की याचना नहीं करता उसी प्रकार देश की आन पर न जाने कितने वीर शहीद हो गये पर उन्होंने किसी से स्नेह और सम्मान की माँग नहीं की। सिंहनाद = ललकार, हुंकार।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि अपनी लेखनी से किसकी जय बोलने के लिए कह रहा है?

(क) देश के नेताओं की।

(ख)देश के महापुरुषों की।

(ग)देश के शहीदों की।

2.जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी।

‘अस्थियाँ जलाकर चिनगारी छिटकाने’ का क्या भाव है, स्पष्ट कीजिए।

3.निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आये हैं, लिखिए-

(क)जो बिना किसी प्रतिफल के कर्तव्य की पुण्य वेदी पर न्योछावर हो गये।

(ख)देश की आन पर मर मिटे पर उन लोगों ने किसी से स्नेह की माँग नहीं की।

4.निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पीकर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ।

(ख)जिनके सिंहनाद से सहमी

धरती रही अभी तक डोल ।

5.कविता की एक पंक्ति है ‘कलम, आज उनकी जय बोल’। इस पंक्ति को गद्य रूप में इस तरह से लिखा जा सकता है- ‘कलम, आज उनका जयगान कर’

नीचे दी गयी पंक्तियों को गद्य रूप में लिखिए-

जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी

जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर

लिये बिना गरदन का मोल। कलम, आज उनकी जय बोल।

विचार और कल्पना

1. पाठ में कलम देशभक्तों का जयघोष कर रही है। कलम का अर्थ है-देश के रचनाकार अपनी रचनाओं से उनका अभिवादन करते हैं। देशभक्त तो सर्वोपरि होता है। उसका जयघोष केवल राष्ट्रवासी ही नहीं करता, बल्कि पूरी प्रकृति भी उसके लिए मंगल गीत गाती है। आप बताइए कि बादल और पुष्प किस रूप में उनका जयगान करेंगे।

2. क्या आपके आस-पास कोई ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने देश की सेवा में अपनी जान न्योछावर की है ? अपने बड़ों से पूछकर उनके बारे में लिखिए।

कुछ करने को

‘सुभाषचन्द्र बोस’ का उपनाम ‘नेता जी’ है। नीचे कुछ महापुरुषों के उपनाम दिये जा रहे हैं, उनका पूरा नाम लिखिए-

बापू, लौहपुरुष, देशबन्धु, महामना, लोकमान्य, मिसाइल मैन।

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) का मिलान कीजिए-

विशेषण शब्द विशेष्य शब्द

सहमी वेदी

लाल दीप

पुण्य धरती

लघु शिखाएँ

2. दिये गये शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

धरती, कलम, दीप, मँह।

पढ़ने के लिए-

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक। - माखनलाल चतुर्वेदी

सुभाषचन्द्र बोस के उद्बोधन

प्रस्तुत पाठ में सुभाष बाबू के टोकियो रेडियो से प्रथम प्रसारण आजाद हिन्द फौज के पुनर्गठन तथा आजाद हिन्द फौज की मान्यता मिलने के अवसर पर उनके द्वारा दिये गये सम्बोधन के महत्त्वपूर्ण अंश दिये गये हैं।

सुभाषचन्द्र बोस सच्चे देशभक्त थे। उनका केवल एक ही लक्ष्य था। भारत से अंग्रेजों को निकाल बाहर करना और अपने देश तथा देशवासियों की गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर स्वाधीनता का उपहार देना।

सुभाषचन्द्र बोस नेता जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने बर्मा, म्यांमार, जापान आदि देशों में रहने वाले भारतीयों को एकत्र कर आजाद हिन्द फौज की स्थापना की, आजादी का बिगुल फूँका। उन्होंने विभिन्न अवसरों पर अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा लोगों को प्रेरणा प्रदान की और संघर्ष करने का आह्वान किया।

21 जून सन् 1943 ई० को टोकियो रेडियो से प्रथम प्रसारण।

ष्व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं साम्राज्य बनते और बिगड़ते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य को सदैव के लिए जाना होगा। हमारी स्वतंत्रता किसी प्रकार का भी समझौता नहीं चाहती है। हमें स्वतंत्रता तब ही प्राप्त होगी जब ब्रिटिश और उसके समर्थक भारत के भले के लिए भारत को छोड़ देंगे। जो वास्तव में हमारी आजादी चाहते हैं उन्हें लड़ना चाहिए। इसके लिए उन्हें अपना रक्त भी देना होगा। देशवासियों और मित्रों आइए हम स्वतंत्रता के

लिए संघर्ष करें। भारत की सीमाओं के अन्दर और बाहर अपनी पूरी ताकत के साथ। हमें तब तक जंग जारी रखनी है। जब तक ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट नहीं हो जाता है। इसकी राख भारत से बाहर नहीं चली जाती है। इसके पश्चात् ही एक स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्र बनेगा।

आजाद हिन्द फौज के पुनर्गठन के अवसर पर-

भारत की मुक्तिवाहिनी के सैनिको! भारत की आजादी के लिए आज से मैंने इस फौज का सर्वोच्च नेतृत्व ग्रहण कर लिया है और यह मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व की बात है। किसी भी भारतीय के लिए इससे बढ़कर और कोई भी सम्मान नहीं हो सकता कि वह भारत को स्वतंत्र करने वाली फौज का सेनापति हो। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हर हालत में मुझे इस जिम्मेदारी को वहन करने की पूरी शक्ति दे। मैं अपने को 38 करोड़ भारतवासियों का एक तुच्छ सेवक समझता हूँ। मैं भारतीयों के हितों को अपने हाथों में सुरक्षित रखते हुए अपने कर्तव्य को पूरा करूँगा। देश में पूर्ण स्वतंत्रता स्थापित करने के लिए एक स्थायी सेना का निर्माण करना है, जो भारत में प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता की गारण्टी करेगी और यह कार्य आजाद हिन्द फौज को ही करना है। हमारा एक ही नारा है और एक ही लक्ष्य है- वह है, भारत की आजादी और उसके लिए करो या मरो की भावना। 38 करोड़ जनता को, जो संसार की आबादी का पाँचवा भाग है, अधिकार है कि वह आजाद हो और आज जब वे आजादी का मूल्य चुकाने के लिए तैयार हैं, तब इस पृथ्वी पर कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो हमारी आजादी के जन्मसिद्ध अधिकार को रोक सके।

साथियो! अफसरो नागरिको! आपकी निरन्तर अटूट भक्ति ही भारत को स्वतन्त्र कराने में आजाद हिन्द फौज को अपना साधन बना सकेगी। हमारी विजय निश्चित है।

“दिल्ली चलो और इस दृढ़ भावना के साथ चलो कि हम वाइसराय-भवन पर तिरंगा झण्डा फहराकर लाल किले में परेड करेंगे।”

आजाद हिन्द फौज की मान्यता मिलने पर-

“मेरा पहला स्वप्न था अपनी फौज हो, वह पूरा हो गया है। दूसरा स्वप्न ‘आजाद हिन्द फौज’ की सरकार बनाने का था, आज सरकार बन चुकी है। अब मेरा तीसरा और अन्तिम स्वप्न शेष है, स्वाधीनता प्राप्त कर अंग्रेजों को भारत से निकाल बाहर करने का।”



नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी सन् 1897 ई० को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। आपने देश की आजादी के लिए 22 अप्रैल सन् 1921 ई० को आई० ए० एस० (तत्कालीन आई० सी० एस०), भारत की सर्वोच्च प्रशासनिक सेवा में कार्य करने से इन्कार करते हुए त्याग-पत्र दे दिया था। महात्मा गांधी को ‘राष्ट्रपिता’ सर्वप्रथम आपने ही सम्बोधित किया था। ये इतिहास के उन चरित्रों में से हैं जिन्होंने दिल की गहराइयों से आजादी के सपने देखे थे।

ओजस्वी = जोश पैदा करने वाला, प्रभावी। आह्वान = पुकार। प्रभुसत्ता = ऐसा स्वामित्व जो किसी बाह्य अधिकार से मुक्त हो, पूर्णतः स्वतंत्र। मुक्तिवाहिनी = देश को स्वतन्त्र कराने वाली सेना। गारन्टी = सुनिश्चित करना।

प्रश्न - अभ्यास

पाठ से

1. नेता जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए किस तरह के संघर्ष की बात की है ?
2. नेता जी द्वारा ‘दिल्ली चलो’ का आह्वान क्यों किया गया ?
3. सुभाषचन्द्र बोस का एक मात्र लक्ष्य क्या था ?
4. नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के क्या-क्या सपने थे और प्राथमिकता के आधार पर उनका क्या क्रम था ? समूह ‘क’ से समूह ‘ख’ को मिलाइए-
‘क’ ‘ख’
आजाद हिन्द फौज की सरकार बनाना पहला स्वप्न
स्वाधीनता प्राप्त कर अंग्रेजों को बाहर निकालना दूसरा स्वप्न

अपनी फौज बनाना तीसरा स्वप्न

विचार और कल्पना

नीचे दी गयी महान विभूतियों को पहचानिए तथा उनकी प्रसिद्धि का कारण लिखिए।



कुछ करने को

1. सुभाषचन्द्र बोस के जीवन एवं संघर्षों से सम्बन्धित पुस्तक पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िए।

2. नेता जी ने एक नारा दिया था-‘तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।’ इसी प्रकार नीचे लिखे महापुरुषों द्वारा दिये गये एक-एक नारों को लिखिए-

महात्मा गांधी, बालगंगाधरतिलक, जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, भगत सिंह।

भाषा की बात

1. ‘साम्राज्य बनते और बिगड़ते हैं।’ इस वाक्य में दो विपरीतार्थक क्रियाएँ हैं। इसी प्रकार

विपरीतार्थक क्रियाओं की सहायता से पाँच वाक्य बनाइए।

2. निम्नलिखित गद्यांश में विराम-चिह्नों का प्रयोग कर लिखिए-

6 जुलाई सन् 1924 ई० को सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द रेडियो से अपने सम्बोधन में कहा था भारत की स्वाधीनता का अन्तिम युद्ध प्रारम्भ हो चुका है राष्ट्रपिता भारत की मुक्ति के इस पवित्र युद्ध में हम आपका आशीर्वाद स्नेह और शुभकामना चाहते हैं सचमुच कितना महान व्यक्ति विशाल हृदय कितनी दृढ़ शक्ति



जिसके हम मामा हैं

(प्रस्तुत पाठ हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा 'व्यंग्य' के अन्तर्गत दिया गया है। इसमें आज के राजनीतिज्ञों पर सटीक व्यंग्य किया गया है।)

एक सज्जन वाराणसी पहुँचे। स्टेशन पर उतरे ही थे कि एक लड़का दौड़ता आया।

‘मामाजी! मामाजी!’-- लड़के ने लपक कर चरण छुए।

वे पहचाने नहीं, बोले--‘तुम कौन?’

‘मैं मुन्ना। आप पहचाने नहीं मुझे?’

‘मुन्ना?’ वे सोचने लगे।

‘हाँ, मुन्ना। भूल गये आप मामाजी। खैर कोई बात नहीं इतने साल भी तो हो गये।’



‘तुम यहाँ कैसे?’

‘मैं आजकल यहीं हूँ।’

‘अच्छा!’

‘हाँ ं’

मामाजी अपने भानजे के साथ वाराणसी घूमने लगे। चलो कोई साथ तो मिला। कभी इस मन्दिर, कभी उस मन्दिर, फिर पहुँचे गंगा घाट। सोचा नहा लें।

‘मुन्ना नहा लें?’

‘जरूर नहाइए मामाजी। वाराणसी आये हैं और नहायें नहीं, यह कैसे हो सकता है।’



मामाजी ने गंगा में डुबकी लगायी। हर-हर गंगे। बाहर निकले तो सामान गायब, कपड़े गायब, लड़का भी गायब।

‘मुन्ना..... ए मुन्ना।’

मगर मुन्ना वहाँ हो तो मिले। तौलिया लपेट

कर खड़े हैं।

‘क्यों भाई साहब, आपने मुन्ना को देखा है?’

‘कौन मुन्ना?’

‘वही जिसके हम मामा हैं।’

‘मैं समझा नहीं।’

‘अरे हम जिसके मामा हैं वो मुन्ना।’

वे तौलिया लपेटे यहाँ से वहाँ दौड़ते रहे। मुन्ना नहीं मिला।

भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी यही स्थिति है मित्रों। चुनाव के मौसम

में कोई आता है और हमारे चरणों में गिर जाता है। मुझे नहीं पहचाना! मैं इस चुनाव का उम्मीदवार। होनेवाला एम0पी0। मुझे नहीं पहचाना। आप प्रजातन्त्र की गंगा में डुबकी लगाते हैं। बाहर निकलने पर आप देखते हैं कि वह शख्स जो कल आपके चरण छूता था, आपका वोट लेकर गायब हो गया। वोटों की पूरी पेटी लेकर भाग गया। समस्याओं के घाट पर हम तौलिया लपेटे खड़े हैं। सबसे पूछ रहे हैं। क्यों साहब वह कहीं आपको नजर आया? अरे वही जिसके हम वोटर हैं। वही जिसके हम मामा हैं। पाँच साल इसी तरह तौलिया लपेटे, घाट पर खड़े बीत जाते हैं।

- शरद जोशी

शरद जोशी का जन्म 21 मई सन् 1931 ई0 को उज्जैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था। जोशी जी हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं। समाज और राजनीति की गिरावट पर आपने गहरा प्रहार किया। जोशी जी की भाषा सीधी और सरल होती है। अपनी व्यंग्य रचनाओं के अन्त में वे तीखी चोट करते हैं। 'एक गधा उर्फ अलादाद खाँ' तथा 'अन्धों का हाथी' आपके नाटक हैं। 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'रहा किनारे देख', 'दूसरी सतह पर' इनके व्यंग्य-संग्रह हैं। आप का निधन 5 सितम्बर सन् 1991 ई0 को हुआ।

एम.पी. = मेम्बर आफ पार्लियामेंट, सांसद। शख्स = व्यक्ति, आदमी। नजर = दृष्टि।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. व्यंग्य में मामाजी और मुन्ना किसके-किसके लिए प्रयोग किया गया है ?
2. भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी कैसी स्थिति है ?

3. “बाहर निकले तो सामान भी गायब लड़का भी गायब” इस वाक्य की तुलना पाठ में आये किस वाक्य से की जा सकती है ?

4. “क्यों साहब वह कहीं आपको नजर आया” इस वाक्य से लेखक का क्या आशय है ?

विचार और कल्पना

1. यदि आपको वोट देने का अवसर प्राप्त होता है तो आप किस प्रकार के व्यक्ति को अपना वोट देना चाहेंगे? लिखिए।

2. अपने ग्राम प्रधान/ सभासद, विधायक (एम0 एल0 ए0), सांसद (एम0 पी0) का परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व और सामाजिक छवि के बारे में अपने विचार लिखिए।

कुछ करने को

प्रायः कुछ लोग चुनाव में किसी न किसी लोभ या दबाववश योग्य प्रत्याशी को अपना मत न देकर किसी अयोग्य प्रत्याशी को मतदान कर बैठते हैं, जिसका समाज पर बुरा असर पड़ता है। आप भी निकट भविष्य में अपने मत (वोट) का प्रयोग करेंगे। लोगों को प्रेरित करें कि वे किसी लोभ या दबाव में पड़कर अयोग्य प्रत्याशी को अपना समर्थन न दें।

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये वाक्यों के रूप कोष्ठक में दिये गये निर्देशों के अनुसार बदलिए-

(क) मैं आजकल यहीं हूँ। (नकारात्मक)

(ख) वे तौलिया लपेटे यहाँ से वहाँ दौड़ते रहे। (प्रश्नवाचक)

(ग)तुमने इतनी देर से मुझे नहीं पहचाना। (विस्मय बोधक)

2.निम्नलिखित शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए -

(क)जैसे ही, वैसे ही -----

(ख)इसलिए, क्योंकि -----

(ग)जितना, उतना -----

3.सहायक क्रिया मुख्य क्रिया की काल सम्बन्धी सहायता करती है, जैसे- 'घूमने लगे' इसमें 'घूमना' मुख्य क्रिया है तथा 'लगे' सहायक क्रिया। इस प्रकार के दो अन्य उदाहरण देकर मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया को अलग-अलग लिखिए।

4.वाक्य शुद्ध कीजिए-

(क)वही जिसके मामा हैं हम।

(ख)वोटों की भाग गया लेकर पूरी पेटी।

(ग)पहुँचे वाराणसी सज्जन एक।

(घ)माधव विद्यालय गया से घर।

(ड)शैली है गाना रही गा।

5.उनतीस में 'उन' उपसर्ग है, नापसन्द में 'ना' उपसर्ग है। नीचे दिये गये शब्दों में से उपसर्ग और शब्द अलग-अलग लिखिए-

उनसठ, उनचास, सपूत, सुडौल, खुशकिस्मत, खुशमिजाज, नासमझ, गैरहाजिर।

इसे भी जानें

प्रतिवर्ष 14 से 20 सितम्बर तक राष्ट्रीय हिन्दी सप्ताह मनाया जाता है।



भविष्य का भय

(प्रस्तुत कहानी में साधन सम्पन्न परिवार की एक छोटी लड़की के माध्यम से निर्धन एवं असहाय बच्चों के प्रति संवेदना जागृत करने की चेष्टा की गयी है।)

स्कूल से लौटकर आज तुलतुल ने न तो खाना ही खाया और न पार्क में खेलने गयी। मुँह फुलाकर, चुपचाप छत की सीढ़ियों वाले दरवाजे के पास बैठ गयी। इस समय यहाँ कोई नहीं आता, इसीलिए गुस्से, दुःख और अपमान से आहत होकर तुलतुल यहीं दौड़ी आयी थी। किताब का थैला रख ही रही थी कि दादी माँ बोल पड़ीं, ‘लो आ गयी बहादुर लड़की! और बहादुरी का फल भी देख लो। खैर तुम्हारा क्या? भोगना तो हम लोगों को है।’

तुरन्त माँ बोल उठी, ‘हम क्यों भोगने जायें? जिसको बहादुरी का फल मिला है वही भोगे। आज से तुलतुल बरतन धोयेगी, झाड़ू-पोंछा करेगी, मसाला पीसेगी। इसी के कारण तो टुनी की माँ काम छोड़कर भाग गयी है।’

भैया ने भी साथ नहीं दिया बल्कि माँ की हाँ में हाँ मिलाकर बोला, ‘माँ ठीक कह रही हैं। इसके लिए यही उचित है।’

‘हाँ, सभी तुलतुल को ही दोश दे रहे हैं, उसी से तंग आकर टुनी की माँ नौकरी छोड़कर चली गयी है।’

माँ मेज पर खाना लगा रही थीं और बोलती भी जा रही थीं, ‘खाना खाकर बदन में ताकत लाओ फिर काम में जुट जाओ, तुलतुल! जब किसी का कहा कुछ सुनोगी नहीं तो और क्या होगा?’

लेकिन क्या तुलतुल ऐसा खाना खायेगीघ्

तुलतुल ने स्कूल की यूनिफार्म भी नहीं उतारी, बस तीर की भाँति छत की सीढ़ी पर जाकर बैठ गयी। पहले तो उसे थोड़ा रोना आया। स्कूल से लौटते ही इतनी भूख लगती है। पर तुलतुल रोयी नहीं, बल्कि यही सोच रही थी कि महरी को उसने किस तरह से तंग किया था। कल स्कूल से लौटते ही महरी को उसने सिर्फ इतना ही तो कहा, ‘ओ टुनी की माँ। इतनी ठंड में टुनी को सिर्फ फ्रॉक पहनायी है और उस पर उससे चाय के बरतन धुलवा रही है?’

टुनी की माँ बोली थी, ‘हर रोज थोड़े ही धोती है। जल्दी के समय बस थोड़ा हाथ भर बँटा देती है।’

तुलतुल कहने लगी, वाह! क्या खूब कही तुमने? तुम कैसी माँ हो? यह भी नहीं जानती कि ‘अन्तरराष्ट्रीय बालवर्श’ है!

और फिर टुनी की माँ की आश्चर्य से भरी आँखों को देखकर तुलतुल बोली, ‘उफ! तुम तो इस बात के माने ही नहीं समझोगी। सुनो, हमारी मिस ने कहा है।’

टुनी की माँ हाथ का काम छोड़कर बोली, ‘किसने कहा है?’

‘अरे बाबा हमारी स्कूल की मास्टर दीदी, समझी कुछ? उन्होंने कहा है, यह जो नया साल चल रहा है, यह साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों का है। इस साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की

ज्यादा देखभाल करनी होगी और उन्हें प्यार करना पड़ेगा। अच्छा-अच्छा खाना देना होगा,

अच्छे-अच्छे कपड़े और जूते पहनने के लिए देने होंगे, उन्हें पढ़ना-लिखना होगा, बच्चे बीमार न पड़ें उसका भी ख्याल रखना होगा, बच्चों से कोई गंदा-छोटा काम नहीं करवाया

जायेगा। बात समझ में आयी?’



ज्यादा देखभाल करनी होगी और उन्हें प्यार करना पड़ेगा। अच्छा-अच्छा खाना देना होगा,

अच्छे-अच्छे कपड़े और जूते पहनने के लिए देने होंगे, उन्हें पढ़ना-लिखना होगा, बच्चे बीमार न पड़ें उसका भी ख्याल रखना होगा, बच्चों से कोई गंदा-छोटा काम नहीं करवाया जायेगा। बात समझ में आयी?’

तुलतुल की मिस ने कहा, ‘हमारे घरों में जो काम करने आते हैं यानी जो बरतन माँजते हैं, कपड़े धोते हैं, झाड़ू-पाँछा करते हैं, उनके बच्चों को ही यदि हम सिर्फ थोड़े प्यार की आँखों से देखें, अगर कोषिष करें कि वे भी थोड़ा अच्छा खा लें, सरदी के दिनों में पूरा बदन ढँकने का कपड़ा मिल जाय, पढ़ने-लिखने की सुविधाएँ दी जायँ, बीमारी में दवा मिल जाय तो लगेगा दुनिया में हमने कुछ अच्छा काम किया है। हालाँकि तुम सभी अभी बच्चे ही हो फिर भी अभी से सोचना सीखो- कैसे दुनिया में किसी के काम आओगे। एक बात ध्यान में रखना, दुनिया में सभी आदमी बराबर हैं। सभी छोटे बच्चों को प्यार पाने और देखभाल किये जाने का अधिकार है।’

तो फिर मिस के कहे अनुसार क्या तुलतुल कोषिष भी नहीं करेगी और फिर टुनी तो तुलतुल से भी छोटी है। दुबली-पतली हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखती है, ऐसी टुनी ठंडे पानी से बरतन धोयेगी और तुलतुल गरम पानी में हाथ-मुँह धोकर गरम कपड़े पहनकर गरम-गरम पूरियाँ खायेगी?

रोज-रोज ऐसा ही होता था, यह सच है पर अब तुलतुल बड़ों को ऐसी भूल नहीं करने देगी। आज तुलतुल समझ गयी है कि ऐसा करना बहुत खराब बात है। अंतरराष्ट्रीय बालवर्श में टुनी जैसे बेचारे बच्चों की देखभाल होनी ही चाहिए।

इसीलिए तो तुलतुल चिल्लाकर बोली, 'माँ नास्ता दो..... और फिर टुनी से कहा, 'ऐ टुनी, मेरे साथ चल, पूरियाँ खायेंगे।' सुनकर माँ वहीं से बोली, 'ओह तुलतुल! तू बेमतलब में देर क्यों कर रही है?'

‘पूरियाँ उसे भी दूँगी। पहले तू खा।’

‘क्यों, पहले मैं खाऊँगी?’

‘तू अभी-अभी स्कूल से आयी है। अच्छा टुनी को भी पूरियाँ दे रही हूँ, तू तो बैठ।’

टुनी की माँ तुलतुल से बोली, 'जाओ मुन्नी। देर करने पर माँ डाँटेंगी। आज क्या तुम्हें भूख नहीं लगी है..... टुनी तू तब तक कोयला तोड़ दे, सुबह के लिए चूल्हा तैयार कर छोड़ूँ।

फिर क्या था तुलतुल ने टुनी के हाथ से कोयला तोड़ने का हथौड़ा छीनकर फेंक दिया और बोली, 'माँ की बात कभी मत सुनना। यह बालवर्ष है, समझी! बालवर्ष में बच्चों को गन्दा काम करना मना है..... आज से तू डिपो से दूध लेने नहीं जायेगी। माँ के साथ सड़क से सड़ा हुआ गोबर नहीं उठायेगी। बात समझ में आ रही है न! दिमाग में कुछ घुसा!’

तुलतुल की इतनी बातों के जवाब में टुनी डरी-डरी सी बोली, 'हथौड़ा लौटा दो दीदी! नहीं तो माँ मुझे बहुत डाँटेंगी।’

‘डाँटने तो दो। मिस से कह दूँगी। मजा चखा देंगी। तू अब भी क्यों खड़ी है? आ न मेरे साथ।’

इतना कहकर टुनी का हाथ पकड़कर तुलतुल उसे खींचती हुई खाने की मेज पर लायी। कुछ लगा नहीं था पर बेवकूफ लड़की रोने लगी। असल में वह डाँट के डर से रो पड़ी थी।
तुलतुल क्या यह समझ नहीं रही थी?

उसकी माँ जल्दी-जल्दी सन्देश के खाली बक्से में चार-पाँच पूरियाँ थोड़ी-सी आलू की सूखी सब्जी और थोड़ा-सा गुड़ रखकर बोली, 'जा टुनी, माँ के पास जाकर खा ले।’

टुनी जान बचाकर भागी।

तुलतुल ने मन-ही-मन निष्चय कर लिया कि कल से अगर माँ ने टुनी को भी एक जैसा खाना नहीं दिया तो तुलतुल भी खाना नहीं खायेगी। उसने माँ से कह भी दिया। बोली, 'मैं तो अच्छी भली मोटी हूँ, फिर भी इतना खाना देती हो और टुनी चिड़िया जैसी है उसे कुछ नहीं देती। जानती नहीं माँ, यह बालवर्ष है?'



माँ बोली, 'जानती हूँ। ज्यादा बक-बक मत कर। लड़की के सर पर तो भूत सवार हुआ है।'

लेकिन भूत जमकर बैठ गया हो तो कोई चारा भी नहीं है।

खाना खाने के बाद तुलतुल ने देखा टुनी और उसकी माँ घर जा रही हैं। तुलतुल ने डॉटकर नहीं, अच्छी तरह से कहा, 'कल से टुनी यह सब गन्दा काम नहीं करेगी। कल पापा तुझे स्कूल में दाखिला करवा देंगे।'

क्या यह टुनी की माँ को तंग करना हुआ?

तुलतुल ने जाकर अपने पापा से सारी बातें कहीं। पापा सुनकर बोले, 'सच में दाखिला करवाना चाहिए और आजकल तो स्कूल में फीस भी नहीं देनी पड़ती। किताब-कॉपी सब मुफ्त मिलते हैं। टिफिन में खाना भी मुफ्त मिलता है।'

'सच पापा?'

‘हाँ, मुन्नी, बिलकुल सच। यह नियम हो गया है।’

‘तो फिर टुनी हिसाब हल कर पायेगी?’

‘क्यों नहीं। सीखने पर जरूर कर सकेगी।’

‘किताब पढ़ सकेगी, पापा?’

‘जरूर पढ़ सकेगी। कल सुबह जैसे ही वे लोग आयेंगे टुनी को पकड़कर स्कूल में बैठा आऊँगा।’

तुलतुल खुषी के मारे झूम उठी।

अहा! कल बड़ा मजा आयेगा।

स्कूल में पहुँचते, तुलतुल मिस को जाकर कहेगी, ‘मिस, मैंने आपका कहना माना है। हमारे घर में जो काम करती है उसकी लड़की को.....ही-ही.....स्कूल में ही.....।’

ही-ही तो तुलतुल ने यहीं कर लिया। स्कूल में मिस के सामने यह सब नहीं चलेगा। स्कूल में गम्भीर, षान्त, सभ्य ढंग से बात करनी पड़ती है।

रात में सोते समय तुलतुल का मन बड़ा खुष था। सोते समय उसने माँ को निर्देश दिया, ‘कल मेरे साथ-साथ टुनी को भी खाना दे देना। माँ! टुनी को भी अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए देना। समझी न माँ।’

माँ नाराज होकर बोली, 'सब समझ गयी। तार-तार समझ गयी। अब, जरा बकना बन्द कर और कृपा करके सो जा।'।

तुलतुल तुरन्त सो गयी।

ओ माँ! सुबह उठकर तुलतुल ने देखा यह क्या? यह सुबह तो रोज की तरह सुबह है। पापा को उन्हें ले जाने की कोई जल्दी ही नहीं है। पापा घर पर ही नहीं थे और टुनी ज्यों की त्यों फटी फ्रॉक पहनकर चाय के ढेर सारे बरतन धो रही थी।

तुलतुल नल के नीचे से टुनी को खींचकर बोली, 'कल क्या कहा था?' टुनी बेवकूफ की तरह अपनी माँ को देख रही थी। टुनी की माँ बोली, 'मुन्नी को क्या हो गया है? दिमाग फिर गया है क्या?'

तुलतुल सीधे दुमंजिले पर पहुँची और कल शाम माँ से जो कपड़े लिये थे उन्हें लाकर टुनी को पहनने का हुक्म दिया और बोली, 'पापा के लौटते ही स्कूल जायेंगे, समझी और उसके पहले तू मेरे साथ खाना खायेगी। याद रहेगा?'

क्या इसे टुनी की माँ को तंग करना कहा जायेगा?

उसे तो उस समय स्कूल जाने के लिए नहीं कहा था!

खाना खाते समय टुनी को देखकर तुलतुल चिल्लाकर उसे पुकारने लगी। दादी माँ बोली, 'टुनी अपने पापा से पूछने गयी है।'

‘क्या पूछने गयी है?’

‘वह, स्कूल जायेगी या नहीं, यह अपने पापा से नहीं पूछेगी क्या? तुम्हारे कहने से ही होगा? टुनी की माँ इसलिए बरतन छोड़कर लड़की को लेकर घर पूछने गयी है।’

दादी माँ की बात तो थोड़ी-थोड़ी ठीक लगती है, पर तुलतुल को थोड़ा डर भी है।

टुनी के पापा कहीं उसे स्कूल जाने से मना न कर दें। इन लोगों का कोई भरोसा नहीं। अभी-अभी तो टुनी की माँ बोली थी कि पढ़ने-लिखने से गरीब आदमी का काम चलेगा कैसे?

‘फीस नहीं लगेगी, किताब के पैसे नहीं लगेंगे यह सुनकर भी टुनी की माँ चुप रही।’ यह बात घर जाकर वह जरूर कहेगी।

तुलतुल जब जूते-मोजे पहन रही थी, पापा बाजार से लौट आये। तुलतुल बोली ‘ओह पापा, आप बड़े डेंजरस हैं। (यह बात वैसे अक्सर पापा ही तुलतुल को कहते हैं।) इतनी देर कर दी आपने? टुनी भी देर कर रही है। उसके आते ही उसे स्कूल में लेकर आ जाइएगा। यहीं पास के स्कूल में भर्ती करवा दीजिएगा। वहाँ बिना जूते-मोजे पहने भी घुसने देते हैं, पापा। टुनी बेचारी के पास तो कुछ भी नहीं है। जब वह पास कर जायेगी, आप उसे जूते-मोजे खरीदकर देंगे न पापा? उसके पापा के पास ज्यादा रुपये नहीं हैं इसलिए नहीं दे सकते। आप तो देंगे न पापा?’

फिर पापा का जवाब सुनने से पहले ही स्कूल की बस आ गयी थी और अब शाम को बस से उतरते ही उसे यह सुनना पड़ा कि टुनी की माँ ने तुलतुल की हरकतों से तंग आकर काम छोड़ दिया है। सुबह जो अधमँजे बरतन को छोड़कर चली गयी थी, फिर वापस नहीं लौटी।

पड़ोस के घर की सुखदा भी उसी मुहल्ले की है। माँ ने उसे भेजा था पर टुनी की माँ ने कहलवा दिया कि वह अब काम नहीं करेगी।

इसके माने टुनी की माँ का पापा से पूछने जाना एक बहाना था। बकवास था। वह स्कूल के डर से भाग गयी। ताज्जुब है! कितनी बेवकूफ है वह!

घर के जो बड़े लोग हैं, उनमें से कोई तो टुनी की माँ को दोष नहीं दे रहा है। सभी तुलतुल की बेवकूफी की बात कर रहे हैं और ये लोग सभी पढ़े-लिखे लोग हैं! लोग तो जानते हैं ‘बालवर्ष’ में क्या-क्या करना चाहिए। रोज तो अखबार पढ़ते हैं।

असल में बड़ों को समझा ही नहीं जा सकता। बड़े लोग कभी कुछ बोलते हैं तो कभी कुछ। उनके सभी काम बड़े उलटे किस्म के हैं।

उस बार की तो बात है। तुलतुल जलपाईगुड़ी में नाना के घर गयी थी। नानाजी ने तुलतुल को 'दया के सागर विद्यासागर' पुस्तक खरीद कर दी। उस समय वे क्या बोले थे?

‘महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़, तुलतुल! जितना हो सके, ऐसी किताबें पढ़ना, समझी? पढ़ना और इनके आदर्शों पर चलना।’

ओह माँ! उसके कई दिनों बाद की बात है। जलपाईगुड़ी में बड़ी ठंड पड़ी थी। एक गरीब लड़का कोई पुराना कपड़ा माँग रहा था। तुलतुल ने अपना पहना हुआ कार्डिगन खोलकर उसे दे दिया। बाप रे बाप! नानाजी ने ऐसी डाँट लगायी कि क्या कहना! पागल, सिरफिरी लड़की, कहकर नानाजी और भी कुछ बड़बड़ाने लगे। क्यों? विद्यासागर क्या अपने शरीर के कपड़े उतार कर गरीबों को नहीं दे देते थे?

नानाजी बाद में हँसकर मजाक करते हुए बोले, ‘अब कान पकड़ता हूँ। किसी को विद्यासागर की जीवनी नहीं खरीद कर दूँगा। इतनी कीमती ऊनी कार्डिगन इस लड़की ने सड़क के भिखारी को दे दिया?’

रास्ते के भिखारी को नहीं देगी तो क्या तुलतुल पैसे वालों के लड़के-लड़कियों को देगी? देने पर भी वे क्या लेंगे? और तुलतुल उन्हें देगी भी क्यों? उनके पास नहीं है क्या?

नीचे से भैया की आवाज सुनायी दी, ‘ऐ तुलतुल, खाना खाने आ न, छत पर क्यों बैठी है?’

तुलतुल का मन डोल उठा। पेट में चूहे कूद रहे थे फिर भी तुलतुल कठोर बनी बैठी रही। इतने में ही वह हिम्मत हार जायेगी?.....मिस ने यह भी कहा था, कितने बच्चों को दो बार भरपेट खाना भी नहीं मिलता.....।

भैया ने फिर पुकारकर कहा, ”बरतन धोने के डर से नीचे नहीं उतर रही है, क्या? हा, हा, हा। ही, ही, ही। इतना डरने की जरूरत नहीं, तुम्हारा कसूर माफ कर दिया गया है...।“

तुलतुल ने भी चिल्लाकर बोलना चाहा, ‘दंड किस चीज का? मैंने क्या कोई गलती की है?’ पर वह कुछ बोल नहीं पायी। उसकी आवाज रुँध गयी। अब दादी माँ ने पुकारा, पूरियाँ ठंडी पड़ रही हैं।’

तुलतुल मुँह कठोर बनाकर वैसी ही बैठी रही।

इसके बाद ही माँ आयी।

‘यह क्या नखरा हो रहा है? तुम्हें क्या सचमुच ही बरतन माँजने और कपड़े धोने के लिए कहा गया है? सर्दी के दिनों में काम का आदमी छूट जाय तो कैसा लगता है, तू क्या समझोगी? कोई तुम्हें बेमतलब डँटना थोड़े ही चाहता है? ले अब, चल उठ। खाना खा ले। ज्यादा नखरे की जरूरत नहीं।’

तुलतुल गुस्से में ही बोली, ‘मैं नहीं जाती, जाओ। मैं नहीं जाऊँगी।’

‘ठीक है। आने दो तुम्हारे पापा को, लाडली बेटी को इतना प्यार करने का मजा भी वे देख लें। बेटी की ‘हाँ’ में ‘हाँ’ मिलाकर बोले, ‘हाँ-हाँ’ टुनी को स्कूल में दाखिला दिला देना अच्छा रहेगा।’ पर तू ही सोच टुनी अगर स्कूल जाने लगेगी तो उसकी माँ का कैसे गुजारा होगा? टुनी कितना हाथ बँटाती है।’

तुलतुल के गले में दुगनी ताकत थी। झटक कर बोली, ‘यही तो खराब है। मिस ने कहा है, छोटे-छोटे बच्चों से काम कराना बहुत बड़ा पाप है। समझी? तुम सभी पापी हो।’ पर माँ इस भयंकर बात को सुनकर भी नहीं घबरायी। बल्कि हँसकर बोली, ‘क्या करूँ, तू बोल? पापी संसार में जन्म लिया है, पापी बनकर रह रही हूँ। इस दुनिया को नये सिरे से बदलने की क्षमता तो मेरी है नहीं और अगर ऐसा न किया जाये तो इस संसार का उद्धार भी नहीं होने का। तू जब बड़ी होगी तो इसे बदल डालना। तू और तेरे दोस्त सभी मिलकर। हम लोगों की तरह का पाप, तुम लोग नहीं करना।’

इस बात से न जाने क्या हुआ।

अचानक तुलतुल बिलखकर रो उठी। माँ से लिपटकर बोली, ‘अगर बड़ी होकर मैं भी तुम्हारी तरह उलट-पलट जाऊँ तो? अगर बेवकूफ बन जाऊँ तो? अगर यह भूल जाऊँ कि सभी लोग एक समान हैं।’

- आषापूर्णा देवी

आषापूर्णा देवी का जन्म कोलकाता में 8 फरवरी सन् 1909 ई0 को हुआ था। इन्होंने अपनी कृतियों के द्वारा समाज में जागरण पैदा किया। इनकी प्रमुख कृतियाँ- ‘अग्नि परीक्षा’, ‘प्रथम प्रतिश्रुति’, ‘सुवर्णलता’, ‘गल्प पंचाषत’ आदि हैं। इन्हें सन् 1976 ई0 में ‘पद्मश्री’ की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1995 ई0 में इनका निधन हो गया।

अपमान = अनादर। आहत = घायल, दुःखी। तंग आकर = परेशान होकर। यूनिफार्म = गणवेश, एकरूपता वाले वस्त्र। तीर की भाँति = अतिशीघ्र। हाथ बँटाना = सहयोग देना। मजा चखाना = किये का फल चखाना, दंड देना। डेंजरस = खतरनाक। हरकत = हिलना-डुलना, शरारत। सिर पर भूत सवार होना = बहुत क्रोधित होना, बुद्धि ठीक न होना। क्षमता = सामर्थ्य। उद्धार = विपत्ति, दुर्दशा, पाप आदि से छुटकारा। सिरफिरी = नासमझ। ताज्जुब = आश्चर्य।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. स्कूल से लौटने पर तुलतुल मुँह फुलाकर क्यों बैठ गयी?
2. तुलतुल की माँ ने उसे घरेलू कार्य करने का आदेश क्यों दिया?
3. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवनी पढ़ने का तुलतुल पर क्या असर हुआ?
4. तुलतुल के मन में भविष्य के किस भय की चिन्ता थी?
5. टुनी की माँ टुनी को स्कूल क्यों नहीं भेजना चाहती थी और वह तुलतुल के घर की नौकरी छोड़कर क्यों चली गयी?
6. ‘अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष’ के सन्दर्भ में मिस के क्या विचार थे और मिस के विचारों का तुलतुल पर क्या प्रभाव पड़ा?

विचार और कल्पना

नाना जी ने तुलतुल से कहा था कि महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़कर उनके आदर्शों पर चलना किन्तु ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवनी पढ़ने के बाद जब उसने अपना कार्डिगन भिखारी को दे दिया तब नाना जी ने तुलतुल को बहुत डाँटा। नाना के प्रति आपके क्या विचार हैं? लिखिए-

कुछ करने को

1. अपने शिक्षक/शिक्षिका से पता करें कि बच्चों के क्या-क्या अधिकार हैं? उन्हें चार्ट पर लिखकर अपने विद्यालय तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लगाएँ।

2. आप के आस-पास कुछ ऐसे बच्चे जरूर होंगे जो स्कूल नहीं जाते और मजदूरी या घर के कार्यों में लगे रहते हैं। ऐसे बच्चों के नाम तथा स्कूल न जाने के कारणों का पता लगाइए और लिखिए कि उन्हें स्कूल भेजने के लिए आप क्या-क्या करेंगे।

3. अन्तरराष्ट्रीय बाल वर्ष के समान 'अन्तरराष्ट्रीय महिला वर्ष' तथा 'अन्तरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस' के विषय में अपने अध्यापकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।

भाशा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए-

मुँह फुलाना, हाथ बँटाना, मजा चखाना, सर पर भूत सवार होना, कोई चारा न होना, दिमाग फिरना, पेट में चूहे कूदना।

2. इस पाठ में कई शब्द-युग्म आये हैं जो पुनरुक्त हैं, जैसे- कभी-कभी, डरी-डरी, गरम-गरम आदि। इसी आधार पर पाठ में आये हुए अन्य पुनरुक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए।

3. इस पाठ में आये निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए-

यूनिफार्म, फ्रॉक, हुक्म, माफ।

ये शब्द विदेशी भाशा से हिन्दी में आये हैं। पाठ से इसी प्रकार के अन्य विदेशी शब्द चुनकर लिखिए।

4. दो पदों के मेल से बने हुए नये संक्षिप्त पद को 'समास' कहते हैं। जिस 'समास' में दोनों पद प्रधान होते हैं और उनके बीच में 'और' शब्द का लोप होता है, उसे 'द्वन्द्व समास' कहते हैं, जैसे- पढ़ना-लिखना अर्थात् पढ़ना और लिखना। नीचे लिखे शब्दों में समास विग्रह कीजिए-

झाड़ू-पोंछा, दुबली-पतली, हाथ-मुँह, लड़के-लड़कियाँ।



मनभावन सावन

(प्रस्तुत कविता में कवि ने सावन के बरसते बादल का मनोरम चित्र खींचा है। कविता के अन्त में कवि ने जन-जन के जीवन में सावन का उल्लास भरने की कामना की है।)

झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,

छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।

चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,

थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के॥



पंखों से रे, फैले-फैले ताड़ों के दल,
लम्बी-लम्बी अंगुलियाँ हैं, चौड़े करतल।
तड़-तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,
टप-टप झरती कर मुख से जल बूँदें झलमल।।
नाच रहे पागल हो ताली दे-दे चल-दल,
झूम-झूम सिर नीम हिलातीं सुख से विह्वल!
हरसिंगार झरते बेला-कलि बढ़ती प्रतिपल,
हँसमुख हरियाली में खगकुल गाते मंगल।।
दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
‘म्याव’ ‘म्याव’ रे मोर, ‘पीउ’ ‘पीउ’ चातक के गण।
उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन,
घुमड़ घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।
रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर।
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि भर।।
पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इन्द्रधनुष के झूले में झूले मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानन्दन पन्त

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म सन् 1900 ई0 में अल्मोड़ा जिले के कौसानी ग्राम में हुआ था। पन्तजी को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। ‘पल्लव’, ‘गंजुजन’, ‘युगान्त’, ‘युगवाणी’, ‘स्वर्णधूलि’, ‘चिदम्बरा’ आदि उनकी प्रख्यात काव्य रचनाएँ हैं। सन् 1977 ई0 में इनका निधन हो गया।

थम-थम = रुक-रुक कर। तम = अन्धकार। दल = पत्ते। चल-दल = पीपल (जिनके पत्ते सदैव हिलते रहते हैं)। सोनबलाक = सुनहरे बगुले। आर्द्र सुख = सुख में मग्न होकर।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. ताड़ के पत्ते किस रूप में दिखायी पड़ रहे हैं ?
2. हरसिंगार और बेला के फूलों पर सावन की बूँदों का क्या प्रभाव पड़ रहा है?
3. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आये हैं ?
(क) पीपल के पत्ते मानो ताली बजाकर नाच रहे हैं और नीम आनन्दित हो झूम रही है।
(ख) पानी की गिरती धाराओं से धरती के कण-कण में हरे-भरे अंकुर फूट पड़े हैं।
4. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन।
(ख) रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर।
(ग) फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।
5. कविता की अन्तिम पंक्तियों में कवि ने क्या इच्छा व्यक्त की है ?
विचार और कल्पना

1. कविता को पढ़कर आप के मन में सावन का जो चित्र उभरता है, उसे लिखिए।
2. कवि के मन में 'दिन के तम में सपने जगने' से क्या आशय है ?
3. सावन में चारों ओर हरियाली फैल जाती है। दादुर, मोर, चातक, सोनबलाक सभी खुशी से बोलने लगते हैं। आपको सावन कैसा लगता है- बीस पंक्तियों में लिखिए।
4. बरसात की बूँदों के भिन्न-भिन्न जगहों से गिरने पर भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। बताइए कि निम्नलिखित स्थानों पर बूँदों के गिरने से किस प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होंगी।
(क) जब पत्तों पर गिरती हैं।

- (ख) जब किसी छप्पर पर गिरती हैं।
- (ग) जब किसी तालाब में गिरती हैं।
- (घ) जब किसी पत्थर पर गिरती हैं।
- (ङ) जब किसी छप्पर से पानी में गिरती हैं।

5. पशुओं की भिन्न-भिन्न आवाजें होती हैं, जैसे-

मेढक - टर्-टर्

बिल्ली - म्याऊँ-म्याऊँ

चातक - पीउ-पीउ

बताइए, निम्नलिखित पक्षी कैसे बोलते हैं-

बतख, कोयल, मोर, बुलबुल।

कुछ करने को

1. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से एक कविता स्वयं बनाइए-

बादल, बरसात, पानी, बिजली, हरियाली, दादुर, मोर, पंख, फुहार, काले।

2. वर्षा ऋतु की कुछ और कविताओं को पढ़िए।

3. पाठ के चित्र पर आधारित वर्षा का एक सुन्दर-सा चित्र बनाइए।

4. आसमान से गिरने वाला निर्मल जल धरती पर आकर दूषित हो जाता है। दूषित जल से डायरिया, हैजा, पेचिस, टाइफाइड आदि बीमारियाँ फैलती हैं। जल दूषित होने के निम्नलिखित कारण हैं-

⌚ कुएँ एवं हैण्डपम्प के आसपास गन्दगी का होना।

⌚ पीने के पानी में मानव-मल या सीवर का पानी मिल जाना।

⌚ छोटी-बड़ी फैक्ट्रियों के रसायन युक्त जहरीले पानी का नदियों एवं भूमिजल में मिलना।

⌚ रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाओं का भूमिगत जल में मिलना।

प्रोजेक्ट कार्य-

अपने आसपास जल के दूषित होने के इन कारणों के अतिरिक्त अन्य कारणों की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइएँ।

भाषा की बात

1. 'झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के' - इसमें 'झम-झम' ध्वनि सूचक शब्द है। कविता में अन्य कई ध्वनि सूचक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे सावन की बरसात का बड़ा सहज एवं सरस चित्रण हुआ है। इस प्रकार के ध्वनि सूचक शब्दों को चुनकर लिखिए।

2. कविता में वर्णों की आवृत्ति से कई पंक्तियों में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। ऐसी दो पंक्तियों को चुनकर लिखिए।

क्या निराश हुआ जाय

(प्रस्तुत निबन्ध में निबन्धकार ने निराशा के स्थान पर सदैव आशावान रहने की प्रेरणा दी हैA)

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति सन्देह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उसमें उतने ही अधिक दोष दिखाये जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परन्तु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखायी दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नयी परिस्थितियों का सामना करने के लिए नये

सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है।

नियम-कानून सबके लिए बनाये जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोडित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आन्तरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के

बन्धन में बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है, परन्तु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाये गये हैं, जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परन्तु जिन लोगों को इन कार्यों में लगाना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-

सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाये गये, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गये। लक्ष्य की बात भूल गये। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए क्षोभ का नतीजा है, परन्तु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखायी देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अन्तर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा

सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और अध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गये हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्त्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं, जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में जाकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकन्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिये और बोला, "यह बहुत गलती हो गयी थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र सन्तोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गयी है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परन्तु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गन्तव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गये। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को सन्देह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ”यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।“ परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा, ‘हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।’ डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परन्तु यात्री इतने घबरा गये कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ‘इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।’



मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गये। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो ड्राइवर को समाप्त कर देना, उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ‘अड्डे से नयी बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है’, फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा सा दूध लेकर आया और बोला, ‘पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।’ यात्रियों में फिर जान आयी। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गये।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गयी! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-मया रह ही नहीं गयी! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया हूँ, परन्तु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जायेगा, परन्तु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण ही सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान् से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह न करूँ।

मनुष्य की बनायी विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आये दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

- हजारीप्रसाद द्विवेदी

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई0 में बलिया के आरत दूबे का छपरा(ओझवलिया) नामक गाँव में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ये शान्ति निकेतन में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। द्विवेदी जी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकारों, समीक्षकों और सांस्कृतिक उपन्यासकारों में से एक हैं। 'कबीर', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'सूर-साहित्य', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा', 'अशोक के फूल', 'कुटज' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों की गहरी परख है। इनका निधन 19 मई सन् 1979 ई0 को हुआ।

गह्वर = गुफा। मनीषी = विचारक, विद्वान। भीरु = डरपोक। निरीह = असहाय, बेचारा। आस्था = विश्वास। विधि-निषेध = करने और न करने के नियम। आलोडित = उथल-पुथल, हिलोरें लेता हुआ। विकार = दोष। दकियानूसी = पुराने विचारों से चिपका रहने वाला,

पुरातनपन्थी। पर्दाफाश करना = भेद खोलना। दोषोद्घाटन = बुराइयाँ बताना। अवांछित = अनचाही। कातर मुद्रा = डरा हुआ रूप। वंचना = धूर्तता। विश्वासघात = विश्वास में धोखा। जवाब दे देना = खराब हो जाना। हिसाब बनाना = योजना बनाना। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना = डर जाना। गन्तव्य = जहाँ किसी को जाना हो। परीक्षित=जाँचा-परखा। निकृष्ट = बुरा, नीच।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1. क्या कारण है कि आजकल हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम?
2. जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्थाएँ क्यों हिलने लगी हैं?
3. किन घटनाओं के आधार पर लेखक को लगा कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है?
4. 'बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है।' क्यों?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) सामाजिक कायदे-कानून कभी-कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं।

(ख) व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता।

(ग) धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता है, कानून को दिया जा सकता है।

(घ) महान भारतवर्ष के पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

विचार और कल्पना

1. अपने आस-पास या विद्यालय में घटी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जिसमें किसी ने किसी की निःस्वार्थ सहायता की हो।

2. आप परिवार सहित कहीं जा रहे हैं। निर्जन और सुनसान मार्ग पर एकाएक बस खराब हो जाती है। कल्पना कीजिए आप के मन में किस तरह की शंकाएँ जन्म लेंगी और आप गन्तव्य तक पहुँचने के लिए क्या उपाय करेंगे।

कुछ करने को

इस पाठ में लेखक ने दो घटनाओं का जिक्र किया है। इन घटनाओं से क्रमशः 'टिकट बाबू' और 'बस के कंडक्टर' की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा प्रकट होती है। इस तरह की घटनाएँ हमारे समाज में प्रायः घटित होती रहती हैं। अपने साथ या आस-पास में घटित ऐसी घटनाओं को लिखकर अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए।

भाषा की बात

1. अव्यय का एक प्रकार समुच्चय बोधक भी है। यह संज्ञा अथवा संज्ञा के समान प्रयुक्त पद के बाद आता है, जिससे उस संज्ञा का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे पद से स्थापित होता है। जैसे-

(क) 'मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मारपीट से बचाया' - यहाँ 'पर' शब्द समुच्चय बोधक अव्यय है।

(ख) 'वस्तुतः आये दिन उन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है' - यहाँ पर 'लेकिन' शब्द समुच्चय बोधक अव्यय है।

उपर्युक्त उदाहरण के आधार पर समुच्चय बोधक अव्यय का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।

2. 'ईमानदार' तथा 'मूर्ख' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं, इनमें क्रमशः 'ई' तथा 'ता' प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा शब्द 'ईमानदारी' तथा 'मूर्खता' बनाया गया है। नीचे लिखे गये विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए -

निर्भीक, जिम्मेदार, कायर, अच्छा, लघु, बुरा।

3. इस पाठ में सरल, मिश्र और संयुक्त तीनों प्रकार के वाक्य आये हैं। नीचे दिये गये वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि वे किस प्रकार के वाक्य हैं-

(क) उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाने लगेगा।

(ख) एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था।

(ग) इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता।

(घ) यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।

इसे भी जानें

साहित्य अकादमी पुरस्कार- साहित्य अकादमी द्वारा अंग्रेजी सहित बाईस भाषाओं में गत पाँच वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं पर दिया जाता है इसकी स्थापना सन् 1955 ई० में हुई थी।



पाठ १७

वरदान माँगूँगा नहीं

(प्रस्तुत कविता से कवि के स्वाभिमान और आत्मविश्वास का परिचय मिलता हैA



यह हार एक विराम है

जीवन महासंग्राम है

तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ,

वरदान माँगूँगा नहीं।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए

अपने खंडहरों के लिए

यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

क्या हार में क्या जीत में

किंचित नहीं भयभीत मैं

संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही,

वरदान माँगूँगा नहीं।

लघुता न अब मेरी छुओ

तुम हो महान बने रहो

अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

चाहे हृदय को ताप दो

चाहे मुझे अभिशाप दो

कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

- शिवमंगल सिंह 'सुमन'



‘शिवमंगल सिंह’ का जन्म सन् 1916 ई० में उत्तर प्रदेश स्थित उन्नाव जिले में हुआ था। इन्होंने हिन्दी विषय में एम० ए० और पी-एच० डी० की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बाल्यावस्था से ही इन्होंने काव्य रचना करनी प्रारम्भ कर दी थी, ‘सुमन’ उपनाम से इन्होंने कविताओं का लेखन किया। उनके काव्य संग्रह हैं- ‘हिल्लोल’, ‘पर आँखें भरी नहीं’, ‘जीवन के मान’ ‘प्रलय सृजन’ और ‘विश्वास बढ़ता ही गया’। सन् 2002 में इनका देहावसान हो गया।

महासंग्राम = महान संघर्ष, जीवन में आने वाली कठिनाइयों से लड़ने का भाव। प्रहर = पहर-एक दिन का आठवाँ भाग। ताप = कष्ट। अभिशाप = शाप, बहुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) तिल-तिल मिट्टंगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं।

(ख) लघुता न अब मेरी छुओ, तुम हो महान बने रहो।

(ग) कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं।

2. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके सही अर्थ से मिलाइये -

(क) क्या हार में क्या जीत में जीवन स्वयं ही महासंघर्ष है इसमें हार को

किंचित नहीं भयभीत मैं। क्षणिक विश्राम के रूप में लेना चाहिए।

(ख)मैं विश्व की सम्पत्ति हार हो या जीत, मैं जरा भी

चाहूँगा नहीं। भयभीत नहीं।

(ग)यह हार एक विराम है, मैं संसार की सम्पदा की

जीवन महासंग्राम है। कामना नहीं करूँगा।

3.कविता में जीवन को महासंग्राम क्यों कहा गया है?

विचार और कल्पना

1.कविता में कवि दया की भीख नहीं लेना चाहता, इस संबंध में आपके क्या विचार हैं,

लिखिए?

2.‘यह भी सही, वह भी सही’ का प्रयोग किन परिस्थितियों के लिए किया गया है?

3.कविता के मूल भाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक ‘वरदान माँगूँगा नहीं’ क्यों रखा गया होगा तथा इस कविता के क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं।

कुछ करने को

1.हम बहता जल पीने वाले,

मर जायेंगे भूखे-प्यासे।

कहीं भली है कटुक निबौरी,

कनक कटोरी की मैदा से।।

उपर्युक्त कविता भी श्री शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी की ही है। दोनों कविताओं में क्या समानता तथा क्या अन्तर है? लिखिए।

2. 'जीवन महासंग्राम है' के समान भाव की कुछ सूक्तियाँ एकत्र करके लिखिए।

भाषा की बात

1. इस कविता में एक पंक्ति है "क्या हार में क्या जीत में" इसमें एक ही पंक्ति में 'हार' और 'जीत' दो परस्पर विलोम शब्द आये हैं। आप भी कुछ ऐसी पंक्तियाँ बनाइए जिनमें दो परस्पर विलोम शब्द एक साथ आये हों, जैसे- क्या सुख में क्या दुःख में।

2. पाठ में आये तुकान्त शब्द छाँटकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. जन = लोग। (जन-जन की आवाज है - हम सब एक हैं।)

जान = प्राण। (क्या बताऊँ, वह हमेशा मेरी जान के पीछे पड़ा रहता है।)

ऊपर के शब्दों (जन-जान) में केवल एक मात्रा के हेर-फेर से उनके उच्चारण और अर्थ दोनों ही बदल गये हैं। नीचे कुछ शब्द-युग्म दिये जा रहे हैं, उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए तथा ऐसे पाँच शब्द-युग्म आप भी ढूँढिए।

सुत-सूत, तन-तान, मन-मान, कुल-कूल, नम-नाम

इसे भी जानें

खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' है। इस कृति पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया है।



कर्तव्यपालन

(प्रस्तुत एकांकी में वनरक्षक के कर्तव्यपालन का सहज, सुन्दर और रोचक वर्णन है।)

पात्र

राजा, वनरक्षक (जंगल का रखवाला), राजा के दरबारी

स्थान -- जंगल का रास्ता

समय -- शाम

(राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।)

राजा: (यकायक पहुँचकर) यह तो किसी के घर का रास्ता है। यह सबके लिए खुला नहीं हो सकता। (खड़े-खड़े होंठों पर उँगली रख कर) मैं राजा हूँ। आश्चर्य है अँधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल और भटक सकता हूँ। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएँ भी, जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़-बढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊँ। इस समय तो किसी भिखमंगे का कुत्ता भी मुझे भूँक सकता है, और वह भिखमंगा मिले, तो मुझे सलाम भी न करे और ये बढ़िया-बढ़िया चमकीले कपड़े। ओह! मुझे पता तो चल गया कि मैं वास्तव में राजा ही नहीं, मनुष्य भी हूँ। (किसी की आहट सुनता है) कोई आ रहा है। मुझे क्या करना चाहिए। क्या कुछ राजापन दिखाऊँ। नहीं, नहीं, फेंको इस राजापन के ढोंग को। मनुष्य होने का लाभ लो।

(वनरक्षक का प्रवेश)

वनरक्षक:आज मैं बदमाश को पकड़ पाया। तुम कौन हो?

राजा:मैं बदमाश नहीं, तुमको विश्वास दिलाता हूँ।

वनरक्षक:अच्छी बात है। किसने बन्दूक चलायी।

राजा:मैंने नहीं चलायी।

वनरक्षक:(तिरस्कार के स्वर में) तुम झूठ बोलते हो।

राजा:(मन में) झूठ बोलता हूँ। कैसे दुःख की बात है कि मैं राजा होकर एक अपराधी की तरह सुन रहा हूँ। (प्रकट) तुम मेरी बात का विश्वास करो। भाई, मैंने बन्दूक नहीं चलायी।

वनरक्षक:अच्छा, अच्छा इधर आओ तुमने राजा के एक हिरन को गोली मारी।

क्या नहीं मारी?

राजा:नहीं, सचमुच नहीं। मैं खुद राजा का बहुत सम्मान करता हूँ। मैंने भी गोली की आवाज सुनी है और मुझे भय है कि कुछ चोर या डाकू जंगल में छिपे हुए हैं।

वनरक्षक:मुझे यकीन नहीं। खैर, तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?

राजा:(गम्भीर होकर) मेरा नाम!

वनरक्षक:हाँ, तुम्हारा नाम। तुम्हारा कोई नाम तो होगा ही। क्या नहीं है? तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो?

राजा:इन प्रश्नों का उत्तर देने का मुझे अभ्यास नहीं है।

वनरक्षक:हो सकता है, पर ये ही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर देने से सच्चे आदमी को डर नहीं लगता। खैर, अगर तुम अपने बारे में कोई साफ उत्तर नहीं देना चाहते हो, तो मत दो, मगर तुम जाना कहाँ चाहते हो? चलो मैं तुमको बाहर निकाल आऊँ।

राजा:(क्षुब्ध होकर) तुम। किस अधिकार से?

वनरक्षक:(जोश के साथ) मैं राजा का वनरक्षक पुंडरीक हूँ, इस अधिकार से।

राजा:(गौर से देखकर) पुंडरीक।

वनरक्षक:(अकड़ के साथ) जी हाँ, पुंडरीक। किसी आदमी को, जिस पर मुझे शक होता है और जब तक वह अपना परिचय, जितना तुमने दिया है उससे अधिक नहीं देता, मैं इस राह से नहीं जाने देता।



राजा: अच्छी बात है, भाई। मुझे बड़ी खुशी है कि मेरी तरह तुम भी राजा के एक अच्छे अफसर हो। अगर तुम विश्वास करो

वनरक्षक: नहीं, तुम विश्वास के पात्र नहीं हो।

राजा: मैं राजा का एक अफसर हूँ। मैं राजा के साथ इस जंगल में शिकार खेलने के लिए आया था और यहाँ राह भूल गया हूँ। जंगल में मुझे रात हो गयी और मैं घर से बहुत दूर पड़ गया हूँ।

वनरक्षक: इसमें सच्चाई की कमी है। अगर तुम शिकार को निकले थे तो तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?

राजा: घोड़ा थक कर गिर पड़ा, मैंने उसे छोड़ दिया।

वनरक्षक: यदि मैं तुम्हारी बात का विश्वास न करूँ

राजा: मैं झूठ नहीं बोलता, भले आदमी।

वनरक्षक: वाह! वाह! दरबार में रहते हो और झूठ नहीं बोलते।

राजा: खैर! तुम जैसा समझो? मगर मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। यह मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ। यदि तुम कभी राजधानी में आओगे, तो मैं तुमको दिखा दूँगा कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। (जेब से एक रुपया निकाल कर और पुंडरीक की ओर हाथ बढ़ाकर) यह लो इनाम और आज रात को मुझे अपनी झोपड़ी में रहने दो।

(वनरक्षक राजा का मुँह देखता है)

यदि यह कम हो, तो सबेरे तुम जो कहोगे, वही तुमको दूँगा। और खुश कर दूँगा।

वनरक्षक:(जोर से हँसकर) ओहो, अब मैंने माना कि तुम दरबारी हो आज के लिए तो एक छोटी रिश्त और कल के लिए एक बड़ा-सा वादा। एक ही साँस में दोनों। मगर मेरे दोस्त, यह दरबार नहीं है।

राजा:(क्रोध से) तू एक नीच आदमी है। जबान सँभालकर नहीं बोलता। मैं तेरे बारे में अधिक जानना चाहता हूँ।

वनरक्षक:लापरवाही से ('तू' और 'तेरे' शब्द को इस तरह लापरवाही से मत फेंको) मैं भी उतना ही भला आदमी हूँ जितने तुम हो।

राजा:(शान्त होकर) क्षमा करो, मित्र।

वनरक्षक:(मुस्कुराकर) मैं क्रोध में नहीं हूँ, पर जब तक तुम्हारी सच्चाई पर मेरा सन्देह है, तब तक मैं तुमसे विशेष प्रेम-भाव नहीं दिखला सकता।

राजा:तुम ठीक कहते हो, पर मैं तुमको कैसे विश्वास दिला सकता हूँ।

वनरक्षक:ओह! तुम जैसा मुनासिब समझो, करो। राजधानी यहाँ से दस मील (16किलोमीटर) पर तो है। तुम अभी राजधानी जाना चाहो, तो मैं तुमको रास्ता बताऊँगा और अगर तुम रात भर इस गरीब के घर में टिकना पसन्द करो, तो मेरे सिर आँखों पर रहो। सबेरे मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

राजा:क्या तुम अभी साथ नहीं चल सकते।

वनरक्षक:नहीं, चाहे तुम राजा ही क्यों न हो।

राजा:तब तो चलो, मैं तुम्हारे ही घर में रात काटूँगा ।

(घोड़े पर सवार एक सरदार का प्रवेश)

दरबारी:महाराज ! कुशल से तो हैं? महाराज के लिए हमने सारा जंगल छान डाला।

वनरक्षक:(चकित होकर, आँखें फाड़कर) कौन? महाराज । तब तो मुझसे बड़ी भूल हुई (घुटने टेककर) महाराज, आपके साथ मैंने जो ढिठाई की, उसे क्षमा कीजिए।

(राजा तलवार खींचता है)

वनरक्षक:महाराज, आप अपने उस सेवक का वध निश्चय ही नहीं करेंगे, जिसने ईमानदारी से अपना फर्ज अदा किया है।

राजा:नहीं, मेरे सच्चे बहादुर मित्र! नहीं, मैं तुमको क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूँ। उठो, राजरत्न पुंडरीक, उठो ! अपनी पदवी का प्रमाण और मेरी प्रसन्नता का चिह्न यह तलवार लो। तुमने हमें जो सुख दिया है, उसके लिए एक हजार रुपये सालाना का पुरस्कार तुमको जीवन भर मिलता रहेगा।

(राजा तलवार देता है। पुंडरीक घुटने टेक कर उसे दोनों हाथों से लेता है और माथे से छुआता है। फिर खड़े होकर राजा को प्रणाम करता है)

राजा:पुंडरीक !

पुंडरीक:महाराज !

राजा:चलो, हमें महल तक पहुँचा आओ। आज तुम मेरे मेहमान रहोगे।

पुंडरीक:(प्रसन्न होकर, सिर झुकाकर) जो हुक्म महाराज!

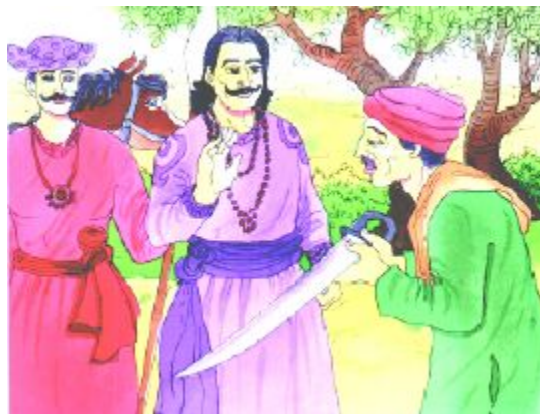
(राजा सरदार के घोड़े पर सवार होकर चलता है। उसके आगे पुंडरीक रास्ता दिखाता चलता है। सरदार राजा के पीछे जाता है।)

पर्दा गिरता है।

- रामनरेश त्रिपाठी

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1881 ई० में जिला जौनपुर, (उत्तर प्रदेश) के अन्तर्गत कोइरीपुर ग्राम में हुआ था। साहित्य की अनेक विधाओं में आपने रचनाएँ की हैं। इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है। आप द्वारा रचित 'पथिक' और 'मिलन' नामक खण्ड - काव्य अत्यन्त लोकप्रिय है। सन् 1962 ई० में इनका देहावसान हो गया।

यकायक = अचानक। आतंक = भय, दबदबा। तिरस्कार = अपमान। यकीन = विश्वास। फर्ज = कर्तव्य। मुनासिब = उचित। नेक = भला। शक = सन्देह।



प्रश्न-अभ्यास

एकांकी से

1. राजा द्वारा ली गयी परीक्षा में वनरक्षक किस प्रकार खरा उतरता है ?

2. नीचे लिखे वाक्य के तीन सम्भावित उत्तर दिये गये हैं, सही उत्तर पर सही (□) का चिह्न लगाइए-

राजा ने तलवार खींच ली क्योंकि-

(क) वह वनरक्षक को दंड देना चाहता था।

(ख) वह वनरक्षक को क्षमा करना चाहता था।

(ग) वह वनरक्षक को सम्मान देना चाहता था।

3. वनरक्षक द्वारा परिचय पूछे जाने पर राजा क्या उत्तर देते हैं?

4. वनरक्षक को राजा पर क्या संदेह होता है ?

5. राजा द्वारा यह कहने पर कि यदि एक रुपये कम हो तो सबेरे और भी दूँगा, वनरक्षक ने राज दरबार और दरबारी का कैसा चित्र खींचा?

6. वनरक्षक को उसकी नेकी और ईमानदारी का क्या फल मिला?

विचार और कल्पना

1. यदि इस एकांकी के मंचन में आपको कोई भूमिका करनी पड़े तो किस पात्र की भूमिका करना चाहेंगे और क्यों?

2. इस एकांकी में आप ने पढ़ा, कि बीच-बीच में कुछ निर्देश दिये गये हैं, जैसे (राजा जंगल से निकल कर एक रास्ते के किनारे खड़ा है) (तिरस्कार के स्वर में)

स्थान- जंगल का रास्ता, समय-शाम.....आदि। ऐसे निर्देश से नाटक के दृश्य स्पष्ट होते हैं तथा नाटक को मंच पर अभिनीत करने में सुगमता होती है।

कल्पना कीजिए- यदि रात का दृश्य मंच पर दिखाना हो तो क्या-क्या करेंगे?

कुछ करने को

1. इस एकांकी में राजा, वनरक्षक, दरबारी और पुंडरीक के मध्य बातचीत है। किसी अन्य एकांकी को पढ़कर उसके पात्रों के बीच चलने वाली बातचीत के संवाद अपने साथियों को सुनाइए।

2. कक्षा में इस एकांकी का अभिनय प्रस्तुत करें।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों को छाँटकर अलग-अलग लिखिए-

अभिमान, चमकीला, सच्चाई, सम्मान, ईमानदारी, विशेष, प्रसन्नता, पुरस्कार, निकलकर।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

तिरस्कार, यकीन, मुनासिब, रिश्त, ढिठाई, फर्ज।

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -

(क) किसी बात की परवाह न करने वाला।

(ख) वन की रक्षा करने वाला।

(ग) जो विश्वास करने योग्य हो।

(घ) जो रिश्त लेता हो।

(ङ.) जो क्षमा करने योग्य न हो।

4. नीचे दिये गये वाक्यों में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य अलग-अलग कीजिए-

(क) मुझे पता तो चल गया कि मैं मनुष्य भी हूँ।

(ख) आज मेरा सारा अभिमान मुझे झूठा जान पड़ रहा है।

(ग)तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो ?

(घ)मैंने माना कि तुम दरबारी हो, आज के लिए तो एक छोटी-सी रिश्त और कल के लिए एक बड़ा सा वादा।

इसे भी जानें

दिनांक 28 जुलाई को प्रति वर्ष 'वन महोत्सव दिवस' के रूप तथा 5 जून को 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है।



मैं कवि कैसे बना

(प्रस्तुत आत्मकथा में गोपालप्रसाद व्यास ने अपने बचपन में कवि बनने की लालसा का प्रस्तुतीकरण बड़े ही रोचक ढंग से किया है। लेखक ने अपनी गलती को अपने कक्षाध्यापक के सामने स्वीकार कर उसका निराकरण पूछा। अध्यापक ने उसे तुकान्त शब्दों के माध्यम से कविता बनाने का पहला गुर सिखा दिया।

कोई सन् 1924 के आस-पास की बात है। मैं मथुरा के अग्रवाल विद्यालय में शायद तीसरे दर्जे में पढ़ा करता था। वह भारत का जागरणकाल था। समाज-सुधारक और राष्ट्रीयता दोनों ही अपने पूर्ण यौवन पर थे। शिक्षा-संस्थाओं पर भी इनकी गहरी छाप थी। हमारे विद्यालय में भी लगभग प्रति सप्ताह कोई-न-कोई उत्सव-आयोजन होता ही रहता था। मुझे भी इन अवसरों पर उजले-उजले कपड़े पहनकर आगे बैठने में बड़ा आनन्द आता था। संगीत तो मेरे परिवार के रग-रग में था। मेरे नानाजी (नन्दन गिरवर) अपने दिनों में ब्रज की रासलीलाओं के एकछत्र स्वामी थे। मेरे पिता जी (पं० ब्रजकिशोरजी शास्त्री) को भी स्वर-ताल का अच्छा ज्ञान था। मेरी जीजी (माँ) के बिना तो हमारे गली-मुहल्ले में स्त्रियों का कोई गीत-वाद्य जमता ही न था। क्योंकि मैं अपने माता-पिता की अकेली संतान था, इसलिए उनकी अन्य सब चीजों के साथ संगीत भी मुझे विरासत में मिला था। इसी बपौती के कारण मैं अपने संगीत के घंटे का मॉनीटर बनता था और गणेश चतुर्थी के अवसर पर जब हमारे नगर में विद्यालय की गाती-बजाती शोभायात्रा निकलती थी तो मैं उसका बनचट्टा बनाया जाता था। लेकिन मेरा यह संगीत-ज्ञान मुझे विद्यालय के सभा-समारोहों में कोई महत्ता नहीं दिला सका। मुझे किसी समारोह में संगीत सुनाने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया। यह मेरे साथ सरासर अन्याय था और जहाँ तक याद पड़ता है, जान-बूझकर तो मैंने अन्याय को बचपन से ही सहन नहीं किया।

तभी मैंने देखा कि लोगों के मन में संगीत से अधिक कविता की कद्र है। मैंने पाया कि मेरे साथी लड़कों को संगीत सुनाने के लिए तो नहीं, पर कविताएँ सुनाने के लिए बड़े चाव से आमंत्रित किया जाता है, फिर यह भी देखा कि अच्छे-बुरे की, आदर-अनादर की सूचना तालियों द्वारा ही प्रकट होती है। मैं देखता कि साथी लड़कों का संगीत सुनने के बाद तालियों की तड़तड़ाहट बड़ी क्षीण होती है और उसमें भी लड़के नहीं, अध्यापक ही थोड़ा रस लेते हैं। मगर कविता के बाद जिस तरह तालियों के खाली बादल गरजते थे, उन्हें देखकर मेरे मन में भी कविताएँ सुनाने की लालसा उत्पन्न होने लगी।

मथुरा में तब ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि श्री नवनीत चतुर्वेदी जीवित थे। उनकी वहाँ अच्छी शिष्य-मंडली थी। इन शिष्यों को ब्रजभाषा के अनेक चुटीले कवित्त-सवैये कंठस्थ होते थे। बसंतोत्सव के फूलडोलों, सावन के हिंडोलों और श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के अवसर पर जगह-जगह इनके पढ़ंत-दंगल जुटा करते थे, जिनमें दूर-दूर के कवित्त-सवैये पढ़नेवाले मथुरा आया करते थे और हार-जीत की बाजी लगा करती थी। इनमें से एक रामलला जी हमारे पड़ोसी थे। इन्हें अकेले पावस पर ही कोई सैकड़ों छन्द याद थे। यों वह उम्र में मुझसे कोई थोड़े ही बड़े थे, लेकिन कवि होने के कारण समाज में उनकी गिनती समझदारों में हो चली थी। मैंने रामलला जी से मेल-जोल बढ़ाना प्रारम्भ किया। मैं भी अब ब्रजभाषा के पुराने कवित्त-सवैये याद करने लगा और उन्हें विद्यालय में अपना बता-बताकर सुनाने लगा।

पर शीघ्र ही मैंने देखा कि मतिराम, भूषण, पद्माकर, ग्वाल, रसखान और नवनीत के छन्दों को अधिकांश सुनने वाले पहचान जाते हैं। पहचानने के बाद उनमें सुनानेवाले के प्रति उतना आदर नहीं रह पाता जितना कि मैं चाहता था। तब मैंने अपनी राह बदली और रामललाजी से खुशामद कर-करके अपने नाम से कविताएँ बनवाने लगा और विद्यालय के उत्सवों में छाती तानकर उन्हें गर्व से सुनाने लगा। थोड़े ही दिनों में श्रोताओं पर रौब जम गया कि मैं भी अक्षर जोड़ लेता हूँ। तभी मुँड़ मुड़ाते ही ओले पड़े।

हमारे नगर में प्रति वर्ष नुमाइश लगा करती थी और उसमें हर बार एक कवि-सम्मेलन हुआ करता था। इस कवि-सम्मेलन में एक घंटा पूर्व समस्या दी जाती थी और सर्वोत्तम तीन समस्या-पूर्तियों पर गोरे कलेक्टर साहब इनाम दिया करते थे। इसके लिए शिक्षा-संस्थाएँ भी अपने यहाँ से चुने हुए छात्रकवि भेजा करती थीं। इस बार हमारे विद्यालय से मेरा नाम भी प्रतियोगिता के लिए प्रेषित कर दिया गया। मैंने सुना तो मुझे काठ मार गया। घबराया हुआ अपने क्लासटीचर के पास गया।

मेरे क्लासटीचर श्री कामेश्वरनाथजी थे। वे पक्के आर्यसमाजी थे। मेरे पिताजी के मित्र थे। मुझ पर भी बड़ा स्नेह रखते थे। मुझ जैसे शरारती को चुपचाप खिसियाया हुआ-सा देखकर वह बोले, ‘भूसुरजी, क्या बात है?’



मैं धरती की ओर देखता रहा।

उन्होंने समझा कि किसी से पिटकर या किसी को पीटकर आया है। जरा रुखाई से पूछा, “बताओ न, क्या बात है?”

मेरे मुँह से फिर भी कोई बोल नहीं निकला। लेकिन मेरी आँखों की आर्द्रता और मुँह की बेबसी ने उनकी रुखाई को ठंडा कर दिया। उन्होंने अनुभव किया कि कोई गंभीर बात है। मेरी पीठ पर हाथ रखकर पुचकारते हुए बोले, “बोलो बेटे, क्या बात है?”

मैंने लगभग हकलाते हुए कहा, “आपने नुमाइश में मेरा नाम भिजवाया है?”

उन्हें हँसी आ गयी, कहने लगे, “हाँ तो क्या हुआ? शाम को ठीक समय पर पंडाल में पहुँच जाना। मैं भी वहीं मिलूँगा।” शब्द आते-आते मेरे गले में अटक गये।

वह कहने लगे “झिझक तो शुरू-शुरू में होती ही है, पर नालायक, तूने झिझकना कब से सीख लिया?” इस समय सोचता रहा कि कैसे कहूँ? कहूँ कि न कहूँ? अन्त में साहस करके मैंने कह ही दिया कि जी मैं जो कविताएँ सुनाया करता हूँ, वे तो सब पराई होती हैं।

कोई और अवसर होता तो मास्टरजी ने मलते-मलते मेरे कान सुर्ख कर दिये होते लेकिन भगवान की कृपा से इस बार उन्होंने वैसा कुछ नहीं किया। मुस्कराकर बोले, “धत्तेरे की ! पर अब क्या हो? हमने तो विद्यालय से अकेले तुम्हारा ही नाम भेजा है। तुम्हारे न जाने से बड़ी बदनामी होगी।”

मैं इसका क्या जवाब देता?

वह भी कुछ देर चुप सोचते रहे, फिर एकाएक मेरा भविष्य जैसे उनकी आँखों में चमक गया हो, ऐसे उत्साह में भरकर बोले “कविता करना बहुत आसान है। तुम घबराओ नहीं। देखो, वहाँ मामूली-सी समस्याएँ दी जायेंगी, यही ‘आई है’, ‘गाई है’, ‘सुहायौ है’ आदि। तुम ऐसा करना कि जो भी समस्या तुम्हें दी जाये पहले उसकी चार तुकें जमा लेना। उदाहरण के लिए अगर ‘आई है’ समस्या दी जाय तो पहले छाई है, भाई है, एक ओर लिख लेना। समझ गये न?” मैंने छंद-रचना के पहले पाठ को हृदयंगम करते हुए स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। “तो बताओ ‘सुहायौ है’ की क्या तुक बनाओगे?” सारी हिचक हवा हो गयी और मैंने तड़ाक से कहा “आयौ है, गायौ है, भायौ है।”

“शाबाश, बस एक काम और करना।”

वह कहने लगे-

“देखो, एक कवित्त में 4 पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में 31 अक्षर होते हैं और अन्त के अक्षरों में वही तुकें रख देना बेटे, कविता बन जायेगी।”

यों गणित में मैं भी कभी अच्छा नहीं रहा। हमेशा तिमाही-छमाही में इसने मुझे अंडा और सालाना में बड़े प्रयत्नों के बाद प्रमोशन दिलाया है। मगर होनहार की बात कि उस दिन कविता का यह जटिल गणित मेरी समझ में तत्काल आ गया।

मुझे आज भी याद है कि उस दिन जब नुमाइश में कविता की परीक्षा देने के लिए मैं पहले-पहल पहुँचा तो मेरे मन में कोई दुविधा या संकोच नहीं था। यद्यपि आगत कविजनों में मैं सबसे छोटा था- केवल ग्यारह वर्ष का। मगर सच कहता हूँ कि मैंने उस दिन सबको अपने से छोटा अनुभव किया था, क्योंकि मैंने समझ लिया था कि कविता का जो गुरु मैंने अभी आज दोपहर को प्राप्त किया है, वह इनमें से किसी के पास नहीं है।

समस्या दी गयी “कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।” मैंने फौरन “बराबर” शब्द को पकड़ा और फुल स्केप साइज के कागज की दाहिनी तरफ एक के नीचे एक लिखना शुरू किया-‘सरासर है’, ‘झराझर है’ लेकिन जैसे बन्दूक और सन्दूक के बाद तीसरी तुक नहीं मिलती, वैसे ही मुझे बराबर की तीसरी तुक उस समय नहीं मिली पर मैं रुका नहीं, ‘बराबर है’ की तीसरी तुक ‘ऊपर है’ लिखकर फौरन समस्या-पूर्ति कर डाली।

कविता तो मुझे अब याद नहीं रही, लेकिन उसका भाव यह था कि देखो मित्र, तुम्हारे पिता ने कर्जा लिया था, उसका कैसा बुरा फल निकला। वह स्वयं तबाह हुए और तुम्हें भी बरबाद कर गये। इसीलिए किसी ने सच ही कहा है कि “कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।

समस्या-पूर्ति के लिए एक घंटे का समय दिया गया था। मगर मैंने कोई बीस मिनट में ही-जैसे तेज विद्यार्थी सवाल हल करके स्लेट मास्टर साहब को पकड़ा देता है, कागज परीक्षक को थमा दिया।

उस दिन का वह दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने चित्र की तरह खिंचा हुआ है। कवि-सम्मेलन का पंडाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। मेरे हेडमास्टर और कविता की कुंजी बताने वाले क्लासटीचर भी बगल की कुर्सियों पर बैठे हुए थे। भीड़ में मेरे विद्यालय के कितने ही विद्यार्थी और सहपाठी भी शामिल थे। मेरा नाम पुकारा गया। मैं उत्साह के साथ भीड़ को चीरता हुआ मंच पर आया। चारों तरफ तालियाँ बज रहीं थीं। पर मैंने उन पर कान नहीं दिया। विश्राम घाट के चौराहेवाले हनुमान जी को मैं रोज सन्ध्या को हनुमान चालीसा का पाठ सुनाया करता था। मन-ही-मन उनका स्मरण किया और हाथ हिला-हिलाकर कविता सुनाने लगा।

स्वर मेरा सधा हुआ था। शक्ल भी बचपन में बुरी नहीं लगती थी। लोगों ने जो बच्चे के मुँह से कच्ची समस्या-पूर्ति सुनी तो गद्गद हो गये। सभी लोग प्रशंसा और आश्चर्य के भाव से मुझे देख रहे थे। कविता की समाप्ति के बाद मैं तालियों के तूफान में जो खोया तो फिर सुध-बुध नहीं रही। मेरी साँस फूलने लगी। पसीने आ गये। शायद और अधिक देर होती तो मैं लड़खड़ा कर मंच पर ही बैठ जाता कि तभी हमारे विद्यालय के हेडमास्टर श्री मुकुटबिहारीलालजी लपके हुए मंच पर

आये और उन्होंने दौड़कर मुझे गोदी में उठा लिया। मुझे लगा कि मानो साक्षात् देवी सरस्वती ने मुझे अंक में भर लिया है। उनकी गोद में जाते ही मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया। मेरे विद्यालय के लड़के जोर-जोर से तालियाँ बजा-बजाकर कूदने लगे।

मैंने गोदी से उतरकर हेडमास्टर साहब और कामेश्वरनाथजी के चरण छुए। इस प्रकार मेरी पहली कविता ने ही धूम-धाम से मेरे कवि होने की घोषणा जनता में कर दी। घड़ीभर में मैं चोर से साहूकार हो गया।



-गोपालप्रसाद व्यास

गोपाल प्रसाद व्यास का जन्म 13 फरवरी सन् 1915 ई० (माघ शुक्ल दशमी, संवत् 1972) को मथुरा जनपद के मुहम्मदपुर (परसौली) गाँव में हुआ था। यह वही स्थान है जहाँ सूरदास ने अनेक भक्ति-पदों का निर्माण किया और वहीं पर उनका देहावसान हुआ। इनके पिताजी पं० ब्रजकिशोर शास्त्री स्वर-ताल के अच्छे ज्ञाता थे और माता चमेली देवी गीत-वाद्य की अच्छी जानकार थीं। इनकी स्कूली शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक हुई। बाद में इन्होंने विशारद, प्रभाकर और साहित्य रत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। ये जाने-माने पत्रकार, लब्धप्रतिष्ठ व्यंग्यकार, शिष्ट हास्यरस के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक हैं। 28 मई 2005 को इनका देहावसान हो गया।

खुशामद = चापलूसी। पावस = वर्षा ऋतु। नुमाइश = प्रदर्शनी। आर्द्रता = नमी। हृदयंगम = हृदय में अच्छी तरह बैठा हुआ, भली प्रकार समझ में आया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

आत्मकथा से

1. बालक गोपालप्रसाद को संगीत के घंटे का मॉनीटर क्यों बनाया जाता था ?
2. लेखक के मन में कविताएँ सुनाने की इच्छा क्यों होने लगी ?
3. कक्षाध्यापक द्वारा नुमाइश में नाम भेजने पर बालक गोपालप्रसाद को क्यों धक्का लगा ?

4. बालक गोपालप्रसाद द्वारा 'दूसरों की लिखी कविताओं को अपना बताकर सुनाने की चोरी' स्वीकार करने से क्या लाभ हुआ ?

5. कक्षाध्यापक ने अपने छात्र को कविता बनाने के क्या गुर सिखाये ?

6. बालक गोपालप्रसाद की 'समस्या-पूर्ति' को सुनकर श्रोताओं में क्या प्रतिक्रिया हुई ?
विचार और कल्पना

1. लेखक को अवसर मिला तो वे कवि बन गये, यदि आपको अवसर मिले तो आप क्या बनना चाहेंगे और क्यों?

2. लेखक के विद्यालय में सभा, उत्सव, समारोह आदि के अवसर पर कविताएँ प्रस्तुत की जाती थीं। आपके विद्यालय में इन अवसरों पर क्या-क्या होता है?

कुछ करने को

1. किसी समस्या के आधार पर भी कविता लिखी जा सकती है। यहाँ कविता की एक पंक्ति दी गई है। इसे आगे बढ़ाएँ-

प्लेटफॉर्म से गाड़ी छूटी,

.....

.....

.....।

2. अपने हिन्दी के अध्यापक की सहायता से कक्षा में 'कवि दरबार' का आयोजन कीजिए, जिसमें प्राचीन कवियों की वेश-भूषा में आप उन कवियों की कविता को उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करें। यदि चाहें तो कुछ छात्र, अपनी लिखी कविता भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

भाषा की बात

1. 'समाज-सुधार' शब्द 'समाज' व 'सुधार' दो शब्दों से मिलकर बना है। समाज-सुधार शब्द में सामासिक चिह्न (-) के स्थान पर 'का' छिपा हुआ है। ऐसे शब्द 'तत्पुरुष समास' कहलाते हैं। तत्पुरुष समास के ऐसे ही पाँच उदाहरण पाठ में से छाँटकर लिखिए।

2. नीचे दिये गये मुहावरों के अर्थ लिखिए और इनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए-

मूँड़ मुड़ाते ही ओले पड़ना, काठ मार जाना, चोर से साहूकार होना।

3. निम्नांकित पंक्तियों में पर शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं-

(क) मैं मंच पर कविता पढ़ने पहुँचा।

(ख) पर वहाँ बहुत बड़े-बड़े कवि विद्यमान थे।

(ग) मैं कविता के पर लगाकर आसमान में उड़ने लगा।

तीनों पर का प्रयोग क्रमशः 'ऊपर', 'लेकिन' तथा 'पंख' के अर्थ में हुआ है। इसी प्रकार आप भी पर शब्द का प्रयोग अपने वाक्यों में करते हुए तीन वाक्य बनाइए।

इसे भी जानें

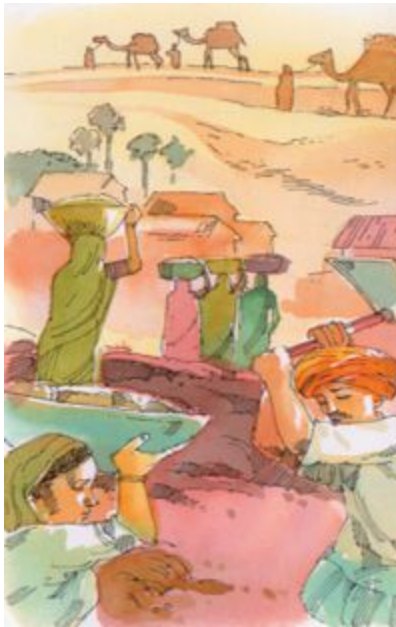
बारह राशि- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ,

मीन।



एक संसद नदी की

(प्रस्तुत 'रिपोर्ताज' दैनिक समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' से साभार लिया गया है। इसमें मैगसेसे सम्मान प्राप्त राजेन्द्र सिंह द्वारा राजस्थान के अलवर जिले में जल-प्रबन्धन द्वारा जल-संचयन एवं जल - क्रान्ति का प्रभावशाली वर्णन किया गया है)



सूखी धरती में पानी लौट आया। सिर्फ पानी ही नहीं लौटा। उसके साथ लौट आयी नंगे पहाड़ों पर हरियाली और जीवन में खुशहाली। बरसों से सूखी नदियाँ न सिर्फ सरस हो गयीं, बल्कि मछलियों व अन्य छोटे-छोटे जल-जीवों की क्रीड़ा शुरू हो गयी। सतत् बरसात की सुखद उम्मीदों से अक्सर रीते, कोरे आकाश तले सूख चुकी गर्म धरती में जगह-जगह पानी का जमा होना, कुओं का फिर से चढ़ जाना और हरे-भरे होते जा रहे खेतों में पानी फेंकती मशीनें देखकर सहसा यकीन करना मुश्किल हो जाता है कि क्या यह वही धरती है जो हर साल 'मौसम आते ही' अकाल और सूखे की चपेट में आ जाती है !

राजस्थान की धरती पर हुई यह जलक्रान्ति एक-दो नहीं करीब पन्द्रह सालों के कड़े संघर्ष और समाज की अथक मेहनत का नतीजा है। इस जल क्रान्ति को संभव बनाने में केन्द्रीय भूमिका रही राजेन्द्र सिंह की। इनके प्रयासों की सुखद और अनूठी मिसाल हैं- वे पाँच

नदियाँ। जो दो दशक पहले सूख गयी थीं पर अब सदानीरा हो गयी हैं। पारम्परिक तरीके से जल-प्रबन्धन का अद्भुत उदाहरण पेश करती इन नदियों ने कितने ही गाँवों की तस्वीर बदलकर रख दी हैं। अखरी, रुपारेल, सरसा, भगाणी और जहाज वाली नदी में फिर से बहता पानी इन गाँवों के लोगों के जुझारू चरित्र का अद्भुत प्रमाण है। अलवर जिले में अपनी मेहनत से सूखी नदियों को फिर से पानीदार बनाने वाले गाँव के मेहनतकश लोगों ने इन्हें अपनी सम्पत्ति मान लिया है।

एक दिलचस्प बात यह है कि अखरी नदी को जिलाने वाले लोगों ने तो इसके संरक्षण के लिए अखरी संसद का गठन कर लिया है। अखरी संसद के कई अधिवेशन भी हो चुके हैं। इन बैठकों में लगभग 75 गाँवों के लोग हिस्सेदारी करते हैं। अखरी संसद में पानी के उपयोग के उचित कानून बनते हैं। इन पर सख्ती और बगैर किसी कोताही के अमल भी होता है। एक नियम के अनुसार यदि कोई बाहरी व्यक्ति मछली मारते पकड़ा गया तो उस पर 11 से 1100 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। इस नदी पर किसी सरकार का नहीं, अखरी संसद का कानून चलता है। इस समय अखरी संसद के सौ से ऊपर सदस्य हैं।

जब अखरी सहित अन्य नदियाँ सूख चुकी थीं तो इन्हें पुनर्जीवित करने के लिए प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। पर जब लोगों की लगन और मेहनत से इनमें पानी बहने लगा तो स्थानीय प्रशासन ने इन पर नजरें टिका लीं। एक ठेकेदार को अखरी में मछली मारने का ठेका दे दिया गया। पर वह ठेकेदार अपने दल के साथ हमीरपुर गाँव पहुँचा तो गाँव वालों ने पूरी एकता से उसका विरोध किया। ठेकेदार को तब गाँव वालों ने अपनी संसद के बारे में बताया और साथ ही गिना दिया नियम भी। ठेकेदार के पास चुपचाप चले जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

दुःख और कमजोरी में समाज का साथ देने के विचार से राजेन्द्र सिंह अक्टूबर 85 में राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में पहुँचे थे। वे समाज को शिक्षित करना चाहते थे। यहाँ आकर उनका शिक्षा के पूर्वाग्रहों का किला टूट गया। गाँव के बुजुर्गों ने उन्हें एक बड़ी नेक सलाह दी। सलाह थी पढ़ाई से पहले पानी। सूखे से बरसों से जूझ रहे उन बूढ़े लोगों के ज्ञान और समाज की दशा को देखकर राजेन्द्र सिंह को ये बात जँच गयी। उन्हें लगा इस समाज को वाकई पढ़ाई से पहले पानी की जरूरत है। अपने साथियों के साथ तब उन्होंने पानी बचाने और बढ़ाने का काम करने का मन बना लिया।

अब सवाल था कि आखिर यह सब होगा कैसे? इसके लिए राजेन्द्र सिंह को किशोरी और गोपालपुरा गाँव के उन्हीं पुराने और अनुभवी लोगों की मदद लेनी पड़ी। गाँव के लोगों ने उन्हें पारम्परिक जल प्रबन्धन की पुरानी विधियों की विस्तार से जानकारी दी। मशविरा

सीधा सा था। छोटे-छोटे बाँध बनाये जायँ। सूख चुके कुएँ-बावड़ियों को गहराकर उन्हें फिर से जीवित किया जाय। इसके साथ ही जोहड़ बनाये जायँ। नदियों को जिलाया जाय इत्यादि। सीधा गणित बरसाती पानी के प्रबन्धन का था। प्रबन्ध इस तरह से कि बारिश का पानी बहकर बेकार न जाय। उस पानी को छोटे-छोटे बाँध और एनी कट बनाकर रोक लिया जाय। जब पानी रुकेगा तो वहीं धरती में समा जायेगा। इससे धरती के नीचे पानी सुरक्षित भी रहेगा और वह अन्दर ही अन्दर ढलान या नीचे की तरफ रिसता रहेगा। जब जमीन के अन्दर पानी बना रहेगा और

धीरे-धीरे आगे या नीचे की ओर बढ़ेगा तो आस-पास के कुओं का जलस्तर उठेगा। सूखी धरती को पानी मिलने से हरियाली होगी और खेती भी की जा सकेगी। बस, यही था जल-प्रबन्धन का पूरा शास्त्र, जो गाँव के लोगों ने समझाया।

बकौल राजेन्द्र सिंह तब हमें यकीन आने लगा कि यदि ऐसा हो सका तो ग्रामीण समाज की दशा-दिशा और हालात में जबरदस्त परिवर्तन आ सकता है। ग्रामीण जीवन के आधार कृषि और पशु ही तो हैं। दोनों होंगे और बचे रहेंगे तो लोगों का जीवन भी टूटने और बिखरने से बच जायेगा। गाँव के लोगों ने यह भी समझाया कि जिस समाज में रहकर काम करना है, सीखना भी वहीं से होगा। दूसरे, करना भी वही होगा जो समाज चाहता है। फैसला भी समाज का और मेहनत भी। आपको सिर्फ समाज का साथ देना है। उसे परम्पराओं का स्मरण कराना है। कुल मिलाकर हालात से हारे लोगों की निराशा दूर करनी है, ताकि वे इस काम को आत्मविश्वास से करें। इसके लिए पहले लोगों का मन बनाना होगा। उन्हें काम, काम के तरीके और इससे मिलने वाले लाभ के बारे में समझाना पड़ेगा।

बहरहाल, काम की शुरुआत गोपालपुरा गाँव के चबूतरे वाले जोहड़ से हुई। इसके लिए लोगों से चन्दा इकट्ठा किया और उन्हें श्रमदान के लिए भी राजी किया। गाँव के कुछ उत्साही लोग गैंती-फावड़े लेकर जुट गये। चूँकि गोपालपुर में उस समय ज्यादा लोग नहीं थे, इसलिए सिलीबावड़ी के लोगों से मशक्कत करायी गयी। हाँ, देखरेख का जिम्मा गोपालपुरा के लोगों ने ही सँभाला। इस तरह गोपालपुरा में चौतरे वाला जोहड़ और मेवालों वाला बाँध बनकर तैयार हो गया। लोगों को अब बस बरसात का इन्तजार था। लम्बे इन्तजार के बाद पानी गिरा और जोहड़ पानी से भर गया। मेहनत से बनाये जोहड़ में पानी देखकर गाँव के लोग पुलकित थे। पानी से लबालब चौतरे वाले जोहड़ ने लोगों का विश्वास

पक्का कर दिया कि अगर इस सिलसिले को आगे बढ़ाया जाय तो सुखद परिणाम जरूर निकलेंगे। इस तरह अभिक्रम शुरू हुआ एक के बाद एक तालाब और जोहड़ बनाने का।

इतना बड़ा काम हुआ तो उसकी चर्चा होनी ही थी। दूसरे गाँवों के लोग भी गोपालपुरा में पानी का प्रबन्धन देखने आने लगे। उन्हें भी लगा कि जब इस गाँव के लोग अपनी मेहनत के दम पर ऐसा चमत्कार कर सकते हैं तो वे क्यों नहीं? फिर तो गाँव के गाँव इस काम में जुट गये। राजेन्द्र सिंह ने बाकायदा संस्था बनाकर इस मुहिम को आगे बढ़ाना शुरू किया। काम का तरीका यह था कि जिस बाँध, तालाब या जोहड़ बनाने में जो खर्च आयेगा उसका दो तिहाई संस्था वहन करेगी और बाकी स्थानीय लोगों से जमा किया जायेगा। ऐसा इसलिए कि जब लोगों का पैसा लगेगा तो उसका उस काम से स्वाभाविक रूप से जुड़ाव होगा। फिर श्रम भी तो स्थानीय लोगों को ही करना था। इस तरह लोग इस काम और संस्था से जुड़ते चले गये। संस्था के लोगों ने अपने काम को फैलाने के लिए गाँव-गाँव पैदल यात्राएँ शुरू कर दीं। इन यात्राओं का लाभ यह हुआ कि लोग जल के साथ जंगल का महत्त्व भी समझने लगे।

करीब 15 साल पहले शुरू हुआ छोटा सा प्रयास एक मुहिम बनकर अलवर सहित राजस्थान के दोसा, जयपुर, टोब, उदयपुर, करौली और सवाई माधोपुर जिलों में भी फैल चुका है। इन जिलों के सैकड़ों गाँवों में इन दिनों पानी बचाने, बढ़ाने का काम चल रहा है।



राजस्थान के जिन इलाकों में पारम्परिक तरीके से जल-प्रबन्धन का काम हुआ है, वहाँ की तस्वीर पूरी तरह से बदल गयी है। भू-जल स्तर उठने से कुएँ जी उठे हैं। 'डार्क जोन' 'ह्वाइट जोन' में तब्दील हो गये हैं। हरियाली वापस आ गयी है। धरती की उर्वरा शक्ति भी लौट आयी है। फसल-चक्र भी बदल गया है। अरावली की नंगी पहाड़ियों पर फिर से पेड़-पौधे उगने लगे हैं।

वतन छोड़कर रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर गये, गाँव के लोग वापस आने लगे हैं। अपने खेतों में भरपूर फसल पैदा कर रहे हैं। पलायन पर विराम लग चुका है। धूप और लू की गर्म लहरें झेलकर पानी के लिए रोज कोसों की यात्रा करने वाली महिलाओं के तो दिन ही फिर गये हैं। अब वे घर का काम निपटाकर घर-परिवार की सोचने लगी हैं और बच्चे जो पहले कुछ या कुछ भी नहीं करते थे, पाठशाला जाने लगे हैं।

बहरहाल जल-संरक्षण का यह अद्भुत काम नीति-निर्धारकों के लिए सबक है और शेष समाज के लिए सीख। आज जबकि हर जगह पानी की किल्लत है, ऐसे में इस तरह का काम निश्चय ही प्रेरक और अनुकरणीय है। राजेन्द्र सिंह भी मानते हैं कि पानी बचाने का यह काम इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज भी हमारी परम्पराएँ प्रासंगिक हैं। उनमें समाज को समृद्ध करने के पर्याप्त बिन्दु मौजूद हैं। जल-संरक्षण के व्यापक काम की बदौलत राजेन्द्र सिंह को मिले मैग्सेसे सम्मान ने भी हमारी परम्पराओं की प्रासंगिकता को ही पुष्ट किया है। निःसंदेह इन्हीं परम्पराओं पर विश्वास कर राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और गुजरात में कई जगह जल- संरक्षण का काम चल रहा है।

राजस्थान में अगर परम्पराओं को आधार बनाकर काम किया जा रहा है तो गुजरात में कुछ काम वैज्ञानिक तकनीक की मदद लेकर भी चल रहा है। वैज्ञानिक तकनीक की मदद उस जगह की पहचान करने में ली जाती है, जहाँ पानी इकट्ठा किया जा सकता है। इस तकनीक का नाम है रिमोट सेंसिंग। रिमोट सेंसिंग के माध्यम से धरती के किसी हिस्से के चित्र लिये जाते हैं। उन चित्रों में धरती की आन्तरिक रचना भी स्पष्ट हो जाती है। आन्तरिक रचना जानकर यह अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि अमुक जगह पानी जमा करने के लिए ठीक रहेगी या नहीं। इससे यह भी पता चल जाता है कि जमीन के भीतर पानी किस गति से रिसेगा। रिमोट सेंसिंग तकनीक, पहाड़ी और पठारी इलाकों में ज्यादा कारगर है। नेहरू विश्वविद्यालय में भी इसी तकनीक की मदद से तीन चैक डैम बनाये गये हैं। उल्लेखनीय है कि जल-संरक्षण की अहमियत समझते हुए ही विश्वविद्यालय ने इसके लिए एक पाठ्यक्रम की भी घोषणा की है। लेकिन विडम्बना यह है कि जल संकट जिस तेजी के साथ गहरा रहा है, उस तेजी के साथ काम नहीं हो पा रहा है। इसलिए कुदरत की अमोल देन जल को बचाने, बढ़ाने के लिए हर एक को जागरूक होकर अपने स्तर पर कुछ न कुछ करना होगा।

सतत् = हमेशा, सर्वदा। रीते = खाली। मेहनतकश = मेहनत करने वाला, परिश्रमी। कोताही = लघुता, कमी। पूर्वाग्रह = पहले से बनी बनायी धारणा। मशविरा = परामर्श, सलाह। जोहड़ = जलाशय। एनीकट = गड्ढा जिसमें जल संचित हो। अभिक्रम = आरम्भ, प्रयत्न। मुहिम = कोई बड़ा काम, मेहनत का काम। डार्क जोन = जहाँ जल का स्तर नीचे हो, पानी के अभाव वाले क्षेत्र। ह्वाइट जोन = जहाँ पानी का स्तर ऊपर हो। रिमोट सेंसिंग = इसके

माध्यम से धरती के अन्दर का चित्र लिया जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

रिपोर्टाज से

1. सूखी धरती में पानी लौटने के साथ और क्या-क्या परिवर्तन हुए?
2. दो दशक पहले अलवर जिले में जो नदियाँ सूख गयीं थीं, उनके नाम क्या थे ?
3. अक्टूबर सन् 1985 ई0 में राजेन्द्र सिंह राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में किस उद्देश्य से गये थे?
4. किशोरी और गोपालपुरा गाँव के लोगों ने राजेन्द्र सिंह को जल-प्रबन्धन की कौन-सी पुरानी विधियाँ बतायीं?
5. राजेन्द्र सिंह को मैग्सेसे सम्मान क्यों दिया गया?
6. रिमोट सेंसिंग तकनीक क्या है, इससे किस क्षेत्र में मदद मिलती है?

विचार और कल्पना

पाठ के अन्त में एक वाक्य है, “कुदरत की अनमोल देन जल को बचाने, बढ़ाने के लिए हर एक को जागरूक होकर अपने स्तर पर कुछ न कुछ करना होगा।” अपने आस-पास के क्षेत्र में जल को बचाने, बढ़ाने के लिए आप अपने स्तर से क्या-क्या कर सकते हैं, लिखिए।

कुछ करने को

1.अपने जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए-जिसमें अपने क्षेत्र में स्थित एकमात्र तालाब, जो कभी पर्यटन-स्थल था, किन्तु अब उसमें जलकुम्भी तथा गन्दगी भरी है, उसकी सफाई हेतु निवेदन किया गया हो।

पत्र लेखन में निम्नांकित प्रारूप की मदद ले सकते हैं।

सेवा में,

जिलाधिकारी

जिलाधिकारी कार्यालय

जनपद

विषय -

महोदय/महोदया,

.....
.....

दिनांक.....

प्रार्थी

2.जल-संरक्षण के सम्बन्ध में दूसरों को जागरूक बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?

3. आपने अनुभव किया होगा कि हमें जितनी आवश्यकता होती है, उससे कहीं ज्यादा पानी हम व्यर्थ ही बहा देते हैं। अपने द्वारा एक दिन में खर्च किए गये जल की मात्रा को नीचे दिये गये तालिका में भरें। यह भी लिखें कि आपने इन कार्यों में कितना अधिक पानी खर्च किया है-

कार्य खर्च किया गया जल कितने पानी में काम चल

(अनुमानित) सकता है (अनुमानित)

4. यह पाठ हिन्दी गद्य की 'रिपोर्ताज' विधा के अन्तर्गत "हिन्दुस्तान" समाचार पत्र से लिया गया है। आपके विद्यालय अथवा घर में या पास-पड़ोस से आपको कोई अखबार या पत्रिका जरूर मिल जायेगी, जिसमें इसी प्रकार के कुछ लेख होंगे। उनमें अपने गाँव/ब्लाक अथवा तहसील से सम्बन्धित रिपोर्ट छाँटकर उनका संकलन कीजिए।

भाषा की बात

1. सूखी धरती, सुखद उम्मीद, नंगे पहाड़ में क्रमशः सूखी, सुखद, नंगे शब्द 'विशेषण' हैं। जबकि धरती, उम्मीद और पहाड़ 'विशेष्य' हैं। इस प्रकार के पाँच अन्य विशेषण-विशेष्य को इस पाठ से छाँटकर लिखिए।

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए-

पानी लौट आया, चपेट में आना, तस्वीर बदलना, नजरें टिकाना, किला टूटना, दिन फिरना।

3. स्थान शब्द में 'ईय' प्रत्यय लगा कर 'स्थानीय' शब्द बनता है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में ईय प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाइए-

राष्ट्र, जल, आकाश, संसद।

4. 'प्रबन्धन' में 'प्र' उपसर्ग है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द
अलग-अलग कीजिए-

प्रवर, प्रशिक्षण, प्रशासन।



महापंडित राहुल सांकृत्यायन



(प्रस्तुत पाठ लेखिका की पुस्तक ‘महापंडित राहुल सांकृत्यायन’ से लिया गया है, इसमें राहुल जी के जीवन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन है।)

महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अपनी विद्वत्तापूर्ण लेखनी द्वारा उन्होंने हिन्दी जगत को अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रदान किये हैं। उनकी कृतियों को पढ़कर बहुधा लोग समझते रहे कि महापंडित जी नीरस प्रकृति के थे, उनको पढ़ने-लिखने के अलावा अन्य किसी काम से मोह नहीं था।

वस्तुतः वे सरस प्रकृति के व्यक्ति थे और उनका व्यक्तित्व विविध गुणों से परिपूर्ण था। यद्यपि उनके स्वभाव को परखने के लिए एक उच्च दृष्टिकोण तथा लम्बे समय की आवश्यकता थी, जो मुझे न मिल सका, तो भी उनके साथ लगातार चौदह वर्ष तक रहने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ था।

महापंडित जी अत्यन्त सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। उनमें छोटे बच्चे का-सा भोलापन था। इसी कारण वे लोगों को परखने में धोखा खा जाते थे। वे सबको अपनी ही दृष्टि से देखते और अपने जैसा ही भोला समझते थे मनुष्य को। मानव-स्वभाव को परखने की उनमें पैनी दृष्टि नहीं थी। उन्हें मानव-स्वभाव का एक ही पक्ष स्वीकार था, वह था मानवीय गुण, किन्तु सभी मनुष्यों में गुण-ही-गुण नहीं रहता, उनमें दोष भी अधिक मात्रा में पाया जाता है। किसी भी व्यक्ति पर झट से विश्वास कर लेना पंडितजी की आदत-सी बन गयी थी और विश्वासपात्र के लिए सब कुछ करने के लिए कटिबद्ध भी रहते थे।

यद्यपि महापंडित जी का साहित्यिक जीवन सन् 1922 ई० से आरम्भ हुआ था, तो भी उनके जीवन के अन्तिम पन्द्रह वर्ष अतिव्यस्त रहे। इन्हीं वर्षों में उन्होंने साठ से भी अधिक महत्त्वपूर्ण एवं विविध विधाओं के वृहत् ग्रन्थ लिखे थे। ये सभी ग्रन्थ उन्होंने अत्यधिक परिश्रम से लिखे थे। अपने लेखनकार्य के प्रति उनकी असीम निष्ठा थी। उनकी कार्य-

प्रणाली भी निराली थी। वे प्रतिदिन निश्चय कर लेते थे कि आज इतना कार्य करना है और वे इस निश्चय को अवश्य पूरा करते थे। कैसा ही वातावरण हो या अशान्ति की मनोदशा हो, वे अपने मन को एकाग्र कर लेते और जब काम में लग जाते तो उनकी एकाग्रता न टूटती, भूख-प्यास एवं निद्रा का भी उन्हें होश न रहता। उनका वश चलता तो वे चौबीस घंटे काम करने के लिए प्रस्तुत रहते। अपने कार्य के प्रति इतनी निष्ठा रखनेवाले व्यक्ति विरले ही होंगे। वृद्धावस्था में अनेक रोगों से ग्रस्त होने पर भी नित्य सत्रह-अठारह घंटे काम करना उनके लिए साधारण बात थी। वे हिन्दी के पाठकों के लिए अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे, इसीलिए तो उनकी पैनी लेखनी से अक्षय ज्ञान का भंडार पाठकों को उपलब्ध हो सका। ‘काम और काम’ या ‘आराम हराम है’ यही उनका जीवन-मन्त्र रहा। काम के प्रति आलस्य करते हुए वे मुझे दिखाई नहीं पड़े।

इसी कारण हम उनके समक्ष आलसी बनने से घबराते थे। बहुधा मैंने उनको एक साथ पाँच-पाँच पुस्तकों को लिखने में हाथ लगाते भी देखा था। जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने अपने काम की गति और भी बढ़ा दी। मेरे मना करने पर और उनके अस्वस्थ शरीर की याद दिलाने पर वे कहा करते- ‘मुझे पुनर्जन्म में विश्वास नहीं है, जो कुछ मैं करना चाहता हूँ इसी जीवन में पूरा करना चाहता हूँ। कोई कार्य अधूरा न रहे इसीलिए इतना परिश्रम कर रहा हूँ।’ अपनी इसी गतिशीलता के कारण उन्होंने अपने जीवन-काल में कोई भी लेखन-कार्य अधूरा नहीं छोड़ा।

मैंने अक्सर ही देखा कि वे झोंक में लिखते थे। जब उनका मूड बना तब लिखने बैठने वाले लेखकों की तरह हमारे पंडित जी नहीं थे। किसी ग्रन्थ को लिखने के लिए वे पहले से ही योजनाएँ नहीं बनाते थे। मन में जो विचार आये उन्हीं को तुरन्त लेखनीबद्ध करना शुरू कर देते थे। मुझे एक दिन अपने पुस्तकालय में प्राचीन ताड़पत्र के कुछ पन्ने मिले। मैंने वे पन्ने पंडित जी को दिखलाये तो यह मालूम हुआ कि ये आठवीं सदी के सिद्धकवि सरहपाद के दोहे के पृष्ठ हैं, जिन्हें पंडित जी तिब्बत से लाकर भूल चुके थे। यह सन् 1954-55 ई० की बात है। अब वे इस दोहाकोश के सम्पादन में जो व्यस्त हुए तो तीन महीने के कठिन परिश्रम से ‘दोहाकोश’ नामक विशाल ग्रन्थ तैयार करने के बाद ही आराम किया।

काम करने को पंडित जी सदैव तत्पर रहते थे। नयी बातें सुनने-सीखने का भी उन्हें चाव था। उनकी यह इच्छा रहती थी कि हिन्दी जगत को ऐसी चीजें उपलब्ध करायें जो अपूर्व हों, जिनसे हिन्दी पाठक लाभान्वित हों। इसीलिए वे मिशनरी स्पिरिट से कार्य करते थे। जब वे अपने मन में ठान लेते कि यह काम करना है तो उसके पीछे हाथ धोकर पड़ जाते।

वे समाज के बारे में ही सोचते और समाज के लिए ही लिखते थे। साथ ही वे भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक भी थे।

मैंने बहुत बार देखा है और व्यक्तिगत अनुभव भी है कि प्रतिष्ठित व विद्वान लोग साधारण लोगों से खुलकर मिलना पसन्द नहीं करते, न ही उन्हें समय देने में उदारता दिखलाते हैं, समय निश्चित किये जाने पर भी लोगों को प्रतीक्षा में बैठे रहना पड़ता है किन्तु महापंडित राहुल जी का सभी लोगों के प्रति व्यवहार सर्वथा भिन्न रहा। यद्यपि उनके लिए समय बहुत मूल्यवान था, वह एक मिनट को भी व्यर्थ खर्च न करते थे, जब भी फिर कोई उनसे मिलने के लिए आये, तो वे उदारतापूर्वक भेंट करने आये व्यक्ति को समय देते थे, प्रश्नकर्ताओं की जिज्ञासा की पूर्ति भी भलीभाँति कर देते थे। पंडित जी के विचारों से मतभेद रखने वाले व्यक्ति भी हमारे घर में आया करते थे, और पंडित जी के सामने बैठकर उन्हीं की आलोचना करते, किन्तु महापंडित ने किसी की प्रत्यालोचना नहीं की। ऐसे आगन्तुकों के बीच वे श्रोता ही बने रहते। यदि किसी आगन्तुक को बहुत बोलने की आदत हो तो पंडित जी उनको पूरा-पूरा अवसर देते थे।

महापंडित का व्यवहार सभी मनुष्यों के प्रति एक समान रहा। उनके हृदय में अमीर -गरीब, छोटे-बड़े तथा शिक्षित-अशिक्षित का भेद नहीं था। मैंने तो देखा कि गरीबों तथा अशिक्षित किन्तु शिष्ट स्वभाव वाले लोगों के प्रति उनकी सहानुभूति रहती थी। इन लोगों के साथ वे सौहार्दपूर्ण व्यवहार करते। मजदूरों एवं साधारण वर्ग के लोगों में तो वे अत्यन्त लोकप्रिय हो गये थे, इसीलिए तो मसूरी के गढ़वाली समाज के सामान्य लोग आज भी श्रद्धापूर्वक पंडित को याद करते हैं।

महापंडित का हृदय विशाल एवं उदार था। लोभ उनको छू भी नहीं गया था। आमतौर से देखा जाता है कि लेखकों-साहित्यकारों में बहुत कम ही आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं। जिसने जीवन-भर कलम-घिसाई की, उसको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी सीमित आय से ही करनी पड़ती है। पंडित जी की उदारता तथा सरलता की आड़ में व्यावसायिक लोगों ने उन्हें बहुत ठगा। उनकी इस सरलता से लोगों ने बहुत लाभ उठाया। पंडितजी में यह उदारता पराकाष्ठा तक थी, तभी तो कतिपय प्रकाशकों को मौलिक रूप से अनुबन्ध कर अपनी पुस्तकें छपने के लिए दे देते थे और जब कभी उन्हें धन की आवश्यकता पड़ी और माँगने गये तो उन प्रकाशकों ने उन्हें अँगूठा दिखा दिया था। मित्रों को रुपया उधार देकर भी प्रायः वे भूल जाया करते थे और ऐसे मित्र उधार चुकाना भूल जाते। महापंडित जी अपने जीवन में कभी भी धन के पीछे नहीं दौड़े, न ही उन्होंने अपने जीवनकाल में धन संचय करना पसन्द किया। औघड़दानी तो वे थे ही, इसलिए भी धन के

प्रति उनकी आसक्ति नहीं थी। मनुष्य को अपने जीवन निर्वाह के लिए धन की भी आवश्यकता पड़ती है, इस सत्यता का बोध महापंडित जी को अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में ही हुआ।

मैंने उनको समय का बड़ा पाबन्द भी पाया। हर काम को ठीक समय पर करना उनका नियम था और इस नियम का उन्होंने अन्त तक पालन किया। स्वयं का ऐसा स्वभाव था इसलिए वे दूसरे से भी यही आशा रखते थे कि वे भी समय का मूल्य पहचानें। यदि परिवार में किसी को व्यर्थ समय गँवाते देखते तो उनको बड़ी झुँझलाहट होती थी।

महापंडित जी जितने गम्भीर थे उतने ही विनोदी भी थे। उनकी विनोदप्रियता के सम्बन्ध में बहुत ही कम लोगों को पता था। डरपोक, धर्मभीरु आदमी को तो वे इतना बनाते, इतना चिढ़ाते कि उसकी यह कमजोरी ही भाग जाती थी। वैसे उनके इस विनोदी स्वभाव का शिकार प्रायः मैं ही होती थी। परिहास करते समय वे भी उन्मुक्त हँसी हँस दिया करते थे। वैसे भी वे प्रसन्नचित्त एवं हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे।

विनोदी प्रकृति थी, इसलिए पंडित जी को क्रोध भी नहीं आता था, और साल-छह महीने में जब कभी उन्हें क्रोध आता भी तो केवल क्षणभर के लिए ही। किन्तु उनका यह क्षणिक क्रोध बहुत प्रभावकारक होता था। उस समय उनका चेहरा तमतमा जाता और बड़ी डपट के साथ बोलते थे। फिर क्षणभर में ही मधुर हो जाते, जैसे अभी-अभी कुछ हुआ ही न हो। उनमें क्षमाशीलता भी कूट-कूट कर भरी थी। वस्तुतः इसी गुण के कारण उनके विरोधी भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। कितने ही लोगों ने पत्रों में उनकी कटु आलोचना की, किन्तु पंडित जी कभी इससे उत्तेजित नहीं हुए और न ही किसी को आवेश में आकर उत्तर दिया। सबके साथ अन्त तक उन्होंने मधुरता का ही सम्बन्ध निभाया।

पूरा छह फुट लम्बा कद, गौरवर्ण और हँसमुख व्यक्तित्व वाले महापंडित जी जितने ही सुन्दर थे उतना ही सुन्दर उनका स्वभाव था। उनमें एक ऐसी शक्ति थी जो लोगों के मन को अनायास उनकी ओर आकृष्ट कर देती थी। उनसे एक बार मिलने और वार्तालाप करने के बाद उनसे आसक्ति ही होती थी विरक्ति नहीं। उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक था कि उनसे दूर होने की इच्छा न होती थी।

महापंडित जी दूसरों को विद्यादान के लिए भी सदैव प्रस्तुत रहते थे। जिज्ञासुओं की जिज्ञासापूर्ति में उनको सदा सुख मिलता था। वे स्नेही पति, वात्सल्यमय पिता तथा कड़े विद्यागुरु भी थे। मैंने तो उनको वृद्धावस्था में देखा किन्तु उस समय भी वे चिर युवा लगते थे और उनमें युवकों जैसा उत्साह और स्फूर्ति थी। इतने कर्मठ और आकर्षक व्यक्तित्व

वाले व्यक्ति दूसरे शायद ही हों और यदि हों तो वे हमारे प्रिय महापंडित जी से बढ़कर नहीं होंगे।

- श्रीमती कमला सांकृत्यायन

श्रीमती कमला सांकृत्यायन महापंडित राहुल सांकृत्यायन की पत्नी हैं। इन्होंने राहुल जी के साथ लगभग चौदह वर्षों तक रहकर उनके गुणों को देखा और अनुभव किया था। राहुल जी के लेखन-कार्य को व्यवस्थित करके प्रकाशित करने का इन्होंने सराहनीय प्रयास किया है।

प्रतिभा = बुद्धि, समझ। कृतियाँ = रचनाएँ। परिपूर्ण = भरा हुआ। पैनी दृष्टि = तेज निगाह। निष्ठा = श्रद्धा, विश्वास। एकाग्र = जिसका ध्यान एक ही ओर हो। चाव = इच्छा। मिशनरी स्पिरिट = मिशन चलाने वाले जिस भाव से काम करते हैं। अनन्य = जिसके समान दूसरा न हो। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। प्रत्यालोचना = आलोचना की आलोचना। आगन्तुक = आने वाला। शिष्ट = सभ्य। पराकाष्ठा = अन्तिम सीमा तक। कतिपय = कुछ। अनुबन्ध = आपस में किया गया समझौता, बन्धन। उन्मुक्त = खुलकर। आसक्ति = लगाव।

प्रश्न-अभ्यास

जीवनी से

1. महापंडित राहुल सांकृत्यायन को बहुधा नीरस प्रकृति का व्यक्ति क्यों कहा जाता था?
2. उनके जीवन के अन्तिम पन्द्रह वर्ष को महत्त्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
3. वे अपने जीवन-काल में कोई भी लेखन-कार्य अधूरा क्यों नहीं छोड़ना चाहते थे?
4. मिलने वालों के प्रति राहुल जी का व्यवहार कैसा होता था और उन्हें “औघड़ दानी” क्यों कहा गया है?
5. महापंडित को विनोदी स्वभाव तथा आकर्षक व्यक्तित्व का व्यक्ति क्यों माना जाता है? उदाहरण देकर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

विचार और कल्पना

1. महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जीवन से जो शिक्षा मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

2. इस पाठ में राहुल सांकृत्यायन जी के व्यक्तित्व की बहुत सी विशेषताओं का उल्लेख है, जैसे- सरल प्रकृति, बहुमुखी प्रतिभा आदि।

आपके अन्दर भी इस प्रकार की तमाम खूबियाँ हैं। क्या इनके बारे में आपको पता है? यदि हाँ तो लिखिए- वे खूबियाँ कौन-कौन सी हैं? यह भी लिखिए कि इनके अलावा आप राहुल सांकृत्यायन जी के व्यक्तित्व के किन-किन खूबियों को अपनायेंगे?

कुछ करने को

किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में 15 पंक्तियाँ लिखिए, जो आपको प्रिय हो।

भाषा की बात

1. 'पंडित' शब्द के पूर्व 'महा' विशेषण लगाकर 'महापंडित' शब्द बना है। इसी प्रकार 'महा' विशेषण लगाकर पाँच अन्य शब्दों को लिखिए।

2. नीचे बायीं ओर कुछ वाक्य लिखे गये हैं, जो अधूरे हैं, उन वाक्यों को दाहिनी ओर लिखे वाक्यों से पूरा करके लिखिए-

(क) मैंने अक्सर ही देखा कि - इसीलिए इतना परिश्रम कर रहा हूँ।

(ख) कोई भी कार्य अधूरा न रहे - किन्तु उस समय भी वे चिरयुवा लगते थे।

(ग) महापंडित जी जितने गम्भीर थे - वे झोंक में लिखते थे।

(घ) मैंने तो उनको वृद्धावस्था में देखा - उतने ही विनोदी भी थे।

3. 'वृद्धावस्था' शब्द वृद्ध + अवस्था से बना है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में 'अवस्था' शब्द जोड़कर नये शब्द बनाइए-

युवा, किशोर, रुग्ण, निद्रा।

4. 'प्रश्न न तो कठिन थे और न ही सरल' ऐसे ही विपरीतार्थक शब्द युक्त तीन वाक्यों की रचना कीजिए।

इसे भी जानें

ग्रियर्सन पुरस्कार- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अहिन्दी भाषी को दिया जाता है।



Table of Contents

[Table of Contents](#)

[मंजरी कक्षा ७](#)